सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 03, अंक 148, नई दिल्ली, गुरुवार 31 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर मेहनत को आदत बना लिया जाए तो कामयाबी मुकद्दर बन जाती है।

03 2024 में जलभराव में डूबने से मरे 40 लोगों के दोषी नेताओं एवं ....
06 ऋतुचक्र में गड़बड़ी, संकट का संकेत
08 बाइआ जेना आपका दामाद है : महिला कोंग्रेस

भूल सुधार

कल दिनांक 30 मई के प्रथम पृष्ठ की मुख्य खबर में कल के अखबार में शीर्षक "**क्या भारत देश में परिवहन क्षेत्र मे उपलब्ध विशेषज्ञ यह बता सकते हैं की दिल्ली की सड़को पर इतने जाम का कारण क्या है और कौन है इसका मुख्य रूप से जिम्मेदार ?**" में गलती से भारत देश की जगह भारत शहर प्रकाशित हो गया था, जिसके लिए हम खेद व्यक्त करते हैं। आज संशोधन के साथ पुनः प्रकाशित की गई हैं।

क्या भारत देश में परिवहन क्षेत्र मे उपलब्ध विशेषज्ञ यह बता सकते हैं की दिल्ली की सड़को पर इतने जाम का कारण क्या है और कौन है इसका मुख्य रूप से जिम्मेदार ?

पिंकी कुंडू सह संपादक परिवहन विशेष

नई दिल्ली। दिल्ली में रहने वाले सभी सड़को पर अधिकतर जाम से जूझते हुए अपने कार्य स्थल और घरों में पहुंचते हैं यह सारी दुनिया जानती हैं। माननीय सुप्रीम कोर्ट, उच्च न्यायालय, परिवहन विभाग, यातायात पुलिस भी लगातार नए नए नियमों को बनाती नजर आती हैं पर जाम के निवारण की जगह जाम बढ़ता ही जा रहा है, आख़िर कहीं ना कही कुछ तो त्रुटि है जिस कारण से इसका हल नहीं निकल रहा।

देश में परिवहन जगत के अनगिनत विशेषज्ञ भी अपने तजुर्बों के आधार पर नित नए नए लेख और वकतव्य प्रस्तुति करते नजर आते हैं पर जाम की समस्या टस से मस नहीं हो रही।

आपको इतना भी अंदाजा अवश्य होगा की दिल्ली वासी जान के कारण अपना कीमती समय तो खो ही रहे हैं और साथ में उनके खून पसीने से कमाया हुआ धन भी इसके कारण बर्बाद हो रहा हैं। दिल्ली के वाहनो में सफर में उतना पैट्रोल, डीजल, गैस खर्च नही होता जितना जाम में होता हैं यानी समय और धन दोनों की बर्बादी।

इतना सब होते, देखते और जानते हुए भी इसका कोई स्थाई हल क्यों नहीं क्या परिवहन जगत के विशेषज्ञ, सड़क परिवहन एवम्राजमार्ग मंत्रालय, दिल्ली के उपराज्यपाल, दिल्ली के मुख्य सचिव, दिल्ली सरकार, दिल्ली परिवहन विभाग और दिल्ली यातायात पुलिस के आला अधिकारी जनता को बता सकते हैं ?

क्या बता सकते हैं दिल्ली में ऐसी कौन सी वाहनों की श्रेणियां हैं जो जाम को लगवाने में सबसे ज्यादा रोल निभा रही हैं ?

आपकी जानकारी हेतु बता दे दिल्ली पुलिस में ज्वाइंट कमिश्नर पद पर कार्यरत अधिकारी रजनीश गुप्ता जब एसीपी यातायात थे उस समय में आजाद मार्केट चौक का जाम विश्व विख्यात था और उसका निवारण नहीं हो पा रहा था तब इन्हीं अधिकारी की सूझ बूझ और सही दिशा में किए गए कार्य ने उस चौक को जाम मुक्त कर दिखाया था। अब सवाल यह उठता हैं की क्या अन्य अधिकारी अपनी सूझ बूझ और सही दिशा में कार्य कर अपने क्षेत्र में लगने वाले जाम को दूर नही करवा सकते ?

हम दावे से बोल सकते हैं को दिल्ली की सड़को पर लगने वाले जाम के कुछ ही मुख्य कारण हैं पर उनका निवारण करवाने वाले निवारण करना ही नहीं चाहते, आखिर क्यों, यह एक बहुत सोचनीय मुद्दा है।

परिवहन उद्योग और ड्राइवरों की चुनौतियाँ: एक सम्पादकीय

परिवहन उद्योग किसी भी देश की अर्थव्यवस्था की रीढ़ होता है।

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में, यह उद्योग न केवल माल और लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाता है, बल्कि लाखों लोगों को रोज़गार भी प्रदान करता है। विशेष रूप से, ट्रक ड्राइवर, टैक्सी चालक और अन्य परिवहन कर्मचारी इस उद्योग का आधार हैं, जिनके बिना यह क्षेत्र स्वतः ठप हो सकता है। फिर भी, इस उद्योग और इसके ड्राइवरों के सामने कई चुनौतियाँ हैं, जिन पर ध्यान देना आवश्यक है।

परिवहन उद्योग की स्थिति भारत का परिवहन उद्योग तेज़ी से विकसित हो रहा है। सड़क, रेल, जल और वायु परिवहन के संयोजन ने देश को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है। सड़क परिवहन, विशेष रूप से, माल ढुलाई का लगभग 70% हिस्सा संभालता है। ई-कॉमर्स के बढ़ते चलन और बुनियादी ढांचे के विकास, जैसे कि राष्ट्रीय राजमार्गों का विस्तार, ने इस उद्योग को और गति दी है। हालांकि, तकनीकी प्रगति और नीतिगत सुधारों के बावजूद, कई समस्याएँ बरकरार हैं।

ड्राइवरों की चुनौतियाँ - परिवहन उद्योग का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा इसके ड्राइवर हैं, जो लंबे समय तक कठिन परिस्थितियों में काम करते हैं। उनकी प्रमुख समस्याओं में शामिल हैं:

कम मज़दूरी और अनिश्चितता: अधिकांश ड्राइवरों को उनकी मेहनत के अनुपात में उचित मज़दूरी नहीं मिलती। अनियमित कार्य घंटे और अनिश्चित आय उनके परिवारों के लिए आर्थिक तनाव का कारण बनते हैं।

स्वास्थ्य समस्याएँ: लंबे समय तक ड्राइविंग करने से ड्राइवरों को पीठ दर्द, तनाव, थकान, आँखों की समस्या और अन्य स्वास्थ्य समस्याएँ होती हैं। सड़क किनारे खानपान की खराब गुणवत्ता और नींद की कमी उनके स्वास्थ्य को और प्रभावित करती है।

सुरक्षा और कार्यस्थल की स्थिति: सड़क दुर्घटनाएँ, खराब सड़कें और अपर्याप्त विश्राम स्थल ड्राइवरों के लिए जोखिम बढ़ाते हैं। इसके अलावा, चोरी, लूटपाट और पुलिस उत्पीड़न की घटनाएँ भी उनकी सुरक्षा को खतरे में डालती हैं।

सामाजिक सम्मान की कमी: ड्राइवरों को अक्सर समाज में वह सम्मान नहीं मिलता, जिसके वे हकदार हैं। उनकी मेहनत को कम आँका जाता है, और उन्हें ₹अकुशलश्र व असंगठित माना जाता है, जबकि उनका काम अत्यंत कौशल और धैर्य की माँग करता है।

नीतिगत और सामाजिक उपाय इन समस्याओं के समाधान के लिए सरकार, उद्योग और समाज को मिलकर काम करना होगा। कुछ सुझाव इस प्रकार हैं:

न्यूनतम मज़दूरी और सामाजिक सुरक्षा: ड्राइवरों के लिए न्यूनतम मज़दूरी निर्धारित की जानी चाहिए, साथ ही सरकारी मुफ्त स्वास्थ्य बीमा, पेंशन 25000,आवासीय प्लाट और अन्य सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ दिया जाना चाहिए।

बुनियादी ढांचे का विकास: सड़कों की गुणवत्ता में सुधार, विश्राम स्थलों की पर्याप्त स्थापना और सड़क सुरक्षा उपायों को बढ़ावा देना आवश्यक है।

प्रशिक्षण और तकनीकी सहायता: ड्राइवरों को आधुनिक तकनीकों, जैसे जीपीएस और डिजिटल लॉजिस्टिक्स व सोशियल अवार्नेस का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ताकि उनकी कार्यक्षमता बढ़े।

सामाजिक जागरूकता: ड्राइवरों के योगदान को मान्यता देने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाने चाहिए। उन्हें सम्मान और उचित व्यवहार का हकदार माना जाना चाहिए।

निष्कर्ष - परिवहन उद्योग और इसके सारथी (चालक) देश की प्रगति के आधार हैं। उनकी मेहनत और समर्पण के बिना अर्थव्यवस्था की गति रुक सकती है। इसलिए, यह हमारा सामूहिक दायित्व है कि हम उनकी चुनौतियों को समझें और उनके कल्याण के लिए ठोस कदम उठाएँ। एक मजबूत और समावेशी परिवहन उद्योग न केवल ड्राइवरों के जीवन को बेहतर बनाएगा, बल्कि देश की आर्थिक और सामाजिक प्रगति को भी गति देगा।

टेंपल्स ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत)
TOLWA
website : www.tolwa.in
Email : tolwadelhi@gmail.com
bathlasanjaybathla@gmail.com
रजिस्टर्ड अंडर सैक्शन 60 विद रजिस्ट्रेशन नंबर (152/02-03-2020), एमएसएमई रजिस्ट्रेशन नंबर उद्यम -डीएल -0026470, नीति आयोग रजिस्ट्रेशन नंबर वीओ/एनजीओ/0303274/25-01-2022 दर्पण
रजिस्टर्ड कार्यालय :- 3, प्रियदर्शिनी अपार्टमेंट, ए -4 पश्चिम विहार, न्यू दिल्ली 110063
कॉरपोरेट कार्यालय :- 529, समयपुर, मैन बवाना रोड, नियर बैंक ऑफ़ बड़ौदा दिल्ली 110042

एक व्यवस्था में दो नीतियां कतई बर्दाश्त नहीं : छोटा गाड़ी मालिकों पर लाखों का जुर्माना और बड़े एवं लिमिटेड गाड़ियों को रोकने की औकात नहीं

परिवहन विशेष न्यूज

कैथल - हरियाणा। कैथल ट्रक आपरेटर यूनियन परिसर में राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ₹ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी₹ उफ्तत्सा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव ने विभिन्न विषयों पर बातचीत के पश्चात ट्रैक्टर ट्रॉली से व्यावसायिक माल परिवहन को तत्काल प्रभाव से बंद करने की बात की, लेन चालान, ओवर हाइट की बेवजह पेनल्टी, लोकेशन बंद करने की बात की व मुख्यमंत्री से इन सभी तथ्यों पर ध्यान देने की अपील की वह प्रदेश में आरटीओ व पुलिस विभाग की मनमानी बंद नहीं करने पर राज्यव्यापी आंदोलन की बात की। किसी भी तरह की अनियमित पाए जाने पर निजी पार्किंग में गाड़ी खड़ी कर 1200 से 1600 व 2000 तक प्रतिदिन की वसूली की जाती है जिसका राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी ₹उफ्तत्सा₹ पुरजोर विरोध करता है। बाहर राज्यों से आने वाली गाड़ियों से भी विभिन्न बहाने कर जबरन वसूली की जाती है बड़े मोटर मालिकों व लिमिटेड कंपनियों के कितने चालान काटे गए इसका विवरण सरकार प्रदान करें एक ही व्यवसाय में इस तरह की दोगली नीति कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। संपूर्ण राष्ट्र में परिवहन व्यवस्था के अन्तर्गत मोटर मालिक व चालक बंधुओं पर अत्याचार, जुल्म व जबरन उगाही के मामले में हरियाणा शीघ्र ही प्रथम पायदान में आने की आशंका जताई। शीघ्र ही महामहिम राज्यपाल महोदय व माननीय मुख्यमंत्री महोदय से मिलकर इस विषय में उन्हें जानकारी प्रदान करते हुए कड़ी कार्रवाई की मांग करेंगे। इस सभा में श्री रामफल जी, रविंद्र बधानी, कुलवंत सिंह, बलजिंदर सहारान, नरेश गोछी, सतीश धनकड़ व अन्य मौजूद थे।

मुंशी प्रेमचंद जयंती आज

मुंशी प्रेमचंद की साहित्यकार, कहानीकार और उपन्यासकार रूप में चर्चा अक्सर होती है। पर उनके पत्रकारीय योगदान को लगभग भूला ही दिया जाता है। जंगे-आजादी के दौर में उनकी पत्रकारिता ब्रिटीश हुकूमत के विरुद्ध ललकार की पत्रकारिता थी। इसकी बानगी प्रेमचंद द्वारा संपादित काशी से निकलने वाले दो पत्रों 'जागरण' और 'हंस' की टिप्पणीयों-लेखों और संपादकीय में देखा जा सकता है। वैसे तो पत्रकारिता को दैनिक इतिहास का दर्जा प्राप्त है। पर मुंशी प्रेमचंद आर्थिक तंगहाली के वक्त भी अपने लेखन के जरिये जुर्माने का जोखिम उठाकर भी इतिहास की धारा को नया मोड़ देने की दिशा में संलग्न दिखते है। इस भूमिका में भी प्रेमचंद पत्रकारिता को नये तेवर-कलेवर के साथ समाज के आगे चलने वाली मशाल बनाना चाहते है।

बात उस दौर की

====================

यह वह दौर था, जब राष्ट्रीय राजनीतिक क्षितिज पर महात्मा गांधी भारतीय स्वाधीनता आंदोलन को सविनय अवज्ञा, भूख हड़ताल और असहयोग जैसे सर्वथा नये औजारों से लैश कर रहे थे। काशी में भी प्रेमचंद-जयशंकर प्रसाद और आचार्य रामचंद्र शुक्ल की त्रयी पुराने जीर्ण शीर्ण मूल्यों की जगह नये मूल्यों-संस्कारों से साहित्य के आंगन को सजा-संवार रहे थे।

मैं धनी नहीं मजदूर आदमी हूं'

========================

"हंस" पत्रिका निकालने के पूर्व जयशंकर प्रसाद को लिखे एक पत्र में प्रेमचंद जी लिखते हैं कि- काशी से कोई साहित्यिक पत्रिका न निकलती थी। मैं धनी नहीं मजदूर आदमी हूं, मैंने 'हंस' निकालने का निश्चय कर लिया है। इस निश्चय के साथ मार्च 1930 में बसन्त पंचमी के दिन 'हंस' के प्रकाशन की शुरुआत हुई।

'हंस' नामकरण के बारे में कमल किशोर गोयनका कहते है कि-यह नाम उनके मित्र एवं प्रख्यात कवि जयशंकर प्रसाद ने छह माह पूर्व सुझाया था। इस पत्रिका का प्रकाशन भी उन्हीं के सरस्वती प्रेस से हुआ। 'हंस' के प्रथम अंक के संपादकीय लिखते हुए प्रेमचंद ने लिखा है- हंस भी अपनी नन्हीं चोंच में चुटकी भर मिट्टी लिये हुए समुद्र पाटने, आजादी की जंग में योगदान देने चला है।... साहित्य और समाज में वह उन गुणों का परिचय करा ही देगा, जो परंपरा ने उसे प्रदान किया है।

एक युगद्रष्टा पत्रकार भी

===================

प्रेमचंद एक युगद्रष्टा साहित्यकार ही नहीं, एक युगद्रष्टा पत्रकार भी थे। अपने पत्रों लेखों और टिप्पणीयां वे मानो आज की सच्चाई बयां करते लगते है। सन्1905 में 'जमाना' में स्वदेशी चीजों का प्रचार कैसे बढ़ सकता है- विषय पर एक गंभीर टिप्पणी लिखते हुए मुंशी प्रेमचंद कहते है कि- स्वदेशी का अलख जगाने वाले और समाजवाद को ओढ़ने-बिछाने वाले बराबर दूरी पर खड़े हैं। इस लिए खुली अर्थव्यवस्था और विनिवेश का अश्वमेध जारी है। प्रेमचंद की पत्रकारिता इस अश्वमेध के खिलाफ ललकार है। उनकी संपादकीय तटस्थता को साहित्यकार जैनेंद्र कुमार 'ममताहीन स द् भाव' कहा है।

भारत के स्वाधीनता संग्राम में भले ही प्रेमचंद ने खुलेआम भाग न लिया हो। पर अपने उपन्यासों-कहानियों, पत्र पत्रिकाओं में लेखों के जरिये वे आजादी के सवाल को और उस बहाने आजादी के संघर्ष के लिए लड़ने वाले नायकों में विद्रोह की चेतना जगाने में कभी पीछे नहीं रहे। अपने इस दृष्टिकोण का इजहार 3जून 1932 को बनारसी दास चतुर्वेदी को लिखे एक पत्र में भी किया है- मेरी आकांक्षा बहुत ज्यादा नहीं है।

खाने भर का मिल जाता है। मुझे दौलत-शोहरत नहीं चाहिए। पर मेरे भीतर 'मोटर बम' है। मैं तीन-चार अच्छी पुस्तकें लिख सकूं जो आजादी के काम आ सके। मेरे मानस का हंस अपनी चोंच में आजादी की मिट्टी लेकर अपना योगदान कर रहा है।

मुख्य पृष्ठ पर कन्हैयालाल मुंशी का नाम

=========================

सन्1935 में 'हंस' को भारतीय साहित्य का मुख्य पत्र बना दिया गया। इसके मुख्य पृष्ठ पर कन्हैयालाल मुंशी का नाम भी जाने लगा। इस पत्रिका के सलाहकार मंडल में हिंदी, उर्दू, आसामी, उड़िया, गुजराती, मराठी, कन्नड़, तमिल, तेलगू और मलयालम के प्रतिष्ठित विद्वानों को शामिल किया गया। हिंदी में महात्मा गांधी, पुरुषोत्तम दास टंडन, रामनरेश त्रिपाठी काका साहेब कालेलकर सरदार नर्मदा प्रसाद सिंह जैसे नामचीन हस्तियां शामिल थी। अप्रैल सन्1932 के अंक में संपादकीय टिप्पणी दमन की सीमा प्रकाशित हुई।

इस टिप्पणी के छपने के बाद हर्जाने के रूप में एक हजार जमानत मांगी गयी। प्रेमचंद ने जमानत जमा नहीं किया और हंस पत्रिका बंद करने का निर्णय किया। हंस की हंसवाणी कालम में अपनी भाषा सम्बधी अवधारणा को स्पष्ट करते हुए मुंशी प्रेमचंद जी लिखते है कि- अंग्रेजी भाषा का जादू कब तक हमारे सिर रहेगा ? कब तक हम अंग्रेजों के गुलाम बने रहेंगे। इससे यहीं टपकता है कि हमारी राष्ट्रीयता अभी हृदय की गहराई तक नहीं पहुंची है।

हनुमान जी के कितने रूप हैं?

हनुमान जी के कुल 11 प्रमुख रूप (एकादश रूप) माने जाते हैं, जिन्हें ₹एकादश रुद्रावतार₹ भी कहा जाता है। ये सभी रूप अलग-अलग शक्तियों और उद्देश्यों को दर्शाते हैं। आइए एक-एक कर उनके नाम और भावार्थ जानते हैं:

हनुमान जी के 11 रूप (एकादश रूप)

1. हनुमान – मूल रूप, श्रीराम के परम भक्त और वीर योद्धा।
2. पंचमुखी हनुमान – पाँच मुखों वाले रूपः हनुमान (मुख्य) नरसिंह गरुड़ वराह हयग्रीव यह रूप विशेषतः अहिरावण वध के समय प्रकट हुआ था।
3. वीर हनुमान – युद्ध कौशल और साहस का प्रतीक।
4. बजरंग बली – वज्र के समान बलशाली रूप।
5. मारुतिनंदन – पवनदेव के पुत्र रूप में, अति वेग और शक्ति का स्रोत।
6. संजीवनी हनुमान – जब संजीवनी बूटी लेकर लक्ष्मण की रक्षा की।
7. रामदूत हनुमान – प्रभु श्रीराम का संदेश रावण के दरबार में ले जाने वाला।
8. एकदंत हनुमान – ज्ञान और बल का अद्भुत संगम।
9. दास्य रूप – पूर्णतः श्रीराम की सेवा में समर्पित भक्त रूप।
10. ज्ञान गुन सागर हनुमान – अपार ज्ञान, नीति और भक्ति से भरे रूप में।
11. रुद्रावतार हनुमान – भगवान शिव के रुद्र रूप से उत्पन्न, महापराक्रमी और संहारक रूप।

विशेषः

हनुमान जी को अष्ट सिद्धि और नव निधि के दाता भी कहा जाता है।

उनका पंचमुखी रूप तांत्रिक और रक्षा साधनाओं में बहुत शक्तिशाली माना जाता है।

प्रकृति का आत्म-अनुकूलन

जब ज़हर हमारे खेतों में घुल चुका हो, नदियाँ प्लास्टिक से दम तोड़ रही हों और हवा साँस लेने लायक न बचे — तब हम समाधान कहाँ ढूंढ़ते हैं? वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं में? सरकारी नीतियों में? आधुनिक तकनीकों में? मगर कई बार जवाब वहाँ से आता है जहाँ हम सबसे कम उम्मीद करते हैं — प्रकृति से खुद। हाल ही में भारत में दो ऐसे शोध सामने आए हैं जो इस बात की गवाही देते हैं कि प्रकृति न केवल ज़िंदा है बल्कि स्वयं को ठीक करने में भी सक्षम है।

भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण के वैज्ञानिकों ने पश्चिमी घाट की पहाड़ियों में एक दुर्लभ पौधे की खोज की है जिसे 'हाइपरअक्यूम्युलेटर' कहा जाता है। यह पौधा जहरीली मिट्टी में मौजूद भारी धातुओं — जैसे निकल, सीसा और कैडमियम — को सोख लेता है और खुद को कोई नुकसान नहीं होने देता। जहाँ अन्य पौधे मर जाते हैं, वहाँ यह पौधा पनपता है और ज़मीन को धीरे-धीरे साफ करने लगता है। इस श्रेणी में पहले से दुनिया में लगभग 700 पौधों की पहचान हो चुकी है जिनमें से अधिकांश फिलीपींस, चीन, क्यूबा और ग्रीस जैसे देशों में पाए जाते हैं लेकिन भारत में यह शोध नया है और इसका घरेलू कृषि एवं भूमि सुधार में बड़ा उपयोग हो सकता है। भारत के कई औद्योगिक क्षेत्र — जैसे झारखंड का जमशेदपुर, गुजरात का वलसाड, महाराष्ट्र का भोसरी क्षेत्र — भारी धातु प्रदूषण से जूझ रहे हैं। एक अनुमान के अनुसार भारत में 55% से अधिक भूभाग कहीं न कहीं भू-प्रदूषण से प्रभावित है, विशेषकर औद्योगिक और शहरी इलाकों में। पारंपरिक तरीकों से एक हेक्टेयर ज़मीन को शुद्ध करने में 15 से २5 लाख तक का खर्च आता है जबकि यह पौधों के ज़रिये 80% तक सस्ता और पर्यावरण-अनुकूल हो सकता है। इंडोनेशिया और मलेशिया जैसे देशों ने निकेल की खदानों की सफाई के लिए इन पौधों का व्यावसायिक उपयोग शुरू कर दिया है — भारत में भी ऐसी पहल समय की माँग है।

दूसरी तरफ, वैज्ञानिकों ने एक और चमत्कारी खोज की है — प्लास्टिक खाने वाला बैक्टीरिया। २016 में जापान के वैज्ञानिकों ने आईडीओनेला सकाईएनसिस नामक बैक्टीरिया की खोज की जो पॉलीइथिलीन टेरेफ्थेलेट (PET) प्लास्टिक — जैसे पानी की बोतलों में प्रयुक्त होता है — को कुछ ही हफ्तों में तोड़ सकता है। यह वही प्लास्टिक है जो सामान्य रूप से 400 से 500 वर्षों तक नष्ट नहीं होता। भारत में हर साल 3.5 मिलियन टन से अधिक प्लास्टिक कचरा उत्पन्न होता है और सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड की रिपोर्ट के अनुसार, इसका लगभग 70% अव्यवस्थित रूप से ठोस अपशिष्ट के रूप में जमा हो जाता है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली और पुणे की राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला जैसे संस्थान अब 'प्लास्टिक-डाइजेस्टिंग एंजाइम' विकसित करने की दिशा में काम कर रहे हैं।

गार्डियन की एक रिपोर्ट के अनुसार, २०२1 में एक फ्रांसीसी स्टार्टअप ने PET प्लास्टिक को सिर्फ़ 10 घंटे में तोड़ने वाला एंजाइम विकसित किया जिससे यह स्पष्ट होता है कि दुनिया इस दिशा में तेजी से बढ़ रही है। अगर प्लास्टिक खाने वाले बैक्टीरिया का व्यावसायिक और तकनीकी उपयोग संभव हो जाए तो यह वैज्ञानिक उपलब्धि के साथ-साथ विकास और पर्यावरण संरक्षण दोनों की जीत होगी। इन दोनों खोजों से एक सामान्य लेकिन गहरा संदेश मिलता है — प्रकृति खुद को ठीक करने की क्षमता रखती है। कभी पौधों के रूप में, कभी जीवाणुओं के रूप में, कभी बहती नदियों, तो कभी मिट्टी के कणों में — प्रकृति बार-बार संकेत देती है कि वह केवल सहन ही नहीं करती, सुधार भी करती है। 1986 में चेरनोबिल परमाणु दुर्घटना के बाद वैज्ञानिकों ने पाया कि विकिरण से प्रभावित जंगलों में फंगी की ऐसी प्रजातियाँ विकसित हुईं जो रेडियोएक्टिविटी को अवशोषित कर सकती हैं। यह उदाहरण बताता है कि प्रकृति सिर्फ़ प्रतिक्रिया नहीं देती — वह अनुकूलन करती है।

सरकार द्वारा भी ऐसे नवाचारों को समर्थन देने की ज़रूरत है। जैव-प्रौद्योगिकी विभाग (DBT) के राष्ट्रीय जैव-प्रौद्योगिकी मिशन, नमामि गंगे कार्यक्रम और ग्रीन इंडिया मिशन जैसे योजनाओं के तहत फाइटोरिमेडिएशन, बायो-फिल्टरेशन और जैविक अपशिष्ट प्रबंधन से जुड़े प्रयासों को शोध, परीक्षण और विस्तार के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जा सकती है। स्वच्छ भारत मिशन २.0 में भी जैविक प्लास्टिक रीसायक्लिंग तकनीकों को शहरी और ग्रामीण ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के मॉडल के रूप में अपनाया जा सकता है। इसके अलावा, निजी कंपनियाँ अपने कॉरपोरेट सोशल रिस्पॉन्सिबिलिटी (CSR) फंड के तहत पर्यावरणीय स्थायित्व और नवाचारों में निवेश कर सकती हैं, जो IITs, स्टार्टअप्स और सामाजिक संगठनों के बीच साझेदारी का आधार बन सकता है।

अब समय आ गया है कि हम प्रकृति को केवल 'संसाधन' के रूप में न देखकर एक 'सहयोगी' के रूप में स्वीकार करें। इसके लिए ज़रूरी है कि जैव उपचार को हमारी सरकारी योजनाओं — जैसे 'नमामि गंगे', स्मार्ट सिटी मिशन और अमृत योजना — में समाहित किया जाए। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान और वैज्ञानिक संस्थाओं को पर्याप्त फंडिंग और नीति समर्थन मिले। साथ ही, स्कूल और कॉलेज स्तर पर "प्रकृति-आधारित समाधान" को पाठ्यक्रम में शामिल किया जाए। इसके साथ ही गाँवों और शहरों में सामुदायिक प्लास्टिक रीसायक्लिंग के जैविक मॉडल को बढ़ावा दिया जाए। हाल ही में कर्नाटक के तुमकुर जिले में एक स्वयंसेवी संगठन ने गाँव स्तर पर बैक्टीरिया आधारित घरेलू प्लास्टिक अपघटन प्रयोग शुरू किया है, जो भविष्य की राह दिखाता है।

गजेंद्र सिंह

सड़क सुरक्षा से जुड़े कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विचार साझा किए गए

जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण सोनीपत के निर्देश अनुसार कानूनी सेवक संदीप बत्रा द्वारा ग्राम पंचायत पालड़ी कलां एवं खुर्द के ग्रामीणों एवं विद्यालय के स्टाफ सदस्यों एवं विद्यार्थियों को कानूनी जागरुकता शिविर के दौरान राष्ट्रीय स्तर पर टोल फ्री नंबर 15100 पर डायल कर कानूनी सहायता के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं इस अवसर पर जिला स्तर पर कार्यालय का नंबर एवं पत्ता भी शेयर किया गया और बच्चों की सुरक्षा स्वास्थ्य सेवा के बारे में जानकारी दी गई इस अवसर पर सड़क सुरक्षा से जुड़े कई महत्वपूर्ण बिंदुओं पर विचार साझा किए गए विशेष रूप से दो पहिया वाहन चालक हेलमेट का उपयोग सिर्फ़ चलान से बचने के लिए न समझें बल्कि दिमाग़ सिर आँखें नाक कान होंठ दांत इत्यादि को भी हेलमेट पहनने से सुरक्षा मिलती है विद्यार्थियों को कानूनी जागरुकता शिविर के दौरान विभिन्न विषयों पर दी गई जानकारी को सार्वजनिक रूप से शेयर करने बारे भी अपील की गई एक अच्छा नागरिक हमेशा अपने कर्तव्य को निभाने में सक्षम होना चाहिए इस अवसर पर पुनीता रेशमा सुखपाल चंद्रभान रविन्द्र महावीर नरेंद्र जसबीर कोमल इत्यादि के साथ हैड मास्टर मुकेश जी ने उपरोक्त स्टाफ सदस्यों सहित इस जागरुकता अभियान के लिए विद्यालय की तरफ से संदीप बत्रा एवं जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण सोनीपत का आभार प्रकट किया गया।

भोजन करते समय अक्सर हम सबने तेजपत्ते को थाली से बाहर कर दिया होगा पर जब आप इसके औषधीय मूल्य को जानेंगे तो इसको थाली से बाहर न करके बड़े चाव से इसका सेवन शुरू कर देंगे..!

तेजपत्ता को तेजपत्र, तेजपान, तमालका, तमालपत्र, तेजपात, इन्डियन केसिया आदि आदि नामों से जाना जाता है।

तेजपत्ता की खेती हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, जम्मू- कश्मीर, सिक्कम और अरुणाचल प्रदेश में की जाती है, ये हमेशा हरा रहने वाले तमाल वृक्ष के पत्ते हैं जो कई सालों तक लगातार उपज देता रहता है,इस पेड़ को यदि एक बार लगाया गया तो यह 50 से 100 सालों तक उपज देकर सेवा करता रहता है।

रोपण करने के 6 साल बाद जब इसका पेड़ पूरी तरह से विकसित हो जाता है तो इसकी पत्तियों को इक्कठा कर लिया जाता है,पत्तियों को इक्कठा करने के बाद इन्हें छाया में सुखाया जाता है,तब ये पत्तियां उपयोग करने के लिए तैयार हो जाती है। फसल की कटाई करने का बाद, इसकी पत्तियों को छाया में सुखाया जाता है।

तेज पत्ते का तेल भी निकाला जाता है इसके तेल निकालने के लिए आसवन यंत्र का प्रयोग किया जाता है,इसकी पत्तियों से हमे 0.6% खुशबूदार तेल की प्राप्ति होती है,इसका तेल भी एक बहुआयामी बहुकीमती औषधि है।

तेजपत्ता के औषधीय गुण

तेजपत्ता मधुमेह, अल्ज़ाइमर्स, बांझपन, गर्भस्त्राव, स्तनवर्धक, खांसी जुकाम, जोड़ो का दर्द, रक्तपित्त, रक्तस्त्राव, दाँतो की सफाई, सर्दी जैसे अनेक रोगो में अत्यंत उपयोगी है।

तेजपत्ता में दर्दनाशक, एंटी ऑक्सीडेंट गुण होते हैं। आयुर्वेद में अनेक गंभीर रोगो में इसके उपयोग किये जाते रहे हैं।*

चाय-पत्ती की जगह तेजपात के चूर्ण की चाय पीने से सर्दी-जुकाम, छींकें आना, बुखार, नाक बहना, जलन, सिरदर्द आदि में शीघ्र लाभ मिलता है।

तेजपात के पत्तों का बारीक चूर्ण सुबह शाम दांतों पर मलने से दांतों पर चमक आ जाती है।

तेजपात के पत्रों को नियमित रूप से चूंसते रहने से हकलाहट में लाभ होता है।

एक चम्मच तेजपात चूर्ण को शहद के साथ मिलाकर सेवन करने से खांसी में आराम मिलता है।

तेजपात के पत्तों का क्वाथ (काढ़ा) बनाकर पीने से पेट का फूलना व अतिसार आदि में लाभ होता है।

कपड़ों के बीच में तेजपात के पत्ते रख दीजिये, ऊनी, सूती, रेशमी कपडे कीड़ों से बचे रहेंगे।

अनाजों के बीच में 4-5 पत्ते डाल दीजिए तो अनाज में भी कीड़े नहीं लगेंगे लेकिन उनमें एक दिव्य सुगंध जरूर बस जायेगी।

अनेक लोगों के मोजों से दुर्गन्ध आती है, वे लोग तेजपात का चूर्ण पैर के तलुवों में मल कर मोज़े पहना करें। पर इसका मतलब ये नहीं कि आप महीनों तक मोज़े धुलें ही न.!

तेजपात का अपने भोजन में लगातार प्रयोग कीजिए, आपका हृदय मजबूत बना रहेगा, कभी हृदय रोग नहीं होंगे।

इसके पत्ते को जलाने से घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

इसका धुँआ मिर्गी रोगी के लिए काफी लाभदायक होता है।

इलायची-रोगप्रतिरोधक

इलायची की एक बहुत ही आकर्षक गंध है, जो तंत्रिकाओं को शांत करती है। जब एक व्यक्ति उदास हो, उसको इलायची डाल कर बनाई गई चाय से चमत्कारी प्रभाव हो सकता है। इलायची में एंटीआक्सीडेंट होने रोगप्रतिरोधक क्षमता तो बढ़ती ही है।

साथ ही चेहरे पर जल्दी झुर्रियां नहीं पड़ती व चेहरे की चमक भी बढ़ती है।

इलायची डालने से एक कप चाय का गुण कई गुना बढ़ जाता है।

इलायची को मोटे तौर पर दांतों में संक्रमण के इलाज के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

यह गैस में राहत पहुंचाने के साथ कलेजे की जलन को कम करती है।

इलायची का पेस्ट बनाकर माथे पर लगाएं। सिरदर्द में तुरंत आराम मिलेगा।

धूप में जाते समय मुंह में इलायची जरूर डालें।

मुंह से दुर्गन्ध आती हो, इसका इस्तेमाल करें।

सफर में मुंह में इलायची रखें। उल्टी नहीं आएगी।

सांस लेने में तकलीफ हो तो, मुंह में एक इलायची डालें, आराम मिलेगा।

अस्थमा और कफ के रोगी इलायची के पाउडर को शहद के साथ चाटें।

यदि आवाज बैठी हुई है या गले में खराश है, तो सुबह उठते समय और रात को सोते समय छोटी इलायची चबा-चबाकर खाएँ तथा गुनगुना पानी पीएँ।

यदि गले में सूजन आ गई हो, तो मूली के पानी में छोटी इलायची पीसकर सेवन करने से लाभ होता है।

सर्दी-खाँसी और छींक होनेपर एक छोटी इलायची, एक टुकड़ा अदरक, लौंग तथा पाँच तुलसी के पत्ते एक साथ पान में रखकर खाएँ।

बड़ी इलायची पाँच ग्राम लेकर आधा लीटर पानी में उबाल लें। जब पानी एक-चौथाई रह जाए, तो उतार लें। यह पानी उल्टियाँ रोकने में कारगर सिद्ध होता है।

मुँह में छाले हो जाने पर बड़ी इलायची को महीन पीसकर उसमें पिसी हुई मिश्री मिलाकर जबान पर रखें। तुरंत लाभ होगा।

यदि केले अधिक मात्रा में खा लिए हों, तो तत्काल एक इलायची खा लें। केले पच जाएँगे और आपको हल्कापन महसूस होगा।

बहुतों को यात्रा के दौरान बस में बैठने पर चक्कर आते हैं या जी घबराता है। इससे निजात पाने के लिएएक छोटी इलायची मुँह में रखलें।

पेशाब में जलन होने पर, इलायची को आंवला, दही और शहद के साथ खाएं।

इलायची के नियमित सेवन से रक्त संचार दुरुस्त होता है।

अपच होने पर इलायची, काली मिर्च को घी में मिलाकर लें।

पेट में ऐंठन के साथ दर्द हो, तो इलायची खाएं। अच्छा महसूस होगा।

भाषा या अपराध!: बंगाली बोलने वाले मुसलमानों की पहचान पर बढ़ते सवाल

शम्स आगाज़

भारत एक ऐसा महान देश है जिसकी नींव बहुभाषी, बहुधार्मिक और बहुसांस्कृतिक समरसता पर रखी गई है। यहाँ भाषा, धर्म, नस्ल और सभ्यता की विविधता को राष्ट्रीय एकता का अभिन्न अंग माना गया है। यही विविधता भारतीय संविधान और लोकतांत्रिक परंपराओं की आत्मा है। लेकिन पिछले कुछ वर्षों के दौरान देश में जो राजनीतिक, प्रशासनिक और सामाजिक परिवर्तन हुए हैं, उनमें ऐसे रुझान स्पष्ट रूप से सामने आए हैं जो न केवल लोकतांत्रिक मूल्यों के खिलाफ हैं, बल्कि अल्पसंख्यकों के मौलिक अधिकारों को कुचलने की दिशा में बढ़ते हुए कदम लगते हैं। ऐसा ही एक दुखद घटना हाल ही में हरियाणा के औद्योगिक शहर गुरुग्राम में घटी, जहाँ पश्चिम बंगाल और असम से संबंध रखने वाले 74 बांग्ला बोलने वाले मुस्लिम मजदूरों को केवल शक के आधार पर हिरासत में ले लिया गया। इनमें से अधिकांश सफाई, कूड़ा बीनने और झुग्गी बस्तियों में रहने वाले मजदूर थे। हैरानी की बात यह है कि इन लोगों को बिना किसी विधिवत आरोप, नोटिस या कानूनी प्रक्रिया के केवल इस संदेह में हिरासत में लिया गया कि ये विदेशी हैं, जबकि इनमें से अधिकांश के पास आधार कार्ड, मतदाता पहचान पत्र, पैन कार्ड और यहाँ तक कि पासपोर्ट जैसे वैध और कानूनी दस्तावेज़ मौजूद थे।

हिरासत में लिए गए इन व्यक्तियों के रिश्तेदारों ने नागरिकता के प्रमाण के रूप में पश्चिम बंगाल के विभिन्न थानों से सरकारी दस्तावेज़ भी प्रस्तुत किए, लेकिन अधिकारियों ने इन प्रमाणों को अवैध बताकर खारिज कर दिया। इस प्रक्रिया से यह स्पष्ट होता है कि मामला केवल पहचान पत्रों का नहीं बल्कि एक संगठित पूर्वाग्रह और भेदभावपूर्ण व्यवहार का है। इन घटनाओं में न केवल मानव गरिमा को अपमानित किया गया बल्कि भारतीय संविधान की आत्मा को भी आघात पहुँचाया गया, जो हर व्यक्ति को समान अधिकार, समान व्यवहार और कानूनी सुरक्षा की गारंटी देता है।

यह एक अत्यंत महत्वपूर्ण और चिंताजनक प्रश्न है कि क्या अब इस देश में बांग्ला बोलना अपराध माना जाने लगा है? बांग्ला भारत की आठवीं अनुसूची में शामिल मान्यता प्राप्त भाषाओं में से एक है। इसे बोलने वाले करोड़ों लोग न केवल पश्चिम बंगाल बल्कि असम, त्रिपुरा, झारखंड, बिहार, दिल्ली और कई अन्य राज्यों में पाए जाते हैं। भाषा किसी व्यक्ति की नागरिकता या वफादारी का निर्धारण नहीं कर सकती, क्योंकि भाषा का संबंध सभ्यता और संस्कृति से होता है, न कि सीमाओं से। यदि केवल भाषा के आधार पर किसी व्यक्ति की नागरिकता पर प्रश्न उठाया जाए, तो यह समूचे भाषायी ताने-बाने को बिखेरने की शुरुआत हो सकती है।

यह मामला केवल एक कानूनी मुद्दा नहीं बल्कि एक संवैधानिक और नैतिक संकट का रूप ले चुका है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद २1 हर व्यक्ति को जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अधिकार देता है और इसमें यह भी शामिल है कि किसी व्यक्ति को उसके अधिकारों से तब तक वंचित नहीं किया जा सकता जब तक कि पूरा कानूनी प्रक्रिया न अपनाई जाए। लेकिन इन हिरासतों में कानूनी प्रक्रिया का खुल्लमखुल्ला उल्लंघन किया गया है। बिना किसी नोटिस, बिना अदालत के आदेश और बिना किसी ठोस सबूत के लोगों को हिरासत में रखना कानून की रूह के खिलाफ है।

इन घटनाओं से यह धारणा बनती है कि बंगाली बोलने वाले मुसलमान एक विशेष राजनीतिक और प्रशासनिक पूर्वाग्रह का निशाना बनाए जा रहे हैं। जब किसी विशेष भाषा बोलने वाले या धर्म मानने वाले समुदाय को बार-बार शक की नजर से देखा जाए, उनके दस्तावेजों को फर्जी करार दिया जाए, उनके बच्चों को शिक्षा से वंचित कर दिया जाए, उनके घरों को बुलडोजर से गिरा दिया जाए, तो यह केवल उन व्यक्तियों पर अत्याचार नहीं बल्कि देश के लोकतांत्रिक मूल्यों, संवैधानिक सिद्धांतों और मानवाधिकारों का खुला उल्लंघन है। वास्तव में, ये घटनाएँ देश के लोकतांत्रिक ढांचे और समानता पर आधारित प्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े करती हैं, जिन्हें नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता।

असम में भी पिछले कुछ वर्षों से ऐसी ही नीतियों का अवलोकन किया गया है, जहाँ राज्य सरकार ने कथित अवैध प्रवासियों के खिलाफ बेदखली अभियान शुरू कर रखा है। सरकार का दावा है कि यह अभियान बांग्लादेश से अवैध रूप से आकर बसने वालों के खिलाफ है। लेकिन ज़मीनी सच्चाई यह है कि इस अभियान का असली निशाना बंगाली बोलने वाले मुसलमान हैं, जिनमें से अधिकांश दशकों से असम में रह रहे हैं। उनके पास ज़मीन के दस्तावेज़, सरकारी स्कूलों से शिक्षा के प्रमाण पत्र, पहचान पत्र और यहाँ तक कि मतदाता सूची में नाम भी दर्ज हैं, फिर भी उन्हें विदेशी घोषित कर उनके घरों से निकाल दिया जा रहा है। हाल की रिपोर्टों के अनुसार लगभग 8,000 घरों को बुलडोजर से ढहा दिया गया है।

बेदखली की इन कार्रवाइयों के दौरान सामने आए दिल दहला देने वाले घटनाओं ने राज्य व्यवस्था की संवेदनहीनता को उजागर कर दिया है। एक घटना में 19 वर्षीय शाकुर अली की मौत उस समय हुई जब पुलिस की मौजूदगी में उसके घर को तोड़ा जा रहा था। यह घटना केवल एक युवक की मृत्यु नहीं, बल्कि मानवीय संवेदना, न्यायिक आदेशों और प्रशासनिक जिम्मेदारी की भी मृत्यु है। गुवाहाटी हाई कोर्ट पहले ही निर्देश दे चुका था कि किसी भी बेदखली से पूर्व वैकल्पिक आवास की व्यवस्था की जाए, लेकिन इन निर्देशों को पूरी तरह नजरअंदाज़ कर हजारों लोगों को खुले आसमान के नीचे छोड़ दिया गया। बेदखली का यह अभियान केवल असम तक सीमित नहीं रहा। इसका असर उत्तर-पूर्व की अन्य राज्यों तक भी पहुँच चुका है। नागालैंड, मणिपुर और मेघालय ने भी ऐसे व्यक्तियों को अपनी सीमाओं में प्रवेश से रोकने के लिए विशेष अलर्ट जारी किए हैं, जिन्हें वे अवैध प्रवासी मानते हैं। ऐसे कदमों से नस्लीय तनाव में वृद्धि होती है और क्षेत्रीय समरसता को गंभीर क्षति पहुँचती है।

इन राज्यों में हाल की बेदखलियों और प्रवास के चलते अब तक लगभग पचास हज़ार से अधिक लोग बेघर हो चुके हैं। इनमें से अधिकांश लोग गरीब, मजदूर और पिछड़े वर्गों से ताल्लुक रखते हैं जो अपनी रोज़ी-रोटी कमाने के लिए दूसरे शहरों या राज्यों में पलायन करते हैं। इनके लिए पहले से ही शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास और सुरक्षा जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध नहीं थीं, अब जब उन्हें ज़बरदस्ती उनके घरों से निकाला जा रहा है, तो उनकी ज़िंदगियाँ पूरी तरह बिखर चुकी हैं।

मानवाधिकारों के गंभीर उल्लंघनों के बावजूद इन पीड़ितों के पुनर्वास के लिए कोई योजना मौजूद नहीं है। सरकार की चुप्पी और न्यायिक प्रणाली की देरी इन लोगों की ज़िंदगी को और अधिक पीड़ादायक बना रही है। मूल प्रश्न यह है कि जब इन लोगों के पास वैध दस्तावेज़ हैं, जब वे देश में पैदा हुए, वहीं शिक्षा ली, वहीं काम करते हैं, तो उन्हें विदेशी कैसे माना जा सकता है?

इन घटनाओं का एक और चिंताजनक पहलू यह है कि कुछ राजनीतिक बयानों के माध्यम से समाज में एक विशेष प्रकार का भय और असुरक्षा उत्पन्न की जा रही है। कुछ राजनीतिक नेता यह दावा कर रहे हैं कि असम में हिंदू अगले 10 वर्षों में अल्पसंख्यक बन जाएंगे क्योंकि कथित रूप से लाखों की संख्या में बांग्लादेशी मुसलमान आकर बस गए हैं। ये बयान किसी प्रमाणिक शोध या सबूत पर आधारित नहीं बल्कि केवल राजनीतिक उद्देश्यों के लिए दिए जा रहे हैं ताकि बहुसंख्यक वर्ग में भय पैदा किया जा सके और उन्हें एक विशेष दिशा में वोट देने के लिए प्रेरित किया जा सके।

इन बयानों और नीतियों का उद्देश्य २०२6 में होने वाले राज्य चुनावों से पहले मतदाताओं को धर्म और नस्ल के आधार पर विभाजित करना है। यह खतरनाक रणनीति न केवल सांप्रदायिक सौहार्द को नुकसान पहुँचा रही है बल्कि संवैधानिक सिद्धांतों और मानवीय गरिमा को भी कलंकित कर रही है। अप्रमाणित दावे, जैसे कि "दस लाख एकड़ ज़मीन पर अवैध प्रवासियों का कब्ज़ा", न केवल डर और दहशत फैलाते हैं बल्कि समाज में संदेह और शंका का ऐसा बीज बोते हैं जो स्थायी घृणा में बदल सकता है।

इन सभी परिस्थितियों को देखते हुए तत्काल आवश्यकता इस बात की है कि सरकारें अपनी नीतियों पर पुनर्विचार करें। ऐसे सभी कदम जो किसी भाषायी या धार्मिक अल्पसंख्यक को निशाना बनाते हों, उन्हें तुरंत रोका जाए। न्यायालयों को चाहिए कि वे इन गिरफ्तारीयों और बेदखलीयों की स्वतंत्र और निष्पक्ष जांच कराएं। उन लोगों को तुरंत न्याय दिया जाए जिन्हें बिना किसी अपराध, बिना किसी मुकदमे के केवल भाषा या धर्म के आधार पर निशाना बनाया गया। केंद्र सरकार को भी इस मामले में हस्तक्षेप करना चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हर राज्य भारतीय संविधान का पालन करे। यदि राज्य सरकारें मानवाधिकारों और संवैधानिक सिद्धांतों का उल्लंघन करती हैं, तो केंद्र की जिम्मेदारी बनती है कि वह इन उल्लंघनों का संज्ञान ले, सुधारात्मक कदम उठाए और इन पीड़ित नागरिकों के जीवन को पुन: स्थापित करे।

इस बात की भी आवश्यकता है कि राष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसा संवाद शुरू किया जाए जो भाषायी, धार्मिक और नस्लीय विविधता को स्वीकार करे और उसे राष्ट्रीय शक्ति में बदले। भारत की असली ताकत उसकी विविधता में है, और जब इस विविधता को अपराध बना दिया जाए तो यह देश की आत्मा को आहत करता है। बांग्ला भाषा हो या उर्दू, तमिल हो या तेलुगु ये सभी हमारी राष्ट्रीय विरासत का हिस्सा हैं, न कि कोई खतरा। यदि आज बांग्ला बोलने वाले मुस्लिम मजदूर निशाना बन रहे हैं, तो कल कोई और समुदाय भी इसकी चपेट में आ सकता है।

आज जब भारत स्वयं को दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र कहने पर गर्व करता है, और संयुक्त राष्ट्र के मंच पर मानवाधिकारों की वकालत करता है, तो क्या यह उसकी नैतिक, संवैधानिक और मानवीय जिम्मेदारी नहीं बनती कि वह अपने ही नागरिकों को न्याय, पहचान और गरिमा के साथ जीने का अधिकार प्रदान करे? यदि राज्य अपने नागरिकों को केवल उनकी भाषा, धर्म या नस्ल के आधार पर संदेह की नजर से देखने लगें, तो लोकतंत्र अपने असली उद्देश्य और आत्मा से दूर होता चला जाएगा। यह समय है कि भारत एक राष्ट्र के रूप में अपने सामूहिक अंत:करण को झकझोरे और हर उस नीति और कार्य का विरोध करे जो मानवाधिकारों, संवैधानिक सिद्धांतों और सामाजिक न्याय के खिलाफ हो। हमें नागरिक के रूप में इस सच्चाई को स्वीकार करना होगा कि बांग्ला बोलना कोई अपराध नहीं बल्कि एक महान सांस्कृतिक विरासत है। किसी व्यक्ति की भाषा उसकी नागरिकता या देशभक्ति का मापदंड नहीं हो सकती। भाषा दिलों को जोड़ने का माध्यम है, दीवारें खड़ी करने का हथियार नहीं।

हम उसे बाहर ढूंढ़ते हैं, कभी मंदिरों में, किताबों में, गुरुओं में, कब्रों में, धन में, सम्पत्ति में, लेकिन वह भीतर छिपा है, हमारी ही चेतना के केंद्र में।

जैसे ही मन शांत होता है, विचारों की लहरें थमती हैं, भीतर एक अद्भुत रोशनी प्रकट होती है, वही परमात्मा है। ध्यान उसका मार्ग है, प्रेम उसका स्पंदन है, और मौन उसका स्वर है। परमात्मा कोई वस्तु नहीं है कि जिसे पाया जाए, जिसे देखा जा सके। परमात्मा एक अनुभव है, गहरे मौन का, पूर्ण शून्यता का। जब हम शांत होते हैं, जब भीतर 'मैं' विलीन हो जाता है, तभी परमात्मा प्रकट होता है। वह कोई उपलब्धि नहीं, वह तो स्वाभाविक स्थिति है, जिसे हमने भुला दिया है। उसे पाने की जरूरत नहीं, बस स्वयं को खोने की जरूरत है। जैसे ही हम भीतर उतरते है, परमात्मा हमें अपनी बाँहों/आगोश में ले लेता है।

बनारस और बनारसी साड़ी को तैयार करने वाले बुनकर मजदूर की और किसानों की दास्तान

वाराणसी संवाददाता वसीम अहमद की क़लम से

बनारस कहने को तो एक गंगा जमुना तहज़ीब के लिए जाना जाता है हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई सभी धर्म के लोग बनारस में रहते हैं जिस तरह सफ़ेद पानी में जो कलर मिलाओ उस कलर का बन जाता है उसी प्रकार से बनारस का बुनकर बनारसी साड़ी को तैयार करने वाला शख्स उसी कलर में मिला गया है उसके अलावा कोई और काम उस तरीके से नहीं कर सकता है जिस तरह किसान खेती करके अनाज को उगाता है और इंसान का पेट भरने का काम कर्ता है उसी तरह बुनकर अपनी मेहनत से कपड़े को तैयार करने के बाद इंसानों का तन ढ़कने का काम करता है पर आज इन सबकी समाज में कोई महत्व नहीं है किसान और बुनकर मजदूर आत्म हत्या कर कर रहे हैं और सरकार इस पर कोई विचार नहीं कर रही हैं किसान अगर किसानी करना छोड़ दें तो मानव जाति का पेट कैसे भरेंगा और बुनकर कपड़े बनाना छोड़ दें तो इंसान कपड़े कैसे पहनेगा आज़ किसान और बुनकर मजदूर या तो यहां से पलायन कर रहे या आत्महत्याएं कर रहे हैं इसका जिम्मेदार कौन है।

कुछ पंक्तियां पर विचार करने की जरूरत है

जिस तरह किसान खेती करके अनाज उगाता है और इसकी मेहनत के हिसाब से मेहताना नहीं मिल रहा है इसका कारण हैं है बड़े बड़े उधोगपति इसका फायदा उठा रहे हैं और मनमाने तरीके से मार्केट में उस चीज को बेंच रहे हैं उसी तरह से बुनकरों पर उधोगपति का कब्जा है सस्ती दरों पर बनारसी साड़ी को खरीदना और ऊंचे दामों पर बेचना और मजदूरों को अपने पैरों के नीचे दबाकर रखा जा रहा है।

आज़ समाज में गरीब और पिछड़े वर्ग के लोगों को अच्छी शिक्षा नहीं मिल पा रहा है आज़ शिक्षा और स्वास्थ्य इतना महंगा हो गया है कि छोटे वर्ग के लोगों के उपर मार है।

वसीम अहमद पुर्व मिडिया प्रभारी उत्तर प्रदेश

एक व्यवस्था में दो नीतियां कतई बर्दाश्त नहीं

छोटा गाड़ी मालिकों पर लाखों का जुर्माना और बड़े एवं लिमिटेड गाड़ियों को रोकने की औकात नहीं

कैथल - हरियाणा

कैथल ट्रक आपरेटर यूनियन परिसर में राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ₹ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी₹ उफ्तत्सा के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ राजकुमार यादव ने विभिन्न विषयों पर बातचीत के पश्चात ट्रैक्टर ट्रॉली से व्यावसायिक माल परिवहन को तत्काल प्रभाव से बंद करने की बात की, लेन चालान, ओवर हाइट की बेवजह पेनल्टी, लोकेशन बंद करने की बात की व मुख्यमंत्री से इन सभी तथ्यों पर ध्यान देने की अपील की वह प्रदेश में आरटीओ व पुलिस विभाग की मनमानी बंद नहीं करने पर राज्यव्यापी आंदोलन की बात की 1 किसी भी तरह की अनियमित पाए जाने पर निजी पार्किंग में गाड़ी खड़ी कर 1200 से 1600 व 2000 तक प्रतिदिन की वसूली की जाती है जिसका राष्ट्रीय संयुक्त मोर्चा ट्रक ट्रांसपोर्ट सारथी ₹उफ्तत्सा₹ पुरजोर विरोध करता है 1 बाहर राज्यों से आने वाली गाड़ियों से भी विभिन्न बहाने कर जबरन वसूली की जाती है बड़े मोटर मालिकों व लिमिटेड कंपनियों के कितने चालान काटे गए इसका विवरण सरकार प्रदान करें एक ही व्यवसाय में इस तरह की दोगली नीति कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी 1 संपूर्ण राष्ट्र में परिवहन व्यवस्था के अन्तर्गत मोटर मालिक व चालक बंधुओं पर अत्याचार, जुल्म व जबरन उगाही के मामले में हरियाणा शीघ्र ही प्रथम पायदान में आने की आशंका जताई 1 शीघ्र ही महामहिम राज्यपाल महोदय व माननीय मुख्यमंत्री महोदय से मिलकर इस विषय में उन्हें जानकारी प्रदान करते हुए कड़ी कार्रवाई की मांग करेंगे 1 इस सभा में श्री रामफल जी, रविंद्र बधानी, कुलवंत सिंह , बलजिंदर सहारान, नरेश गोछी, सतीश धनकड़ व अन्य मौजूद थे 1

वीरता, स्वामी भक्ति, बुद्धि-ज्ञान आदि के भंडार हैं हनुमानजी महाराज : वैष्णवाचार्य मारुतिनंदनाचार्य "वागीशजी" महाराज

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। रुक्मिणी विहार रोड़ (निकट केशव धाम) स्थित भागवत पीठ में सत्य सनातन सेवार्थ संस्थान चैरिटेबल ट्रस्ट, वृन्दावन के द्वारा श्रावण मास के पावन उपलक्ष्य में सप्तदिवसीय 28वां श्रावण झूलन भागवत महोत्सव अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ चल रहा है। जिसके अंतर्गत मंगलवार को सायं काल श्रीहनुमद् आराधन मंडल के द्वारा संगीतमय सुंदरकांड का सामूहिक पाठ किया गया ।साथ ही श्रीहनुमानजी महाराज की आरती की गई।

इस अवसर पर आचार्य/भागवत पीठाधीश्वर वैष्णवाचार्य मारुति नंदनाचार्य ₹वागीशजी₹ महाराज एवं युवराज श्रीधराचार्य महाराज ने कहा कि श्रीहनुमानजी महाराज समस्त सद्गुणों की खान हैं। उनमें वीरता, स्वामी भक्ति, बुद्धि-ज्ञान आदि का भंडार है ।जो व्यक्ति जिस कामना से उनकी पूजा-अर्चना करता है, उसकी कामना वे निश्चित ही पूर्ण करते हैं।

प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी एवं भागवताचार्य डॉ. अशोक शास्त्री ने कहा कि श्रीहनुमानजी महाराज भक्ति शिरोमणि हैं ।कलिकाल में श्रीहनुमानजी की आराधना के बिना भगवान श्रीरामजी की भक्ति प्राप्त कर पाना असम्भव है। श्रीराम कथा मर्मज्ञ अशोक व्यास एवं डॉ. राधाकांत शर्मा ने कहा कि सुंदरकांड का पाठ सभी बाधाओं को दूर करने वाला है ।इस पाठ को करने से श्रीहनुमानजी महाराज शीघ्र ही प्रसन्न होकर भक्तों को मनवांछित फल प्रदान करते हैं।

इस अवसर पर भागवताचार्य शैलेन्द्र कृष्ण शास्त्री, पण्डित श्याम सुन्दर ब्रजवासी, संगीताचार्य धर्मवीर महाराज, आचार्य भरत शास्त्री आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे ।कार्यक्रम का विश्राम संत, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।

दिल्ली की बारिश के पानी में डूब गए भाजपा के चारों इंजन- अंकुश नारंग

मुख्य संवाददाता

***नई दिल्ली,** दिल्ली नगर निगम के इलाकों में जरा देर की बारिश में बार-बार हो रहे भारी जल भराव को खत्म करने की मांग को लेकर आम आदमी पार्टी के वरिष्ठ नेता और एमसीडी में नेता प्रतिपक्ष अंकुश नारंग ने भाजपा के मेयर राजा इकबाल सिंह को चिट्ठी लिखी है। उन्होंने कहा कि दिल्ली की बारिश के पानी में भाजपा के चारों इंजन डूब गए। दिल्ली में जलभराव की स्थिति भयावह हो चुकी है। सड़कें नदी और गलियां छोटे-छोटे तालाब बन गईं हैं ।एमसीडी की जल निकासी व्यवस्था फेल होने से जन जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। उन्होंने मांग की कि जल भराव का जल्द समाधान किया जाए। ड्रेनेज सिस्टम की जल्द सफाई कराई जाए और जल भराव से प्रभावित लोगों को जरूरी मदद दी जाए।

मेयर को लिखे पत्र में अंकुश नारंग ने कहा है कि विगत दिनों हुई भारी वर्षा के कारण दिल्ली के अनेक क्षेत्रों जैसे सदर बाजार, आईटीओ, पटपड़गंज, करोलबाग, मुंडका, शालीमार बाग, मोती बाग आदि में भारी जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो गई है। स्थिति इतनी भयावह हो चुकी है कि सड़कों ने नदियों का रूप ले लिया है तथा गालियां छोटे-छोटे तालाब बन गई हैं। आमजन को अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

अंकुश नारंग ने कहा है कि यह स्थिति दिल्ली नगर निगम एवं शासन की भारी लापरवाही और अक्षमता को दर्शाती है। हर वर्ष मानसून के दौरान ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न होती हैं, परंतु इनके स्थायी समाधान हेतु कोई ठोस प्रयास नहीं किया गया है। जल निकासी की व्यवस्था पूरी तरह से विफल हो चुकी है, जिससे जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है।

उन्होंने एक जनप्रतिनिधि एवं विपक्ष के नेता के नाते मेयर से मांग की है कि जलभराव की समस्या वाले क्षेत्रों में तत्काल राहत कार्य करवाए जाएं। ड्रेनेज प्रणाली की समुचित सफाई एवं मरम्मत कार्य शीघ्र प्रारंभ किया जाए। जलभराव से प्रभावित नागरिकों को आवश्यक सहायता एवं मुआवजा प्रदान किया जाए। दीर्घकालिक समाधान हेतु विशेषज्ञों की समिति गठित कर नगर के जल निकासी ढांचे में सुधार किया जाए।

अंकुश नारंग
नेता–विपक्ष
दिल्ली नगर निगम
मो. : 8010020102

कमरा नं. 201, द्वितीय तल
'ए' विंग, डॉ. एस.पी.एम. सिविक सेन्टर
जे.एल.एन. मार्ग, नई दिल्ली–110002
दूरभाष : का. : 011–23228241, 011–23228242
ई–मेल : lopmcd2025@gmail.com

दिनांक : 26/7/25

श्री राजा इकबाल सिंह जी,
माननीय महापौर,
दिल्ली नगर निगम,
दिल्ली।

HE MAYOR
Corporation of Di

विषय: दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में भारी जलभराव की समस्या के संबंध में।

माननीय श्री राजा इकबाल सिंह जी,

विगत दिनों हुई भारी वर्षा के कारण दिल्ली के अनेक क्षेत्रों—जैसे सदर बाज़ार, आईटीओ, पटपड़गंज, करोलबाग, मुंडका, शालीमार बाग, मोती बाग आदि—में भारी जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो गई है। स्थिति इतनी भयावह हो चुकी है कि सड़कों ने नदियों का रूप ले लिया है तथा गलियाँ छोटे-छोटे तालाब बन गई हैं। आमजन को अत्यधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।

यह स्थिति दिल्ली नगर निगम एवं शासन की भारी लापरवाही और अक्षमता को दर्शाती है। हर वर्ष मानसून के दौरान ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, परंतु इनके स्थायी समाधान हेतु कोई ठोस प्रयास नहीं किया गया है। जल निकासी की व्यवस्था पूरी तरह से विफल हो चुकी है, जिससे जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया है।

एक जनप्रतिनिधि एवं विपक्ष के नेता के नाते, मैं आपसे निम्नलिखित माँग करता हूँ:-

1. जलभराव की समस्या वाले क्षेत्रों में तत्काल राहत कार्य करवाए जाएँ।
2. ड्रेनेज प्रणाली की समुचित सफाई एवं मरम्मत कार्य शीघ्र प्रारंभ किया जाए।
3. जलभराव से प्रभावित नागरिकों को आवश्यक सहायता एवं मुआवजा प्रदान किया जाए।
4. दीर्घकालिक समाधान हेतु विशेषज्ञों की समिति गठित कर नगर के जल निकासी ढाँचे में सुधार किया जाए।

माननीय महापौर जी, यह समय आरोप-प्रत्यारोप का नहीं, बल्कि जनसेवा का है। जनता की पीड़ा को नजरअंदाज करना अब संभव नहीं है। आशा है आप शीघ्र कार्यवाही कर इस गंभीर समस्या का समाधान निकालेंगे।

आपके उत्तर की प्रतीक्षा में।

(अंकुश नारंग)

संजय कार्य : 21, डी.डी.ए. फ्लैट्स, न्यू रंजीत नगर, नई दिल्ली–110008 हैल्पलाइन नं. : 8588818000

विजय नगला में किसान यूनियन के नेता की हत्या: पानी की टंकी के पास सिर पर धारदार हथियार से हमला, मौके पर पहुंची कई थानों की पुलिस

परिवहन विशेष न्यूज

विजय नगला में भारतीय किसान यूनियन के नेता की मंगलवार रात हत्या कर दी गई। बिनावर थाना क्षेत्र के गांव विजय नगला में रहने वाले सुरेश चंद्र गुप्ता (55) भारतीय किसान यूनियन के नेता थे। घटना की जानकारी बुधवार सुबह तब मिली जब उनकी पत्नी उन्हें जगाने पानी की टंकी पर पहुंचीं। वहां उन्होंने सुरेश की खून से लथपथ लाश देखी। इसके बाद उनकी चीख निकल गई और आसपास के लोग मौके पर पहुंच गए। सुरेश के बेटे राहुल का काम गांव में जल जीवन मिशन के तहत बनी पानी की टंकी पर चौकीदारी करना था। मंगलवार रात राहुल नहीं था, इसलिए सुरेश टंकी पर चौकीदारी के लिए चले गए थे। किसी ने रात में उनके सिर पर धारदार हथियार से हमला कर हत्या कर दी। पुलिस और फोरेंसिक टीम ने घटनास्थल का मुआयना किया है। पुलिस ने शव को अपने कब्जे में ले लिया है। पुलिस का कहना है कि परिजनों की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज किया जाएगा। फिलहाल परिजनों का बयान दर्ज किया जा रहा है।

2024 में जलभराव में डूबने से मरे 40 लोगों के दोषी नेताओं एवं अधिकारियों पर कोई कार्यवाई क्यों नही की :दिल्ली भाजपा अध्यक्ष

मुख्य संवाददाता/सुषमा रानी

नई दिल्ली : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की चुनावी हार से बौखलाए दिल्ली आम आदमी पार्टी के अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज इस वर्ष दिल्ली में मानसून पूर्व नालों एवं सीवरों की सफाई एवं बारिश के दौरान होने वाले जलभराव की त्वरित निकासी की भाजपा सरकार द्वारा की गई व्यवस्था की सफलता से बौखला गए हैं और इस पर बेसिर पैर की ब्यानबाज़ी कर अपनी राजनीतिक खीझ दर्शा रहे हैं।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की नालों सीवर सफाई के आडिट की मांग करते हुए सौरभ भारद्वाज यह भी भूल गये की दिल्ली उच्च न्यायालय ने जो डी सिलटिंग आडिट का आदेश गत वर्ष 8 अप्रैल 2024 को दिया था वह उनकी अरविंद केजरीवाल सरकार के डी सिलटिंग घोटालों को लेकर 2018 दायर एक याचिका पर आया था और उस आदेश के अनुसार तत्कालीन अरविंद केजरीवाल सरकार को 30 जून 2024 तक उनके विभिन्न विभागों द्वारा डी सिलटिंग के दावों का थर्ड पार्टी आडिट करवा कर सार्वजनिक करने को कहा था जो अरविंद केजरीवाल सरकार ने कभी नही किया।

उन्होंने कहा है की दिल्ली वालों ने अपनी आंखों से अकेले गत वर्ष 2024 में लगभग 40 निर्दोष जाने जलभराव के कारण जाते देखीं और साथ देखा की केजरीवाल सरकार ने दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश के बाद भी डी सिलटिंग का थर्ड पार्टी आडिट नही कराया जो साफ दर्शाता है की केजरीवाल सरकार ने डी सिलटिंग के नाम पर दस साल घोटाला किया।

सौरभ भारद्वाज जो खुद केजरीवाल सरकार में मंत्री थे बतायें की क्यों उनकी सरकार ने 8 अप्रैल 2024 के दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश के बाद भी डी सिलटिंग का आडिट करवा कर क्यों 30 जून 2024 तक उसकी रिपोर्ट सार्वजनिक नही की।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की सौरभ भारद्वाज यह भी बतायें की उनकी सरकार ने अकेले 2024 में जलभराव में डूबने से मरे लोगों के दोषी नेताओं एवं अधिकारियों पर कोई कार्यवाई क्यों नही की।

मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता बताएं क्या उन्होंने डी सिल्टिंग का थर्ड पार्टी ऑडिट कराया : सौरभ भारद्वाज

सुषमा रानी

*नई दिल्ली, 30 जुलाई पार्टी मुख्यालय में हुई एक प्रेस वार्ता को संबोधित करते हुए आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने कहा कि 2024 में दिल्ली में लगभग 288 एमएम बारिश हुई थी, जिसके मुकाबले इस बार दिल्ली में 100 एमएम भी बारिश नहीं हुई है। परंतु दिल्ली का हाल यह है, कि पूरी दिल्ली जलमग्न नजर आ रही है। उन्होंने कहा कि भाजपा शासित दिल्ली सरकार द्वारा बड़े-बड़े दावे किए गए थे, कि सारी तैयारी कर ली गई है, परंतु उसके बावजूद थोड़ी सी ही बारिश में दिल्ली शहर के मुख्य मुख्य क्षेत्र पानी में डूबे हुए नजर आए। उन्होंने कहा कि कल हुई मात्र थोड़ी सी ही बारिश में दिल्ली का आईटीओ, जखीरा, अम्बेडकर स्टेडियम वाला इलाका, राम मनोहर लोहिया अस्पताल के सामने वाला रोड, भाजपा सरकार में मंत्री प्रवेश वर्मा के घर के निकट वाली मार्किट, कपिल मिश्रा के घर के सामने वाला रोड सभी जगह लोगों को जल भराव की भारी समस्या का सामना करना पड़ा, पूरी दिल्ली में हर जगह पानी ही पानी भरा हुआ

था। यही नहीं पहली बार ऐसा देखा गया की दिल्ली का दिल कहे जाने वाले कनॉट प्लेस में जल भराव का स्तर इतना अधिक था कि दुकानों के भीतर तक पानी भरा हुआ था।

उन्होंने कहा कि मानसून से पहले भाजपा शासित दिल्ली सरकार ने बहुत बड़े-बड़े दावे किए थे। सरकार की ओर से कहा गया था, कि इस बार मानसून के समय में जल भराव की समस्या से निपटने के सारे इंतजाम कर लिए गए हैं। सरकार की ओर से यह भी दावा किया गया था, कि करोड़ों रुपए के टेंडर डी सिल्टिंग के लिए जारी किए गए हैं और इस बार दिल्ली में जल भराव की कोई समस्या नहीं होगी। सौरभ भारद्वाज ने कहा कि भाजपा की दिल्ली सरकार के इतने बड़े-बड़े दावों के बावजूद थोड़ी सी ही बारिश में पूरी दिल्ली पानी में डूबती नजर आई। उन्होंने दिल्ली सरकार के दावों पर प्रश्न उठाते हुए कहा, कि यदि सरकार की ओर से डी सिल्टिंग के लिए करोड़ों रुपए के टेंडर जारी किए गए थे, परंतु उसके बावजूद भी थोड़ी सी ही बारिश में पूरी दिल्ली में सैकड़ो जगह पर जल भराव की समस्या खड़ी हुई, इसके दो ही कारण हो सकते हैं, कि या तो दिल्ली सरकार के दावे झूठे थे, या फिर डी सिल्टिंग के नाम पर खर्च किए गए करोड़ों रुपए में बड़ा भ्रष्टाचार हुआ है।

मीडिया के माध्यम से दिल्ली सरकार से अनुरोध करते हुए सौरभ भारद्वाज ने कहा कि भाजपा की दिल्ली सरकार रोज नए-नए घोटाले के दावे कर उनकी जांच कर रही है तो दिल्ली में डी सिल्टिंग के लिए खर्च किए गए करोड़ों रुपए से क्या काम किया गया इसकी जांच भी दिल्ली सरकार को करनी चाहिए। उन्होंने कहा कि ऐसा पहली बार देखा गया कि कनॉट प्लेस में इतने बड़े स्तर पर जल भराव हुआ। इससे पहले कभी हमने ऐसी खबर नहीं सुनी कि बारिश में कनॉट प्लेस पानी में डूब गया हो। उन्होंने कहा कि कनॉट प्लेस के लोग ही इस बात को कह रहे हैं कि सरकार की लापरवाही के कारण ही ऐसा हुआ। सौरभ भारद्वाज ने कहा कि कनॉट प्लेस के समीप स्थित रिपब्लिक ऑफ मिंटो ब्रिज को बचाने की कवायत में पुरी की पूरी सरकार, मुख्यमंत्री, मंत्री और उपराज्यपाल महोदय लगे रहते हैं और उसी का यह नतीजा हुआ कि पूरा कनॉट प्लेस पानी में डूब गया।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि डी सिल्टिंग के संबंध में माननीय उच्च न्यायालय का यह कहना है, कि डी-सिल्टिंग केवल कागजों पर होती है और इसमें बड़ा भ्रष्टाचार किया जाता है। डी सिल्टिंग के जितने भी काम होंगे, चाहे वो दिल्ली सरकार के किसी भी विभाग द्वारा किए गए हों, सबका किसी स्वतंत्र एजेंसी द्वारा थर्ड पार्टी ऑडिट किया जाना चाहिए। सौरभ भारद्वाज ने मीडिया के माध्यम से दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता जी से प्रश्न पूछते हुए कहा, कि उच्च न्यायालय के आदेश अनुसार दिल्ली सरकार ने जो डी सिल्टिंग की थर्ड पार्टी ऑडिट कराई है उसे जल्द से जल्द सार्वजनिक किया जाए।

संगम विहार में विशाल नेत्र जांच शिविर का आयोजन, 227 लोगों ने उठाया लाभ

नई दिल्ली: नोबल कॉज सोशल एंड हेल्थ केयर ऑर्गनाइजेशन, नई दिल्ली द्वारा तारा संस्थान, उदयपुर (राजस्थान) के सहयोग से दिल्ली के संगम विहार स्थित अस्थल मंदिर परिसर में एक निशुल्क नेत्र जांच शिविर का सफल आयोजन किया गया। इस शिविर में 227 लोगों ने नेत्र जांच, निशुल्क चश्मे एवं ऑपरेशन की सुविधा का लाभ उठाया।

शिविर में निशुल्क आंखों की जांच, चश्मों का वितरण, एवं जरूरतमंद मरीजों के लिए निशुल्क ऑपरेशन की व्यवस्था की गई थी। ऑपरेशन के लिए निशुल्क परिवहन, रहने, और भोजन की पूरी व्यवस्था संस्था की ओर से की गई थी।

डॉ. इरशाद अहमद (अध्यक्ष, नोबल कॉज) ने कहा कि हमारा उद्देश्य केवल इलाज कराना नहीं, बल्कि समाज के उस तबके तक स्वास्थ्य सुविधाएं पहुँचाना है जो आर्थिक रूप से कमज़ोर है। नेत्र ज्योति की यह सेवा हमारे लिए सौभाग्य का कार्य है। हम आगे भी इसी प्रकार के शिविर लगातार आयोजित करते रहेंगे।

श्री राम कुमार 'काले भाई' (संरक्षक एवं समाजसेवी) ने कहा कि नेत्र ज्योति अभियान समाज सेवा का ऐसा माध्यम है, जो न सिर्फ़ स्वास्थ्य सेवा देता है, बल्कि लोगों को आत्मनिर्भर बनाने में भी मदद करता है। ऐसे शिविरों के माध्यम से हम गरीब और ज़रूरतमंद लोगों तक राहत पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

शिविर को सफल बनाने में संस्था के सदस्यों का अहम योगदान रहा। विशेष रूप से श्री इन्द्रासन चौधरी, श्रीमती रंजना बिष्ट, तनुज, अजय कुमार, फिरोज, सन्नी एवं अन्य स्वयंसेवकों ने सक्रिय भूमिका निभाई।

स्थानीय नागरिकों ने संस्था की इस पहल की खुले दिल से सराहना की और भविष्य में भी ऐसे स्वास्थ्य शिविरों के आयोजन की मांग की।

एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था ने संगीतमय सुन्दरकाण्ड पाठ का आयोजन कर मनाया अपना नौवां स्थापना दिवस

एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू संरक्षक रुपेन्द्र नागर के नेतृत्व में संस्था के माध्यम से संस्था के नौवें स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर संस्था पदाधिकारियों ने हल्द्वानी प्राचीन श्री राम मन्दिर में संगीतमय सुन्दरकाण्ड पाठ का आयोजन कर प्रसाद वितरण कर संस्था का नौवां स्थापना दिवस मनाया

इस दौरान एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था संरक्षक हरीश चन्द पाण्डेय सदस्य मनीष साहू ने संयुक्त रूप से कहा की वैदिक सत्य सनातन धर्म को आत्मसात कर रामराज्य की संकल्पना के साथ शांति प्रेम बंधुत्व की भावना रखते हुए एकता के एक सूत्र में बंधकर भारत माता भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के मान सम्मान के प्रति त्याग तपस्या समर्पण भाव के साथ जिस दिन से एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था की स्थापना हुई है उस दिन से ही संस्था लगातार धर्महित समाजहित भारतहित में कार्य कर रही है और हम भगवान के असीम कृपा दृष्टि आशीर्वाद से आस्था निष्ठा दृढ़ संकल्प शक्ति के साथ संस्था के द्वारा सदैव धर्महित समाजहित भारतहित में कार्य करते रहे क्योंकि लोकमंगल कार्य ही संस्था का उद्देश है क्योंकि केवल अपने सुख की चाह हमें मानव होने के अर्थ से पृथक करती है इसलिए मानव होने के नाते जब तक हम दूसरे के दुःख दर्द में साथ नहीं निभाएंगे तब तक इस जीवन की सार्थकता सिद्ध नहीं होगी इसलिए सुख शांति समृद्धि प्रगति उन्नति से परिपूर्ण जीवन के लिए सदाचारी होना ही पहली शर्त है जो उत्कृष्ट विचारों के बिना संभव नहीं है हमें यह दुर्लभ मानव जीवन किसी भी कीमत पर निरर्थक और उद्देश्यहीन नहीं जाने देना चाहिए लोकमंगल की कामना ही हमारे जीवन का उद्देश्य होना चाहिए जिससे हम अपने भारत देश को जल्द से जल्द विश्वगुरु बना सकें और एक समाज श्रेष्ठ समाज संस्था भगवान के आशीर्वाद से भविष्य में आगे कई हजार गुना तेजी से धर्महित समाजहित भारतहित में हमेशा कार्य करती रहेगी

इसी क्रम में संस्था के संगीतमय सुन्दरकाण्ड पाठ के आयोजन में सामाजिक संगठनों के सम्मानित सभी समाजसेवियों सहित सभी धर्म प्रेमियों ने पहुँचकर संस्था को अपना स्नेह आशीर्वाद शुभकामनाएं देने के लिए आप सभी का हृदय की गहराइयों से आभार

संस्था के स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर संगीतमय सुन्दरकाण्ड पाठ का गायन प्राचीन श्री राम मन्दिर के पंडित विवेक शर्मा जी कथावाचक रितेश जोशी जी सहित उनकी टीम ने किया

इस दौरान संगीतमय सुन्दरकाण्ड पाठ का आयोजन करने में संस्था अध्यक्ष योगेन्द्र कुमार साहू संरक्षक हरीश चन्द्र पाण्डेय रुपेन्द्र नागर उपाध्यक्ष लोकेश कुमार साहू महामंत्री चिरौंजी लाल सचिव नन्दकिशोर आर्या कोषाध्यक्ष बलराम हालदार योगा प्रभारी धर्मा कुमारी मीडिया प्रभारी मुकेश सरकार मार्गदर्शक विपिन चन्द पाण्डेय आरपी सिंह खेमराज साहू विनीत अग्रवाल पूर्णिमा रजवार योगिता बनोला रेनू कांडपाल मीना मिश्रा पूजा जोशी अलका टंडन दीपा रावत अंशिका साहू रिंकी गुप्ता जया जोशी पूनम गुप्ता प्रीती आर्या रेखा बलूनी लक्ष्मी हालदार मीना जोशी सुनीता तिवारी मीरा श्रोत्रिय मीना राणा काजल खत्री सीमा बत्रा चम्पा हालदार हिमांशी जोशी तमन्ना तिवारी जानकी रैगाई हेमा कार्की सीता साहू लीला भंडारी हेमन्त कुमार साहू पीयूष शर्मा मनीष साहू धर्मपाल सिंह धर्मेंद्र साहू कमलेश आर्या सूरज कुम्हार सूरज मिस्त्री दीपक कुमार संदीप यादव निखिल साहू चंद्रशेखर बंसल अमन कुमार अमित गोस्वामी सुशील राय रितिक साहू करन जायसवाल गौरव भट्ट पुलकित कुमार युवराज गुप्ता नन्दकिशोर आर्या गोविन्द मिस्त्री कोमल गर्ग अनामिका गौतमी संध्या सागर दिव्यांशी जोशी भवना कश्यप संजय कुमार कन्हैया लाल रवि गुप्ता मुकेश साहू नितिन हालदार अशोक कुमार वाल्मीकि रोहित देव मुकेश कुमार आदि लोग उपस्थित रहे(

"नारी गरिमा का अपमान नहीं सहेगा हिंदुस्तान": मौलाना की टिप्पणी पर लोगों में उबाल, कड़ी कार्रवाई की मांग तेज

जनता के ग़रीब मजदूर दलित वर्ग ने सपा प्रमुख की चुप्पी पर तीखा सवाल उठाया -- ₹जो नेता अपनी पत्नी के अपमान पर भी आवाज़ नहीं उठा सकता, वह देश और समाज के लिए कैसे निर्णायक नेतृत्व दे सकता है?"

आम लोगों ने नेताजी से कहा - अब यह वक्त चुप्पी साधने का नहीं, पत्नी के मान-सम्मान के लिए खड़े होने का है -- अगर सपा प्रमुख अब भी वोट बैंक के मोह में चुप रहे, तो यह न केवल उनकी निजी विफलता होगी, बल्कि समूचे राजनीतिक नेतृत्व पर सवालिया निशान बन जाएगा।----

उन्होंने इस मुद्दे पर सपा नेतृत्व से नैतिक साहस दिखाने और वोटबैंक की राजनीति से ऊपर उठने की मांग की।----

उन्होंने अपील की कि मजहब की आड़ में अश्लीलता और नारी-विरोधी मानसिकता फैलाने वालों का खुला बहिष्कार किया जाए।----

साथ ही, सपा प्रमुख से मांग की गई कि वह पार्टी के भीतर और बाहर, महिलाओं के सम्मान पर समझौता करने वालों के खिलाफ सख्त रुख अपनाए।-----

लखनऊ, संजय सागर सिंह। देश की तीसरी सबसे बड़ी राजनीतिक पार्टी, समाजवादी पार्टी, एक बार फिर विवादों के घेरे में है। हाल ही में संसद भवन स्थित मस्जिद में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और उनकी पत्नी, मैनपुरी सांसद की उपस्थिति को लेकर एक मौलाना द्वारा की गई अशोभनीय, अश्लील और नारी-विरोधी टिप्पणी ने न केवल राजनीति बल्कि पूरे समाज को झकझोर दिया है।

आम लोगों के साथ आज़ की चर्चा में इस घटनाक्रम ने महिलाओं के सम्मान और गरिमा के मुद्दे को फिर एक बार राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में ला दिया है। मौलाना की टिप्पणी को न सिर्फ महिला सांसद का अपमान बताया जा रहा है, बल्कि इसे समूचे नारी समाज की अस्मिता पर हमला करार दिया गया है।

सियासी चुप्पी पर सवाल

जनता के ग़रीब मजदूर दलित वर्ग ने सपा प्रमुख की चुप्पी पर तीखा सवाल उठाया है। लोगों ने पूछा है, ₹जो नेता अपनी पत्नी के अपमान पर भी आवाज़ नहीं उठा सके, वह देश और समाज के लिए कैसे निर्णायक नेतृत्व दे सकते हैं?₹ उन्होंने इस गंभीर मुद्दे पर सपा नेतृत्व से नैतिक साहस दिखाने और वोटबैंक की राजनीति से ऊपर उठने की मांग की है।

अपीलः मौन नहीं, प्रतिरोध का समय

आखिर में उन्होंने अपील की कि मजहब की आड़ में अश्लीलता और नारी-विरोधी मानसिकता फैलाने वालों का खुला बहिष्कार किया जाए। साथ ही, समाजवादी पार्टी से मांग की गई कि वह पार्टी के भीतर और बाहर, महिलाओं के सम्मान पर समझौता करने वालों के खिलाफ सख्त रुख अपनाए। अब यह वक्त चुप्पी साधने का नहीं, पत्नी के मान-सम्मान के लिए खड़े होने का है। अगर सपा प्रमुख अब भी वोट बैंक के मोह में चुप रहे, तो यह न केवल उनकी निजी विफलता होगी, बल्कि समूचे राजनीतिक नेतृत्व पर सवालिया निशान बन जाएगा।

सर्व समाज से तीखी प्रतिक्रिया

सिविल सोसाइटी, बुद्धिजीवियों और सामाजिक संगठनों ने एक स्वर में इस बयान की कड़ी निंदा की है। उन्होंने कहा है कि यह टिप्पणी न केवल महिला सांसद की गरिमा को ठेस पहुंचाती है, बल्कि भारतीय लोकतंत्र और संवैधानिक मूल्यों की भी अवमानना करती है। अब समय आ गया है कि ऐसे सियासी मौलानाओं का सामाजिक बहिष्कार किया जाए जो धर्म की आड़ में नफरत और अश्लीलता फैलाते हैं।

'मजहब नहीं सिखाता बेहूदगी'

मौलाना की टिप्पणी को 'बीमार मानसिकता' का परिणाम बताते हुए आम लोगों ने कहा कि इस्लाम सहित कोई भी धर्म स्त्रियों के प्रति अपमानजनक रवैया नहीं सिखाता। पैग़म्बर मोहम्मद साहब ने स्वयं मस्जिद-ए-नबवी में गैर-मुस्लिमों का स्वागत किया। मगर मौजूदा दौर के कुछ कट्टरपंथी सिर्फ टीवी कैमरों के लिए मजहब की नहीं, नफरत और बेहूदगी की स्क्रिप्ट पढ़ते हैं।

'मौलाना नहीं, गली-चौराहे की भाषा"

उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि मौलाना की भाषा किसी विद्वान धर्मगुरु की नहीं, बल्कि सड़कछाप बदजुबानों जैसी थी। एक तीन बार लोकसभा की सांसद रही महिला के लिए ऐसी अभद्र भाषा का प्रयोग सियासत की गिरावट का सबसे घिनौना उदाहरण है।

महिलाओं की आवाज़ बनेंगी पायल लाठ, सीआरपीएफ ने आंतरिक समिति में दी जगह

निष्पक्षता व पारदर्शिता के साथ जिम्मेदारी निभाऊंगी : पायल लाठ

सुनील चिंचोलकर

बिलासपुर, छत्तीसगढ़। बिलासपुर में जब बात हो महिला सुरक्षा , मदद करने वाले हाथ या दूसरों के आंसुओं को पोंछने और न्याय की – तो बस एक ही नाम आता है पायल लाठ। पायल एक नया सवेरा वेलफेयर फाउंडेशन की अध्यक्ष पायल लाठ की समाजसेवा और महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में सक्रियता को देखते हुए सीआरपीएफ ने छत्तीसगढ़ सेक्टर की आंतरिक शिकायत समिति का सदस्य नियुक्त किया है। यह समिति कार्यस्थल पर महिलाओं के साथ यौन उत्पीड़न की शिकायतों की निष्पक्ष जांच और समाधान के लिए गठित की जाती है।

पायल लाठ को यह जिम्मेदारी उनके सामाजिक कार्यों, महिला अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाने और उनके न्यायसंगत विचारों के चलते सौंपी गई है। समिति की सदस्य बनने के बाद पायल लाठ ने कहा कि यह न केवल उनके लिए सम्मान की बात है बल्कि महिलाओं को सुरक्षित कार्य वातावरण उपलब्ध कराने की दिशा में यह एक बड़ा दायित्व भी है।

उनकी नियुक्ति से यह संदेश गया है कि समाज में महिलाओं की सुरक्षा और सम्मान के लिए सजग एवं संवेदनशील लोगों की भूमिका अहम है। पायल लाठ ने आश्वस्त किया कि वे निष्पक्षता, पारदर्शिता और संवेदनशीलता के साथ अपनी भूमिका निभाएंगी। उनके इस दायित्व से समाज में महिलाओं के आत्मविश्वास को और बल मिलेगा।

पायल लाठ इससे पहले भी सीएसपीटीसीएल एवं बिलासपुर पुलिस के साथ इसी जिम्मेदारी से जुड़ी रही हैं और हर बार उन्होंने अपनी काबिलियत, संवेदनशीलता और संकल्प से समाज को दिशा देने का कार्य किया है। पायल लाठ की कार्यशैली न सिर्फ़ प्रभावी और निर्णायक रही है, बल्कि वे हमेशा अन्य महिलाओं को जागरूक, मजबूत और आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा भी देती रही हैं।

कानपुर को सदैव याद रहेगा नाम अखिल, काम अखिल और परिणाम अखिल

सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां की कमिश्नरेट पुलिस ने हर तरह के अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई ने अब तक सफेदपोशों खासकर पत्रकार रूपी माफियाओं समेत हर तरह अपराध करने वाले अनगिनत लोगों भिजवाने का रिकॉर्ड तोड़ा है। डीजी पद पर प्रोन्नति के बाद अब दिल्ली के लिए तैयार पुलिस कमिश्नर अखिल कुमार की अगुवाई में इस प्रभावी कार्रवाई के दायरे में पत्रकारिता का चोला ओढ़े शातिर माफियाओं समेत बड़ी संख्या में ऐसे भी अपराधी रहे , जिनका कभी पूरे जिले में आतंक था लेकिन अब वह केवल भीख मांगने के अलावा पहले जैसा किसी भी तरह का अपराध भी कदापि नहीं कर सकेंगे ,क्योंकि पुलिस ने उनको इस काबिल रखा ही नहीं है। यह भी सच है कि इन अपराधी माफियाओं के वास्तविक रूप से पतन की शुरुआत योगी सरकार से हुई। और इसमें भी कानपुर का नंबर तब आया, जब ईश्वर ,अल्लाह और गॉड आदि नामों वाली संसार संचालक शक्ति सत्ता द्वारा कर्तव्य निष्ठा के प्रति परिश्रम पूर्ण ईमानदारी और निडरता के भी पर्याय लोकहित में अपनी धुन के पक्के बेहद तेजतर्रार वरिष्ठ आईपीएस अधिकारी एडीजी अखिल कुमार को कानपुर का पुलिस कमिश्नर बना दिया गया, जिसके बाद उन्होंने जिस तरह से चेहरे बेनकाब करते हुए नेताओं, पत्रकारों और वकीलों के रूप वाले सफेदपोश माफिया अपराधियों को कानून का अभूतपूर्व एतिहासिक पाठ पढ़ाया है। आने वाली पीढ़ियां भी उसे कभी भूल न सकेंगी।

योगी सरकार की मंशा के अनुरूप कानपुर के हित में सर्वोत्तम साबित वरिष्ठ आईपीएस अखिल कुमार की पुलिस कमिश्नर के रूप में नियुक्ति का रहस्य भी आध्यात्मिक दृष्टिकोण के हिसाब से साधारण नहीं असाधारण है क्योंकि आध्यात्मिक पक्ष के मुताबिक संसार संचालक ईश्वर ,अल्लाह और गॉड देश, कालखंड और परिस्थितियों यानी जरूरत के हिसाब से ही मानव शरीर धारी दुष्टों को उनके कर्मों का फल देने के लिए नरेंद्र मोदी ,योगी आदित्यनाथ या फिर अब डीजी बनने के रूप में पुलिस विभाग की सेवा में सर्वोच्च पंक्ति में शामिल हो चुके वरिष्ठ आईपीएस अखिल कुमार जैसों को ही माध्यम बनता है, लेकिन यह सब कुछ समय बद्ध। ना समय से पहले और ना ही समय के बाद। मतलब अच्छे के साथ अच्छा और बुरे यानी अपराधियों के साथ बुरा समय भी अब डीजी पद

प्रोन्नत अखिल कुमार जैसों के ही रूप में आता है, जिनका नाम और कर्म के अनुरूप सब कुछ अखिल यानी सम्पूर्ण ही रहा। मसलन जिन सफेद पोश अपराधियों के खिलाफ कभी कुछ नहीं हुआ पत्रकारिता का चोला ओढ़े उन सफेद पोश शातिरों के खिलाफ कार्यवाही में भी अखिल, पीड़ितों के हित में अखिल, कानून व्यवस्था में अखिल, ट्रैफिक व्यवस्था में अखिल और उस सब में भी अखिल यानी (सम्पूर्ण) योगी सरकार की मंशा के अनुरूप जिसकी जरूरत कानपुर को थी। यह भी सच है कि पुलिस कमिश्नर के रूप में बेजोड़ अखिल कुमार की अमूल्यतम और ऐतिहासिक साबित सेवाओं का सौभाग्य कानपुर को अब दोबारा कभी नहीं मिलेगा। इसलिए सौभाग्यशाली हैं, वह सभी लोग ,जिन्हें उनकी कर्तव्य के प्रगाढ़ निष्ठा और ईमानदारी का लाभ मिला।

यह बात अलग है कि किसी भी पद का धारक या फिर किसी भी स्थिति में होने वाला संसार का कोई भी व्यक्ति दूसरों के हित में अपनी अधिकार संपन्नता और सक्षमता का प्रयोग भी एक निश्चित काल अवधि तक ही कर सकता है, क्योंकि एक समय ऐसा भी आता है, जब हम उस पद और स्थित में नहीं रह पाते , जो कभी हमारे लिए परोपकार का माध्यम हुआ करता था। दूसरों की परेशानियों और कष्टों के निवारण के बदले हमारे लिए दुआओं और शुभकामनाओं का माध्यम हुआ करता था। यहां दुवाओं, शुभकामनाओं और प्रार्थनाओं की बात इसलिए क्योंकि बोले गए शब्द कभी नष्ट नहीं होते। वह संबंधित के जीवन में समय आने पर अवश्य ही फलित होते हैं। वैसे भी संसार में किसी के भी कुछ भी होने, करने और बनने का माध्यम भी मौन की दशा नहीं बल्कि लिखने, पढ़ने और बोलने के रूप में ईश्वर की तरह ही अजर ,अमर, अविनाशी अक्षर से शब्द और शब्द से वाक्य ही होते हैं, जो कि संबोधनों, आदेशों और निर्देशों के रूप में लोक व्यवस्था का संचालन समय के अनुरूप ही करते हैं , और इसी क्रम में अगर यहां डीजी बन चुके लोकहित के मामले में हर दृष्टिकोण से सराहनीय ,अनुकरणीय और बेजोड डीजी अखिल कुमार के ऐतिहासिक उपलब्धियों वाले कालखंड की बात करें तो यह सब कुछ परिस्थितियों के अनुरूप प्रकृति द्वारा नियंत्रित समय की मांग का ही परिणाम है। वरिष्ठ आईपीएस अखिल कुमार के रूप में जिसका सौभाग्य कानपुर को भी प्राप्त हुआ।

संसद में ऑपरेशन सिंदूर पर शाब्दिक महासंग्राम- पीएम नरेन्द्र मोदी बनाम नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी-ट्रंप के नाम की भी गूंज

ऑपरेशन सिंदूर पर बहस संसद से लाइव- भारत सहित पूरी दुनियाँ ने देखी- ट्रंप का 29 बार का बयान व पाक़ डीजीएमओ के सीजफायर निवेदन पर युद्ध विराम तर्क पर क़्या देश संतुष्ट हुआ?

एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में 21 जुलाई से 21 अगस्त 2025 तक चल रहे मानसून सत्र को पूरी दुनियाँ लाइव देख रही है जिसमें पिछले कुछ सत्रों की तरह इस सत्र में भी ऑपरेशन सिंदूर, ट्रंप का 29 बार सीजफायर करने का दावा व बिहार वोटर वेरीफिकेशन इत्यादि मुद्दों पर हंगामें की वजह से कामकाज ठप्प पड़ा था। आखिर सरकार ने ऑपरेशन सिंदूर पर बहस करने की बात मानी और संसद के दोनों सदनों में 16-16 घंटे की बहस 28-29 जुलाई 2025 को देर रात्रि समाप्त हुई। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र दोनों दिन पूरी बहस को टेलीविजन के माध्यम से कवर किया तो पाया के सभी पक्षकारों ने तर्क वितर्क बहुत ही शानदार किया परंतु विशेष रूप से रेखांकित करने वाली बात नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी व प्रियंका गांधी तथा पीएम मोदी रहे। जिसमें मैंने महसूस किया कि तीन बातों से मैं और शायद जानता भी संतुष्ट नहीं हुई होगी (1) यह कि ट्रंप की गूंज इस मामले में संसद के दोनों सदनों में हुई जो 29 बार कह चुके हैं कि सीजफायर उन्होंने करवाया है।(2) मुद्दा कि भारत इतनी आसानी से पाक डीजीएमओ का निवेदन कैसे मान सकता है, जबकि पूरा विपक्ष, सरकार के साथ खड़ा था।और (3) अंतिम बात जब इतनी 32 घंटे की बहसबाजी तर्कवितर्क हुए तो फिर विभिन्न पार्टियों के सांसद 7 डेलिगेशन बनाकर पूरी दुनियाँ में क्या समझाने गए थे। हालांकि विपक्ष के सभी वक्ताओं द्वारा उठाए गए प्रश्नों का जवाब माननीय पीएम ने 29 जुलाई 2025 को अंत में देर रात्रि एक घंटा 22 मिनट का समय लेकर पूरे सवालों के जवाब दिए,फिर भी मेरा मानना है कि यह तीन प्रश्न मेरे और जनता के मन में क्लियर नहीं हुए हैं इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, ऑपरेशन सिंदूर पर 32 घंटे की बहस में, पूरी दुनियाँ में घूमें सभी पार्टियों के 7 डेलिगेशन व ट्रंप द्वारा सीजफायर करवाने के 29 बार बयान पर जवाब/खंडन नहीं आया जो रेखांकित करने वाली बात है।

साथियों बात अगर हम दिनांक 29 जुलाई 2025 को देर रात्रि समाप्त हुए 32 घंटे के ऑपरेशन सिंदूर पर शाब्दिक महासंग्राम में नेता प्रतिपक्ष व अनेक सदस्यों द्वारा उठाए गए सवालों की करें तो, नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि पहलगाम में हुआ हमला क्रूर और निर्दयी था, जो पूरी तरह पाक प्रायोजित था। ऑपरेशन सिंदूर शुरू होने से पहले ही विपक्ष ने भारत की सेना और चुनी हुई सरकार के साथ चट्टान की तरह खड़ा रहने की प्रतिबद्धता जताई थी। हमें गर्व है कि एक विपक्ष के तौर पर हम उस तरह एकजुट रहे जैसा हमें होना चाहिए था। ट्रम्प ने 29 बार कहा है कि हमने सीजफायर करवाया। अगर दम है तो पीएम यहां सदन में यह बोल दें कि वह झूठ बोल रहे हैं।अगर यह झूठ है तो पीएम यहां बोल दें कि ट्रंप झूठ बोल रहे हैं। पीएम में हिम्मत है तो वो बोल देंगे। प्रियंका गांधी वाड्रा ने लोकसभा में बहस के दौरान सरकार पर पहलगाम

आतंकी हमले पर सवाल खड़े किए। उन्होंने आतंकी हमले की जिम्मेदारी को लेकर कहा कि किसी का इस्तीफा क्यों नहीं हुआ ? अपने भाषण में उनका निशाना रक्षा,गृहमंत्री पर था। उन्होंने कहा 2008 में आतंकी हमला हुआ। राज्य के चीफ मिनिस्टर का इस्तीफा हुआ। देश के गृहमंत्री ने इस्तीफा दिया, क्या इस सरकार में किसी काइस्तीफा हुआ ? क्या सेना प्रमुख,क्या इंटेलीजेंस प्रमुख ने इस्तीफा दिया ? क्या गृह मंत्री ने इस्तीफा दिया ? इस्तीफा छोड़िए, जिम्मेदारी तक नहीं ली ? सांसद गौरव गोगोई ने भी सोमवार को लोकसभा में मोदी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा था कि रक्षा मंत्री ने बहुत सारी जानकारी दी लेकिन रक्षामंत्री के रूप में उन्होंने उल्लेख नहीं किया कि कैसे पाक से आतंकवादी पहलगाम पहुंचे और 26 लोगों को मार डाला।गोगोई ने कहा, "पूरा देश और विपक्ष पीएम का समर्थन कर रहा था। अचानक 10 मई को हमें पता चला कि युद्ध विराम हो गया है। क्यों ? हम पीएम से जानना चाहते थे कि अगर पाकिस्तान घुटने टेकने को तैयार था तो आप रुके क्यों और किसके सामने आत्मसमर्पण किया ? अमेरिकी राष्ट्रपति 26 बार कह चुके हैं कि उन्होंने भारत और पाकिस्तान को युद्ध विराम के लिए मजबूर किया।"

साथियों बात अगर हम माननीय पीएम ने देररात्रि तक ऑपरेशन सिंदूर पर 1 घंटा 22 मिनट में सभी प्रश्नों का जवाब देने की करें तो,पहली बार इन विवरणों का खुलासा करते हुए,उन्होंने कहा,हमने पहले दिन से ही कहा था कि हमारी कार्रवाई कोई उग्र कार्रवाई नहीं है। दुनियाँ के किसी भी नेता ने हमसे ऑपरेशन सिंदूर रोकने के लिए नहीं कहा। 9 मई की रात को, अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने मुझसे बात करने की कोशिश की। उन्होंने एक घंटे तक कोशिश की, लेकिन मैं सुरक्षा बलों के साथ बैठक में व्यस्त था। जब मैंने उन्हें वापस बुलाया, तो उन्होंने मुझे बताया कि पाक एक बड़े हमले की योजना बना रहा है।मेरा जवाब था कि अगर पाक की यही मंशा है,तो उसे इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी उन्होंने जोर देकर कहा,अगर पाक हमला करता है, तो हम बड़े हमले से जवाब देंगे। मैंने कहा था, हम गोली का जवाब तोप के गोले से देंगे। 10 मई को हमने पाक की सैन्य ताकत को नष्ट कर दिया। यह हमारा जवाब और हमारा संकल्प था। यहां तक कि पाक भी अब समझता है कि भारत का हर जवाब पिछले जवाब से बड़ा है। वह जानता है कि अगर भविष्य में ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है, तो भारत किसी भी हद तक जा सकता है। मैं लोकतंत्र के इस मंदिर में दोहराना चाहता हूं:ऑपरेशन सिंदूर अभी भी जारी है। प्रधानमंत्री ने कहा कि 7 मई को पाक और पाक अधिकृत कश्मीर में आतंकी ठिकानों पर हमले के बाद, भारत ने स्पष्ट कर दिया कि उसका उद्देश्य पूरा हो गया है। जब पाकिस्तान ने आतंकवादियों का बचाव करने के लिए कदम उठाया, तभी भारतीय सशस्त्र बलों ने उसे ऐसा सबक सिखाया जिसे वह वर्षों तक याद रखेगा।

साथियों बात अगर हम माननीय पीएम व नेता प्रतिपक्ष के सवालों जवाबोंकी करें तो, नेता प्रतिपक्ष का आरोप - इन्होंने ट्रंप के कहने पर सरेंडर कर दिया, युग ने ऑपरेशन सिंदूर पर लोकसभा में विशेष चर्चा के दौरान अपनी बात रखी. इस दौरान उन्होंने नेता विपक्ष के आरोपों का एक-एक करके करारा जवाब दिया.मोदी ने सदन में एक घंटा 24 मिनट तक भाषण दिया, इस दौरान उन्होंने ट्रंप के कहने पर सरेंडर, संघर्षविराम, कमजोर विदेश नीति, राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी जैसे तमाम आरोपों का चुन-चुनकर जवाब दिया।मोदी का जवाब - जब हमने पाक को घुटनों पर ला दिया, तब पाक़ के डीजीएमओ ने फोन करके कहा- अब बस करो। दुनियाँ के किसी नेता ने हमसे ऑपरेशन रोकने के लिए नहीं कहा, अमेरिका के उपराष्ट्रपति ने ऑपरेशन के दौरान मुझसे बात करने की कोशिश की, मैं फोन नहीं उठा पाया. बाद में बात हुई तो उन्होंने बताया कि पाक बहुत बड़ा हमला करने वाला है. मेरा जवाब था- अगर पाक का ये इरादा है तो उसे बहुत महंगा पड़ेगा। आरोप - इन्होंने 22 मिनट बाद पाक को बता दिया कि हम लड़ना नहीं चाहते.पीएम का जवाब - हमने पाक को बता दिया 5 कर दिया।राहुल गांधी का दावा - इंडिया गठबंधन के सभी नेता सरकार के साथ खडे.रहे.पीएम मोदी का जवाब - दुनिया के देशों ने हमारा समर्थन किया, लेकिन कांग्रेस का समर्थन नहीं मिला, दुर्भाग्य है. हमले के तीन-चार दिन के बाद ही उछलने लगे और कहने लगे- कहां गई 56 इंच की छाती, इन्हें लगा कि हमने इन्हें गिरा दिया. राहुल गांधी - इनकी विदेश नीति फेल है, दुनिया के किसी देश ने पाकिस्तान की आलोचना नहीं की.पीएम मोदी - दुनिया के किसी देश ने हमें अपनी सुरक्षा में कार्रवाई करने से रोका नहीं है.राहुल गांधी - मुनीर ट्रंप के साथ लंच कर रहा है, अब ये न्यू नॉर्मल है.पीएम मोदी - अब (पाकिस्तान) भारत पर हमला करेगा तो घुस के मारेंगे, ये है न्यू नॉर्मल।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि संसदमें ऑपरेशन सिंदूर पर शाब्दिक महासंग्राम- पीएम नरेन्द्र मोदी बनाम नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी-ट्रंप के नाम की भी गूंज ऑपरेशन सिंदूर पर बहस संसद से लाइव- भारत सहित पूरी दुनियाँ ने देखी- ट्रंप का 29 बार का बयान व पाक़ डीजीएमओ के सीजफायर निवेदन पर युद्ध विराम तर्क पर क़्या देश संतुष्ट हुआ ?ऑपरेशन सिंदूर पर 32 घंटे की बहस में, पूरी दुनियाँ में घूमें सभी पार्टियों के 7 डेलिगेशन व ट्रंप द्वारा सीजफायर करवाने के 29 बार बयान पर जवाब/खंडन नहीं आया जो रेखांकित करने वाली बात है

नॉरटोन मोटरसाइकिल का धमाकेदार टीजर जारी, भारत में 4 नवंबर को होगी लॉन्च

परिवहन विशेष न्यूज

ब्रिटिश मोटरसाइकिल निर्माता Norton जल्द ही भारतीय बाजार में प्रवेश करने वाली है। कंपनी ने अपनी आगामी मोटरसाइकिल का टीजर जारी किया है जिसे 4 नवंबर 2025 को EICMA शो में पेश किया जाएगा। TVS के साथ साझेदारी में नॉर्टन भारत आ रही है TVS ने 2020 में नॉर्टन का अधिग्रहण किया था। कंपनी 2027 तक 6 नए ग्लोबल मॉडल लॉन्च करेगी।

नई दिल्ली। ब्रिटिश मोटरसाइकिल निर्माता कंपनी Norton भारतीय बाजार में जल्द एंट्री करने वाली है। हाल ही में कंपनी ने अपनी अपकमिंग मोटरसाइकिल का टीजर जारी किया है, जिससे अंदाजा लगाया जा रहा है कि आने वाले महीनों में भारतीय बाइक मार्केट में हलचल मचाने वाली है। इस नई मोटरसाइकिल को 4 नवंबर 2025 को EICMA शो में पेश किया जाएगा।

TVS के साथ पार्टनरशिप में भारत में एंट्री

भारतीय बाजार में Norton अकेले नहीं आ रही है। कंपनी ने अपनी भारतीय गतिविधियों के लिए TVS मोटर कंपनी से पार्टनरशिप की है। TVS ने साल 2020 में 153 करोड़ रुपये Norton को खरीदा था और तब से अब तक इसमें 1,000 करोड़ रुपये से ज्यादा का निवेश किया जा चुका है। इस निवेश का उद्देश्य R&D, प्रोडक्ट डेवलपमेंट और यूके के Solihull में नई मैन्युफैक्चरिंग यूनिट की स्थापना, जहां सालाना 8,000 मोटरसाइकिलें बनाई जा सकेंगी।

नई बाइक का टीजर

Norton ने अपनी मोटरसाइकिल का टीजर जारी किया है, इसमें बाइक की ज्यादा डिटेल्स नहीं दिखाई गई है। इस टीजर में केवल शार्प और स्पोर्टी टेललाइट को दिखाया गया है, जो इसके आक्रामक लुक की ओर इशारा करती है। कंपनी भारत में 400cc-450cc और 650cc सेगमेंट की बाइक लॉन्च करने वाली है। अभी तक यह साफ नहीं हुआ है कि ये सभी मोटरसाइकिल सिंगल-सिलेंडर या ट्विन-सिलेंडर की होंगी।

Norton इस नई बाइक को एकदम नए प्लेटफॉर्म पर तैयार कर रही है। इसका मतलब है कि आने वाले समय में इसी प्लेटफॉर्म पर और भी कई नए मॉडल्स पेश किए जा सकते हैं। रिपोर्ट्स की मानें तो TVS और Norton साथ मिलकर 300cc की बाइक पर भी काम कर रहे हैं, जो कि भारत में Royal Enfield और Triumph को कड़ी टक्कर देगी।

2027 तक 6 नए मॉडल्स होंगे लॉन्च

TVS और Norton मिलकर 2027 तक 6 नए ग्लोबल मॉडल्स लॉन्च करेगी, जो प्रीमियम और परफॉर्मेंस से भरपूर होंगी। कंपनी इन बाइक के डिजाइन, डायनेमिक और डिटेल्स पर फोकस करते हुए डेवलप करेगी।

एप्रीला ने भारत में लॉन्च किए दो नए स्कूटर, प्रीमियम फीचर्स और दमदार इंजन

अप्रिलिया इंडिया ने भारत में Aprilia SR 125 hp.e और Aprilia SR 175 hp.e स्कूटर लॉन्च किए हैं। SR 175 में बड़ा इंजन है और दोनों स्कूटर अपडेटेड कंसोल नए रंग और आधुनिक फीचर्स के साथ आते हैं। SR 125 hp.e में 124.45 cc का इंजन है जबकि SR 175 hp.e में 174.7cc का इंजन है। दोनों में कनेक्टिविटी फीचर्स और TFT इंस्ट्रूमेंट कंसोल है।

नई दिल्ली। अप्रिलिया इंडिया ने भारत में अपने दो नए स्कूटर Aprilia SR 125 hp.e और Aprilia SR 175 hp.e को लॉन्च किया है। दोनों ही स्कूटर को कई बेहतरीन फीचर्स के साथ लॉन्च किया गया है। SR 175 में बड़े इंजन के अलावा, दोनों स्कूटरों को अपडेटेड कंसोल, नई कलर स्कीम और कई आधुनिक फीचर्स के साथ भारत में लेकर आया गया है। आइए विस्तार में जानते हैं कि अप्रिलिया की इन दोनों स्कूटर को किन फीचर्स के साथ लेकर आया गया है।

भारत में Aprilia SR 125 hp.e को 1,21,480 रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में लॉन्च किया गया है। इसका डिजाइन काफी हद तक रेगुलर Aprilia SR 125 जैसा ही है, लेकिन बॉडी पैनल्स पर हल्के नए ग्राफिक्स दिए गए हैं। इसे तीन नए कलर ऑप्शन मैट ब्लैक, ग्लॉसी माज़्दा ग्रे + मैट ब्लैक, और ग्लॉसी रेड + मैट ब्लैक में लेकर आया गया है।

इसमें 124.45 cc एयर-कूल्ड, सिंगल-सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 10.60 PS की पावर और 10.4 Nm का टॉर्क जनरेट करता है।

इसमें 5-इंच का TFT इंस्ट्रूमेंट कंसोल दिया गया है, जो ब्लूटूथ कनेक्टिविटी के साथ आता है। इसमें कॉल और SMS अलर्ट, म्यूजिक कंट्रोल, टर्न-बाय-टर्न नेविगेशन और राइड स्टैट्स जैसे फीचर्स दिए गए हैं। इसके साथ ही ऑल-LED लाइटिंग सेटअप और CBS (कंबाइंड ब्रेकिंग सिस्टम) के साथ फ्रंट डिस्क ब्रेक स्टैंडर्ड तौर पर दिया जा रहा है।

भारतीय बाजार में Aprilia SR 125 hp.e का मुकाबला TVS NTorq 125 और Suzuki Avenis 125 से देखने के लिए मिलेगा।

यह बिल्कुल ही नया मॉडल है, लेकिन यह स्कूटर काफी हद तक Aprilia SR 160 जैसा ही दिखाता है। इसके डिजाइन में हल्के बदलाव किए गए हैं। इसे दो कलर ऑप्शन में लेकर आया गया है, जो मैट प्रिजमैटिक डार्क और ग्लॉसी टेक व्हाइट है।

Aprilia SR 175 hp.e में 174.7cc का एयर-कूल्ड, सिंगल-सिलेंडर इंजन का इस्तेमाल किया गया है, जो 13.26 PS की पावर और 14.14 Nm का टॉर्क जेनरेट करता है।

इस स्कूटर में 5-इंच का TFT इंस्ट्रूमेंट कंसोल और कनेक्टिविटी फीचर्स दिए गए हैं। इसमें प्रीलोड-एडजस्टेबल रियर मोनोशॉक दिया गया है। इसमें सिंगल-चैनल ABS के साथ फ्रंट में डिस्क ब्रेक और रियर में ड्रम ब्रेक दिया गया है।

अर्टिगा को टक्कर देने वाली टोयोटा रुमिओन की कीमत बढ़ी, पावरफुल इंजन और प्रीमियम फीचर्स से है लैस

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने मारुति सुजुकी अर्टिगा को टक्कर देने वाली Toyota Rumion की कीमतों में 12500 रुपये की बढ़ोतरी की है। अब इसकी शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 10.66 लाख रुपये है। रुमियन अर्टिगा का ही रीबैज वर्जन है और यह तीन वेरिएंट में उपलब्ध है। इसमें 1.5-लीटर का पेट्रोल इंजन है जो 102hp की पावर देता है और CNG वेरिएंट 87hp की पावर देता है।

नई दिल्ली। Maruti Suzuki Ertiga को टक्कर देने के लिए टोयोटा किर्लोस्कर मोटर की तरफ से भारत लाई गई Toyota Rumion की कीमतों को बढ़ा दिया गया है। इसे कई बेहतरीन फीचर्स के साथ भारत में पेश किया जाता है। इसके साथ ही यह पावरफुल इंजन और लग्जरी इंटीरियर के साथ आती है। आइए जानते हैं कि टोयोटा रुमियन की कीमतों में कितनी बढ़ोतरी हुई है और यह किन फीचर्स के साथ भारत में पेश की जाती है?

कितनी बढ़ी कीमत?

Toyota Rumion के सभी वेरिएंट्स पर 12,500 रुपये की समान रूप से कीमत में बढ़ोतरी की गई है। इसके दाम में बढ़ोतरी के बाद इसकी शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 10.66 लाख रुपये हो गई है, जबकि टॉप वेरिएंट की एक्स-शोरूम कीमत 13.95 लाख रुपये तक पहुंच गई है।

Rumion और Ertiga का कनेक्शन

Toyota Rumion, असल में Maruti Suzuki Ertiga का एक रीबैज वर्जन है। जिस तरह से बलेनो की ग्लैंजा, फ्रॉन्क्स की टैइसोर और हाइराइडर की ग्रैंड विटारा है। दोनों ही ऐसे कई मॉडल को शेकर करती है, जिसका हिस्सा Rumion भी है। Rumion को तीन वेरिएंट में पेश किया जाता है, जो S, G और V। वहीं, अर्टिगा को कई वेरिएंट में ऑफर किया जाता है।

Toyota Rumion का डिजाइन

Rumion और Ertiga एक ही प्लेटफॉर्म पर बेस्ड है, लेकिन Rumion को Toyota ने अपने स्टाइलिंग एलिमेंट्स से थोड़ा अलग रूप दिया है। इसमें नया फ्रंट ग्रिल, प्रोजेक्टर हेडलाइट्स के साथ दोबारा डिजाइन किए गए बंपर्स, नए स्टाइल वाले अलॉय व्हील्स, पीछे की तरफ भी हल्के बदलाव किए गए हैं। इसमें 7-सीटर लेआउट में पेश किया गया है, जो इसे एक फैमिली-फ्रेंडली MPV बनाता है।

इंटीरियर और फीचर्स

Toyota Rumion के अंदर एक ड्यूल-टोन ब्लैक और बेज डैशबोर्ड दिया गया है, जिस पर फॉक्स वुड फिनिश दी गई है। इसमें क्रूज़ कंट्रोल, ऑटोमैटिक क्लाइमेट कंट्रोल, 7-इंच टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम जो वायरलेस Apple CarPlay और Android Auto को सपोर्ट करता है। इसके साथ ही इसे और भी कई बेहतरीन फीचर्स के साथ पेश किया जाता है।

इंजन ऑप्शन और माइलेज

Toyota Rumion में 1.5-लीटर पेट्रोल इंजन का इस्तेमाल किया जाता है, जो 102hp की पावर और 138Nm का टॉर्क जनरेट करता है। यह इंजन 5-स्पीड मैनुअल और ऑटोमैटिक टॉर्क कन्वर्टर ट्रांसमिशन के साथ आता है। इसे CNG वर्जन में भी पेश किया जाता है। इसका CNG वेरिएंट 87hp की पावर और 121Nm का टॉर्क जनरेट करता है। इसे केवल मैनुअल ट्रांसमिशन के साथ पेश किया जाता है। कंपनी की तरफ से दावा किया जाता है कि इसका पेट्रोल वेरिएंट 20.5 किमी/लीटर और CNG वेरिएंट 26.11 किमी/किग्रा तक का माइलेज देता है।

इलेक्ट्रिक स्पोर्ट्स कार MG Cyberster भारत में 25 जुलाई को होगी लॉन्च, सिंगल चार्ज में देगी 580km की रेंज

परिवहन विशेष न्यूज

जल्द ही भारत में MG Cyberster इलेक्ट्रिक स्पोर्ट्स कार लॉन्च करेगी जिसे ऑटो एक्सपो 2025 में दिखाया गया था। इसकी कीमत 25 जुलाई को बताई जाएगी। कंपनी का दावा है कि यह दुनिया की सबसे तेज इलेक्ट्रिक कार है जो 3.2 सेकंड में 0 से 100 km/h की स्पीड पकड़ सकती है। इसमें 77 kWh की बैटरी है जो 580km तक की रेंज देती है।

नई दिल्ली। भारत में जल्द ही अपनी इलेक्ट्रिक स्पोर्ट्स कार, MG Cyberster को लॉन्च करने वाली है। इसे भारत में आटो एक्सपो 2025 में पेश किया गया है। अब इसकी कीमत का खुलासा 25 जुलाई को किया जाएगा। कंपनी का दावा है कि उनकी यह इलेक्ट्रिक कार दुनिया की सबसे तेज इलेक्ट्रिक कार है। भारत में इसकी बिक्री सिलेक्ट डीलरशिप के जरिए की जाएगी। इस डीलरशिप के जरिए ही हाल ही में लॉन्च हुई MG M9 की भी बिक्री की जाएगी। आइए जानते हैं कि MG Cyberster किन खास फीचर्स के साथ आती है।

MG Cyberster का डिजाइन

इसे बेहद शानदार, एग्रेसिव और स्लिक डिजाइन दिया गया है। इसके आगे की तरफ स्लीक LED हेडलाइट्स दी गई है, जो इसके स्पोर्टी अपील को बढ़ाती है। फ्रंट बम्पर पर दी गई वेंट्स दिए गए हैं, जो बैटरी को ठंडा रखने में मदद करती हैं। कार में क्लासिक स्पोर्ट्स कार से इंस्पायर्ड सिजर डोर्स दिए गए हैं। पीछे की तरफ C-शेप्ड LED टेल लाइट्स, इंटरकनेक्टेड लाइटिंग और एरो-शेप इंडिकेटर्स दिए गए हैं, जो इसके स्पोर्टी थीम को पूरा करते हैं।

MG Cyberster का इंटीरियर

इसमें मल्टीपल कंट्रोल्स और फ्यूचरिस्टिक टच के साथ फ्लैट-बॉटम स्टीयरिंग व्हील दिया गया है। इसके साथ ही ड्राइवर को पूरी तरह इमर्सिव एक्सपीरियंस देने के लिए तीन डिजिटल डिस्प्ले, रूफ मैकेनिज़्म, ड्राइव सेलेक्टर और HVAC कंट्रोल के लिए सेंटर कंसोल में एक्स्ट्रा स्क्रीन और फिजिकल बटन, ड्राइवर और पैसेंजर एरिया को अलग रखने के लिए वाटरफॉल-इंस्पायर्ड ग्रैब हैंडल दिया गया है।

बैटरी पैक और रेंज

MG Cyberster में 77 kWh की बैटरी दी गई है, जो फुल चार्ज होने के बाद 580km तक की रेंज देगी। ड्यूल मोटर ऑल-व्हील ड्राइव (AWD) के साथ आएगी। इसमें दो इलेक्ट्रिक मोटर्स का इस्तेमाल किया गया है, जो 510hp की पावर और 725Nm का टॉर्क जनरेट करते हैं। इसके हर एक्सल पर ऑयल-कूलिंग से हाई परफॉर्मेंस और एफिशिएंसी के लिए ऑयल-कूल्ड मोटर लगाया गया है। यह इलेक्ट्रिक कार महज 3.2 सेकंड में 0 से 100 km/h तक की स्पीड पकड़ सकती है।

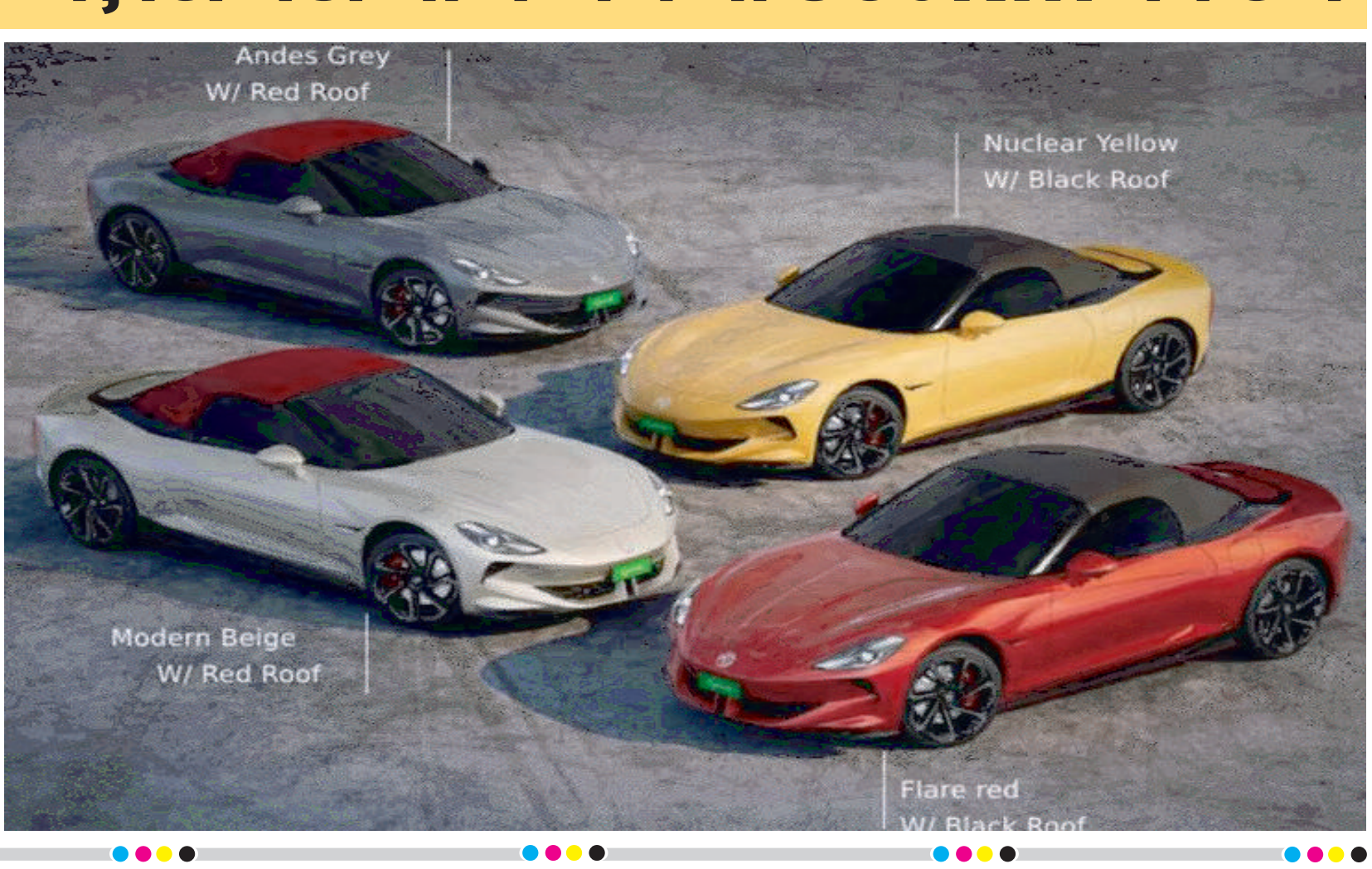

सामान्य सेवा केंद्र: ग्रामीण भारत में डिजिटल क्रांति लेना

ग्रामीण भारत के लिए डिजिटल क्रांति)

विजय गर्ग

डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की आधारशिला के रूप में शुरू की गई, सीएससी दुनिया के सबसे बड़े ग्रामीण डिजिटल सेवा नेटवर्क में विकसित हुई है। लाखों उद्यमियों को सशक्त बनाना - विशेष रूप से महिलाएं - वे अब समावेशी विकास, कौशल और जमीनी स्तर पर डिजिटल वितरण के लिए एक स्केलेबल, टिकाऊ मॉडल का प्रतिनिधित्व करते हैं

भारत डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर को सार्वजनिक भलाई के रूप में बनाने और बढ़ावा देने के लिए खबरों में रहा है। यह उन कुछ देशों में से एक है जिन्होंने दुनिया के अन्य देशों से जुड़े आवेदन के साथ इस तरह के डिजिटल बुनियादी ढांचे की पेशकश की है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि इस तरह के लाभ गरीब या निम्न स्तर के डिजिटल पैठ वाले देशों के नागरिकों तक पहुंचें। इनमें से कुछ विघटनकारी हैं, जैसे UPI, डिजिटल लॉकर, आधार, कोविन आदि।

हालांकि, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में स्थायी सामाजिक उद्यम के एक अद्वितीय मॉडल के निर्माण के लिए डिजिटल पहल / कार्यक्रम का उपयोग करने का एक और पक्ष है। कॉमन सर्विस सेंटर (सीएससी) का सरकारी कार्यक्रम स्किलिंग के इस ढांचे पर बनाया गया है और उद्यमिता विकास के लिए प्रोत्साहन के रूप में सेवा वितरण का उपयोग कर रहा है। लगभग छह लाख से अधिक सीएससी में से एक लाख से अधिक महिलाओं द्वारा संचालित और प्रबंधित किए जाते हैं। इतने बड़े पैमाने पर और भौगोलिक रूप से देश भर में समान रूप से फैले महिला-नेतृत्व वाले आईसीटी-सक्षम उद्यम अद्वितीय हैं और शायद दुनिया में अपनी तरह के पहले हैं। एक स्थानीय उद्यमी (सीएससी) के माध्यम से डिजिटल सेवा वितरण मॉडल नागरिकों को भारत में निवास स्थान के करीब जी 2 सी और बी 2 सी के अधिकांश हिस्से तक पहुंचने में सक्षम बनाता है, आज दुनिया का सबसे बड़ा नेटवर्क है।

वर्ष 2006 में शुरू हुई, सीएससी योजना के लिए वास्तविक गति 2014 के बाद प्रदान की गई जब सीएससी 'डिजिटल इंडिया' कार्यक्रम का अभिन्न हिस्सा बन गया और उसे राजनीतिक स्तर पर वांछित समर्थन मिला। सरकार ने कार्यक्रम को एक योजना के बजाय एक ₹आंदोलन₹ बनाने के लिए कदम उठाए और समाज की सेवा करने और स्थायी उद्यमों के निर्माण के लिए उद्यमियों की नई नस्ल के बीच जुनून और प्रतिबद्धता उत्पन्न की। वर्ष 2014 से पहले केवल 68,000 कार्यात्मक सीएससी थे जो मार्च 2025 तक बढ़कर छह लाख से अधिक हो गए हैं।

गार्नरिंग प्राइवेट कैपिटल

सरकार ने ऐसे उद्यमों को शुरू करने के लिए बुनियादी ढांचे के लिए आवश्यक कोई पूंजी सहायता प्रदान नहीं की, लेकिन नागरिकों को विभिन्न सेवाएं देने के लिए नेटवर्क का उपयोग किया। प्रत्येक सीएससी के लिए औसतन 2 लाख रुपये के पूंजी निवेश के साथ, इस योजना में कुल निजी निवेश 12,000 करोड़ रुपये का रहा है।

सरकारी सहायता बड़ी संख्या में उद्यमियों से निजी पूंजी निवेश को उत्प्रेरित करने के लिए सक्षम करती है, वह भी मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, कृषि और संबद्ध क्षेत्रों जैसे अन्य क्षेत्रों में समान पहल करने और निवेश के लिए निजी पूंजी जुटाने के लिए अनुकरणीय और एक सबक / मामला अध्ययन है। बड़ी सार्वजनिक भलाई के लिए।

सीएससी के माध्यम से सरकारी सेवा वितरण लंबे समय से विकसित हुआ है। आज भी कुछ राज्य सीएससी नेटवर्क के माध्यम से जी2सी देने में असमर्थ या अनिच्छुक हैं। ऐसे राज्यों में या तो सेवा वितरण ढांचा अभी भी अविकसित है या अन्य चैनलों के माध्यम से वितरित किया जा रहा है। अच्छी बात यह है कि भारत सरकार के स्तर पर, लगभग सभी मंत्रालय / विभाग नागरिक को सेवाएं देने के लिए सीएससी नेटवर्क का उपयोग कर रहे हैं।

आधार पंजीकरण और अपडेट

प्रारंभ में उद्यमी के लिए स्थिरता और उत्साह नागरिकों के लिए आधार पंजीकरण को सक्षम करके था। सीएससी के माध्यम से आधार पंजीकरण के 20 करोड़ से अधिक किए गए, जिससे समुदाय में सीएससी उद्यमियों की विश्वसनीयता बढ़ाने में मदद मिली और साथ ही उनकी आय में काफी वृद्धि हुई। किसी समय लगभग 40,000 सीएससी आधार पंजीकरण कर रहे थे। उन्होंने स्कूल जाने वाले बच्चों और नए जन्म के पंजीकरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जो सरकार अपने अन्य चैनलों के माध्यम से प्राप्त करने में असमर्थ थी।

इस सेवा को रोक दिया गया था और परिणामस्वरूप सीएससी उद्यमी को व्यवसाय का बड़ा नुकसान हुआ था, इसके अलावा निवेश की गई पूंजी का उपयोग नहीं किया गया था (प्रत्येक आधार केंद्र को 3 लाख रुपये की पूंजी की आवश्यकता थी)। इसके बाद, चयनित सीएससी (बैंकिंग संवाददाता - बीसी के रूप में काम करने वालों) के माध्यम से केवल आधार अपडेशन की अनुमति दी गई। आधार का ठहराव पूरे सीएससी पारिस्थितिकी तंत्र के लिए एक बड़ा झटका था।

वित्तीय सेवाएं

सीएससी के लिए G2C केवल एक एनबलर था और एक स्थायी व्यवसाय मॉडल विकसित करने के लिए पर्याप्त संसाधन प्रदान नहीं करता था। सीएससी ने फिर बीसी और बी 2 सी के रूप में अन्य सेवाओं पर ध्यान केंद्रित करना शुरू कर दिया। सीएससी उद्यमी की आय बढ़ाने में बैंकिंग, बीमा और पेंशन सेवाओं ने काफी हद तक मदद की। न केवल सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक बल्कि एचडीएफसी जैसे बैंकों ने सीएससी के माध्यम से नागरिकों को वित्तीय सेवाओं के वितरण को बढ़ावा देने में समर्थन किया। एचडीएफसी एमडी ने यहां तक कि कई सीएससी का दौरा किया और अपने उत्पादों और सेवाओं को वितरित करने में सीएससी का समर्थन करने के लिए हर स्तर पर एक विशेष टीम स्थापित की (पीएसबी एमडी अपनी शाखाओं का दौरा भी नहीं करते हैं)।

न केवल सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक बल्कि एचडीएफसी जैसे बैंकों ने सीएससी के माध्यम से नागरिकों को वित्तीय सेवाओं के वितरण को बढ़ावा देने में समर्थन किया। एचडीएफसी एमडी ने यहां तक कि कई सीएससी का दौरा किया और अपने उत्पादों और सेवाओं को वितरित करने में सीएससी का समर्थन करने के लिए हर स्तर पर एक विशेष टीम स्थापित की (पीएसबी एमडी अपनी शाखाओं का दौरा भी नहीं करते हैं)। इसी तरह, बीमा सेवाओं के लिए एचडीएफसी एर्गो और इंडिया फर्स्ट सीएससी नेटवर्क का उपयोग करने वाले पहले कुछ थे। आईआरडीएआई, हालांकि, पहली बार सीएससी ने ब्रोकर के रूप में काम करने में सक्षम किया - सभी बीमा कंपनियों के उत्पाद वितरित करें - और उसी के लिए दिशानिर्देश तैयार किए। नागरिक अब बीमा पॉलिसियों के लिए प्रीमियम का भुगतान कर सकते हैं और सीएससी के माध्यम से जीवन और गैर-जीवन की नई नीतियों की खरीद कर सकते हैं। सीएससी के माध्यम से वित्तीय सेवाओं का वितरण एक गेम चेंजर बन गया क्योंकि बीसी संबंधित बैंक का एक बोर्ड लगा सकता है जिसने फुटफॉल्स को काफी बढ़ाया और राजस्व में वृद्धि की।

डिजिटल साक्षरता और शैक्षिक सेवाएं

पीएमजीडीआईऐसऐ की सरकारी योजना - सीएससी नेटवर्क के माध्यम से 6 करोड़ नागरिकों को प्रशिक्षित करने के लिए डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम ने सीएससी को एक डिजिटल नॉलेज हब में बदल दिया। सीएससी बुनियादी ढांचे पर सुधार कर सकता है-5-10 कंप्यूटर-और दीर्घकालिक सेवा वितरण के एक नए सरगम की पहचान-शैक्षिक सेवाओं पीएमजीडीआईऐसऐ ने सीएससी डिलीवरी फ्रेमवर्क को फिर से परिभाषित किया और ऐन आईपीएलआईटी, ऐनआईउऐस, , आईजीएनउयु, सिम्बायोसिस, आईआईटी मुंबई जैसे कई सेवा प्रदाताओं को सीएससी के माध्यम से नागरिक को अपने पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने में संबद्ध किया। सीएससी बाल विद्यालय का शुभारंभ - 3000 से अधिक - एक समान दिशा में एक और कदम है। शिक्षक के बिना स्कूल की अवधारणा - प्रौद्योगिकी का उपयोग करके एक सूत्रधार के माध्यम से शिक्षा को बढ़ावा देना - इन बाल विद्यालयों में प्रयास किया गया है। सीएससी उन बच्चों / नागरिकों का समर्थन कर सकता है जो पढ़ाई में कमजोर हैं / स्कूल या कॉलेज जाने में असमर्थ हैं या जाने की अनुमति नहीं है लेकिन अध्ययन करने की इच्छा रखते हैं। दूरस्थ प्रॉक्टरिंग परीक्षा पहली बार सीएससी के माध्यम से देश में पेश की गई थी और बड़ी संख्या में लड़कियों / महिलाओं को लाभान्वित किया गया था, जिन्हें परीक्षा केंद्र में जाने की अनुमति नहीं दी गई थी या नहीं, जो कई मामलों में उनके निवास से 100-200 किमी दूर थे। सीएससी के माध्यम से शैक्षिक सेवाओं ने मुख्य रूप से ग्रामीण भारत की लड़कियों और महिलाओं का समर्थन किया। यहां तक कि ओबीसी, एससी, एसटी और अल्पसंख्यक भी लाभान्वित हुए, जो डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षित और प्रमाणित संख्या में परिलक्षित होता है।

उत्पादों की डिलीवरी

सीएससी देश में डिजिटल और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने के लिए एक विश्वसनीय साधन बन गया है। इन्हें अब निजी कंपनियों द्वारा एक आसान और स्वीकार्य प्रारूप में देश भर में अपने उत्पादों को बढ़ावा देने / बेचने के लिए बड़े पैमाने पर उपयोग किया जा रहा है। टाटा, इफको, यूनीबिक, क्रॉम्प्टन, सिम्फनी आदि के रूप में बड़ी कंपनियां। उत्पादों को वितरित कर रहे हैं और इस गैर-पारंपरिक चैनल को काफी रोमांचक खोज रहे हैं। जो कंपनियां वितरण चैनल स्थापित नहीं कर सकती हैं और नए उत्पाद हैं, वे स्थापित खिलाड़ियों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए सीएससी चैनल का उपयोग कर सकती हैं। सीएससी वीएलई के लिए यह व्यवसाय की एक नई धारा है।

आगे क्या?

सीएससी सेवा शुल्क को स्थापना के बाद से संशोधित नहीं किया गया है और राज्य सरकार द्वारा तत्काल हस्तक्षेप की आवश्यकता है ताकि वीएलई को स्थापना और बुनियादी ढांचे को बनाए रखने में बढ़ी हुई लागत का सामना करने में सक्षम बनाया जा सके। आधार अपडेशन की अनुमति सभी सीएससी के माध्यम से दी जा सकती है - निश्चित रूप से आवश्यक नियामक पर्चे के साथ।

सीएससी ने भारत नेट चरण 1 की सक्रियता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनका उपयोग भारत नेट के अंतिम मील को बनाए रखने और प्रबंधित करने के लिए किया जा सकता है, जो सरकार, इंटरनेट प्रदाता (बीएसएनएल) और नागरिक के लिए एक जीत हो सकती है।सीएससी वीएलई अंतिम मील आईऐसपी के लिए 'केबल कनेक्शन प्रदाता' के रूप में काम कर सकता है। बड़ी कंपनियों का चयन करने के बजाय, जीपीउएन - पंचायत स्तर के उपकरणों के ऑप्टिकल फाइबर रखरखाव और रखरखाव के लिए स्थानीय सीएससी का चयन / संलग्न करना बेहतर है। चूंकि सीएससी गांव में इंटरनेट का पहला उपयोगकर्ता होगा, इसलिए वह इसकी उचित रखरखाव और रखरखाव सुनिश्चित करेगा। हम तब केवल 'अटमा निर्भय भारत' और 'ग्राम स्वराज' के सरकारी सपने को पूरा कर सकते हैं जिससे स्थानीय स्तर के कुशल संसाधन बन सकते हैं।

पीएमजीडीआईएसए के समान, नागरिकों को एआई का उपयोग करने और साइबर खतरों से खुद को बचाने में सक्षम बनाने का एक कार्यक्रम नागरिकों द्वारा उभरती तकनीक के उपयोग को बढ़ावा देने में सीएससी की भूमिका को और बढ़ा सकता है, विशेष रूप से ग्रामीण भारत में रहने वाले - वास्तव में डिजिटल रूप से समावेशी समाज।

सीएससी को 'डिजिटल नॉलेज हब' के रूप में भी बदला जा सकता है, डिजिटल विलेज के पहले के कार्यक्रम को फिर से देखा जा सकता है और सीएससी उद्यमियों को समग्र ग्राम समुदाय (बच्चे, वयस्क, महिलाओं और पुराने) सशक्तिकरण के लिए उपयोग किया जा सकता है और योजनाओं और कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से और कुशलता से वितरित करने में सरकार का समर्थन किया जा सकता है। यहां तक कि निजी क्षेत्र की कंपनियां, विशेष रूप से उभरती 'स्टार्ट-अप' भी आसानी से सुलभ आउटरीच के लिए नेटवर्क का उपयोग कर सकती हैं।

सीएससी उन्हें दूरस्थ और कठिन क्षेत्रों सहित देश भर में उत्पादों और सेवाओं को वितरित करने में सक्षम कर सकता है जो अन्यथा पारंपरिक वितरण चैनल के माध्यम से काफी बोझिल और महंगे हैं। प्रत्येक सीएससी औसतन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से चार व्यक्तियों को संलग्न करता है और अतिरिक्त सेवाओं के वितरण के माध्यम से जनशक्ति को बनाए रखने के लिए आगे समर्थित किया जा सकता है। विशेष रूप से ग्रामीण भारत में 2 मिलियन से अधिक व्यक्तियों को रोजगार देने वाला एक नेटवर्क डिजिटल इंडिया कार्यक्रम की सफलता की कहानी है और अर्थव्यवस्था के कृषि, सामाजिक और संबद्ध क्षेत्रों में समान जमीनी स्तर के संस्थानों को बढ़ावा देने के लिए एक मॉडल के रूप में आगे उपयोग किया जा सकता है। सीएससी में से प्रत्येक को एक ₹स्टार्ट-अप₹ के रूप में पंजीकृत और प्रचारित किया जा सकता है और निर्धारित नीति में प्रदान किए गए समान प्रोत्साहन प्रदान किया जा सकता है। हम युवाओं की अपेक्षाओं को पूरा करने और जमीनी स्तर पर टिकाऊ व्यवसाय बनाने के लिए विशिष्ट रूप से डिज़ाइन किए गए छह लाख 'स्टार्ट-अप' वाले पहले राष्ट्र हो सकते हैं।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

ऋतुचक्र में गड़बड़ी, संकट का संकेत

विजय गर्ग

जब से ऋतु चक्र बिगड़ा है, तब से बारिश भी अनिश्चित हो चुकी है। वर्षा ऋतु से पहले होने वाली अतिवृष्टि कई तरह के संकट पैदा करती रही है। बाढ़ इनमें से प्रमुख है। इस दौरान जनजीवन खतरे में पड़ जाता है। तब भयावह तबाही के दृश्य दिखते हैं। मानसून आने के बाद कहीं कम, तो कई ज्यादा बारिश शुरू हो रही है। मगर अत्यधिक वर्षा के कारण देश के कुछ राज्यों में ही नहीं, बल्कि अन्य देशों के कई प्रांतों में भी बाढ़ की स्थितियां देखने में आई हैं। मई के अंत से लेकर पूरे जून तक राजधानी दिल्ली सहित उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, बिहार और असम में अनिश्चित, अनियंत्रित तथा उथल-पुथल मचाने वाली वर्षा ने जनजीवन को संकट में डाल दिया था। वहीं जुलाई के पहले पखवाड़े में भी राजस्थान, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और पूर्वोत्तर राज्यों में अधिक वर्षा के कारण बाढ़ से ग्रस्त क्षेत्रों के लोगों 'का जीवन कष्टपूर्ण हो गया।

अप्रैल के बाद से अब तक देश में बादल फटने, बिजली गिरने तथा अतिवृष्टि के कारण आई बाढ़ से कई लोगों की मौत हो चुकी है। लाखों- करोड़ों रुपए की व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक संपत्तियां परिसंपत्तियां नष्ट हो चुकी हैं। मृतकों के के परिवार वालों के सामने अन्न-जल संकट के साथ- साथ आवास, आजीविका और समाजिक-आर्थिक असुरक्षा की समस्याएं भी पैदा हो गई हैं। वर्षा ऋतु बीतने तक उनका दैनिक जीवन बहुत कष्टकारी बना रहेगा। यह परिस्थिति प्राकृतिक प्रतिकूलता तथा जलवायु असंतुलन की पुनरावृत्ति के कारण गत तीस-चालीस वर्षों से हर वर्ष अधिक भयावह रूप से दिख रही है।

बाढ़ के बहते हुए पानी और विशाल क्षेत्र में ठहरे हुए कीचड़ गाद से युक्त पानी के कारण अकल्पनीय समस्याएं पैदा होती हैं। कई प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। रहन-सहन, भोजन, पानी और बिजली आपूर्ति, आजीविका, शिक्षा, काम-धंधे, नौकरी-व्यवसाय सब कुछ अस्त-व्यस्त हो जाता है। अतिवृष्टि तथा बाढ़ के बाद जल जनित समस्याओं का निदान कई महीनों बाद भी नहीं हो पाता। ऐसी समस्याएं बरसों बनी रहती हैं। तथा समस्याग्रस्त लोगों के जीवन को असुरक्षित कर देती हैं। भारत जैसे देश में जहां भू-क्षेत्र एवं जनसंख्या के । के आधार पर यूरोपीय देशों के बराबर अथवा उनसे भी विशाल 28 राज्य और आठ केंद्रशासित प्रदेश हैं तथा पूरे विश्व में जिस देश की जनसंख्या सबसे अधिक है, वहां अतिवृष्टि के कारण बाढ़ से सामान्य लोगों का जीवन किस सीमा तक प्रभावित होता होगा, इसका आभास बाढ़ से घिरे लोगों के साथ रह कर ही हो सकता है।

ऐसी परिस्थितियों से घिरे लोगों का जीवन असुरक्षित होता है। उत्तराखंड के एक जनपद मुख्यालय से कुछ दूर एक लघु उपनगर में निरंतर दो वर्षों तक अतिवृष्टि से उत्पन्न बाढ़ में फंसे असहाय लोगों को देश ने सुरक्षित होने की प्रार्थना करते उन्हें देखा है। ऐसी अतिवृष्टि ऐसी बाढ़ और ऐसी आपदा से प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित लोग अपने जीवट और हौसले के बूते ही जीवित रह पाते हैं जिनका आत्मविश्वास निर्बल होता है, वे घबरा जाते हैं।

असुरक्षित पर्यावास के उजड़ने बहने के कारण कई लोग मृत्यु के मुख में समा जाते हैं। जीवित लोग भी केवल अपने शरीर के साथ बचे होते हैं। उनका आवास, जीवनचर्या के लिए आवश्यक भौतिक वस्तुएं, सभी कुछ आपदा में नष्ट हो जाती । उनके लिए जीवन में प्रत्येक आवश्यकता, सुविधा तथा वस्तु को पुनः क्रय कर संग्रहीत करना अत्यंत कठिन हो जाता है। शासन, समाज और सहायता प्रदान करने वाले स्वयंसेवी संगठनों तथा संबंधियों द्वारा सहायता - धनराशि एवं अन्य सुविधाएं तत्काल नहीं मिल पातीं। इन्हें प्राप्त करने के लिए भी पीड़ित व्यक्तियों को काफी संघर्ष करना पड़ता है। इन परिस्थितियों में जब पीड़ितों का जीवन चारों ओर से असुरक्षित महसूस होता है, तो वे कई बार अवसादग्रस्त हो जाते हैं। वे निर्बल हो जाते हैं। प्राकृतिक आपदाओं के देखे भोगे गए संकट का प्रतिघात तथा आपदा से निकलने के बाद जीवन जीने की असुरक्षा और संघर्ष में खपे दिनों का दुख इतना गहन होता है कि पीड़ित व्यक्ति जीवनभर आत्मविश्वास अर्जित नहीं कर पाता। वास्तव में जलजनित आपदाओं का भौतिक तथा मानसिक आघात वही अनुभव कर सकता है, जिसने इन्हें प्रत्यक्ष देखा और भोगा हो ।

अतिवृष्टि से उपजे गहरे संकट का प्रभाव इतना अधिक होता है मनुष्य प्रकृति के आगे लाचार हो जाता है। जलजले में हर कोना और हर जगह डूब जाती है। आपदा राहत दलों के सामने भी एक बड़ी चुनौती होती है। ऐसा कई बार होता है कि राहत दल संकट से घिरे लोगों तक पहुंच ही नहीं पाता। कई बार तो पहुंच पाना भी नामुमकिन होता है। आपदा से घिरे लोगों के अनुभव बताते हैं कि किसी भी राहत प्रदान करने वाले दल के लिए अतिवृष्टि के समय बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में बड़ी चुनौतियां होती हैं। राहत कर्मी अपने सभी संभव उपायों एवं राहत प्रदान करने वाले कार्य संकट से पूर्व या संकट समाप्त होने के बाद ही संपन्न कर सकते हैं। सावन माह से पहले देश के विभिन्न राज्यों में एक ही स्थान पर अत्यधिक बारिश होने से जो गंभीर परिस्थितियां बनीं, उसने प्राकृतिक असंतुलन को विकृत ढंग से प्रकट किया।

कुछ दशकों से ऋतु विकृतियों में वृद्धि हुई है। ऐसी पुनरावृत्ति के कारण में विगत चालीस-पचास वर्षों में हजारों लोगों की मौत हुई है। लोगों की संपत्तियां परिसंपत्तियां नष्ट हुई हैं। जीवन के हर पक्ष पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा। देश और समाज की प्राकृतिक तथा सामाजिक, सभी प्रकार की समस्याओं के निराकरण का दायित्व प्रायः शासन का होता है। वह इसलिए उत्तरदायी होता है, क्योंकि उसके पास व्यक्ति अथवा व्यक्तियों अधिक साधन होते हैं और समस्याओं के समाधान के लिए उन्हें नियोजित किया जा सकता है आवश्यकता होने पर शासन व्यक्तियों तथा नागरिकों के जीवन की रक्षा के लिए अपने हर संभव साधन का उपयोग करता है, लेकिन शासन, समाज और नागरिकों को यह विचार करना होगा कि प्राकृतिक आपदाओं के सामने शासकीय साधन-संसाधन भी निरुपाय सिद्ध हुए हैं।

ऐसी । आपदाओं से सुरक्षित रहने के लिए विश्व स्तर पर प्राकृतिक संरक्षण, जलवायु संतुलन तथा ऋतु अनुकूलन की दिशा में अपेक्षित कार्य किए जाने की आवश्यकता है। इसके लिए विज्ञान, प्रगति, आधुनिकता तथा इन तीनों में सामंजस्य तो होना ही चाहिए, वहीं विलासी गतिविधियों पर विराम लगाने के उपाय करने होंगे। ऐसा किए बिना किसी भी देश में प्राकृतिक संतुलन स्थापित नहीं हो सकता। दुनिया के सभी देशों को प्राकृतिक संतुलन के लिए निर्धारित उपाय करने होंगे। यह कार्य निष्ठा से संपन्न करना होगा। नहीं तो जलवायु और भौगोलिक संतुलन नहीं हो सकेगा। इस परिस्थिति के परिणाम गंभीर होंगे। इसकी कीमत अंततः मनुष्यों को ही चुकानी होगी। ऐसे में आधुनिक विश्व की प्रगति - यात्रा कभी कोरोना महामारी, कभी पारस्परिक युद्धों, कभी जलवायु संकट के कारण थम सी जाती है। प्राकृतिक आपदाओं के साथ ही मनुष्यों के बीच बढ़ती हिंसा भी एक बड़ी आपदा है।

सेवानिवृत्त प्रिंसिपल मलोट पंजाब

अंतहीन दौड़ : विजय गर्ग

कभी-कभी जिंदगी एक अजीब शय लगती है। जब वक्त अच्छा चल रहा हो, आनंद अपने आसपास महसूस होता हो, तब सब कुछ आसान और सहूलियत से भरा लगता है। वैसी चीज से दिल ऊबता हुआ लगता है, जो शायद कभी काफी मुश्किलों को पार कर हासिल की गई होगी। कितनी ही कोशिशों और मिन्नतों से हासिल की गई चीजों और उपलब्धियों तक से हमारा दिल आखिर भर जाता है, मानो कोई मायने ही न हो उसके । वे सभी चीजें और कई बार लोग भी इनमें शामिल हो जाते हैं, जिन्हें हासिल करने के लिए कभी दिन-रात एक कर दिया गया होगा, जी-तोड़ मेहनत की गई होगी, कितना भरोसा दिया गया होगा। मगर यह समझना मुश्किल है कि क्यों और कैसे वही फितरत हावी हो जाती है, जिसमें सिर्फ हासिल करने की भूख होती है। वैसे समय में मन छटपटाता है दूसरों को एक होड़ में शामिल देखकर इस ईर्ष्या से कि दूसरों की तरह सब कुछ पाने से वंचित न रह जाएं ।

जिंदगी का फलसफा इस सिद्धांत पर चलता है कि 'सब कुछ चाहिए'। जिस तरह किसी बच्चे को या तो सब कुछ चाहिए या फिर कुछ भी नहीं। भले ही वह किसी भी शर्त पर मिले। मगर जीवन बहुत जटिल है। कई बार सिर्फ एक झटका लगता है, एक ढलान आती है या सिर्फ एक टक्कर लगती है और फिर जिंदगी पूरी बदल-सी जाती है। बल्कि जिंदगी के पूरे मायने ही बदल जाते हैं। जिन चीजों की हमने कभी कद्र तक न की हो, वही जिंदगी की सबसे अहम चीज नजर आने लगती है। जिन लोगों की हमने कभी उपेक्षा की थी, उन्हें दुत्कारा था, बाद में कभी उनकी फिक्र हमें लगी रहती है। हम जिसे लेकर फिक्रमंद होते हैं, उसे कभी खरोंच भी लग जाए, तो दिल रो पड़ता है। मगर वक्त बदलता है और उसी के प्रति हमारे भीतर कोई भावना नहीं बचती । अब तूफानों में भी टस से मस भर होने की गुजाइश रह नहीं जाती है। यहां तक कि कोई रियायत भी नहीं दी जाती है।

जो जीवन सहज चल रहा होता है, उसे जीने के लिए कभी खुद को अलग से मजबूत बनाना पड़ता है। जो कभी सपने में भी नहीं सोचा गया हो, या जो बेमानी बन चुके हों, उन चीजों से भी लगाव और मोहब्बत महसूस हो सकती है। कहीं पर बेपरवाह घूमते हुए सुकून - सा महसूस होता है। जबकि कभी भागते से फिर रहे होते थे, जैसे हर पल हर दम पूरी जिंदगी । छोटे बच्चों की हंसी में भी दिल भर - सा जाता है, जैसे कभी महसूस नहीं किया हो किसी को हंसते या मुस्कुराते हुए। दौर में फूलों के सभी रंग नए से लगते हैं, जैसे अभी ही पहली

बार इनमें रंग भरा गया हो। बारिश की बूंदें भी एक नया - सा अहसास दिलाती हैं। एक नई ताजगी महसूस होती है। कभी किसी की सराही हुई एक बात भी इतना सुकून दे जाती है जो कभी भर-भर कर की गई तारीफों से भी हासिल नहीं होता हो । कभी किसी अपने के साथ बैठ कर पी हुई एक कप चाय से इतनी तसल्ली मिल जाती है जो कभी शोरगुल या संगीत से भरी महफिलों में भी न मिली हो। जाने या अनजाने चेहरों को देखकर उन्हें पढ़ने का मन करता है, जैसे बिना सुने ही सब जान लेने की कला मिल गई हो। जबकि पूरी बहस होने पर भी किसी की कोई बात समझ नहीं आती थी ।

इंसान की फितरत ही इस कदर उसे एक ऐसे अंधकार में डुबो देती है, जहां के पार उसे कुछ नजर नहीं आता- न अच्छा, न बुरा, न अपने, न पराए । सब बेमानी और बेमतलब - सा लगता है। कई बार यह मन करने लगता है कि अच्छा हो, किसी दिन हर कोई सोचे कि क्या खोया क्या पाया इस जग में। सच यह है कि अपनों की तलाश में हम कई बार अपनों को खो देते है। जिसे बेतहाशा चाहते हैं, उसे कभी अपना अहसास नहीं जता पाते, कभी अपने मन की बात उसे नहीं कह पाते । कभी न कभी इस बारे में सबको सोचना पड़ेगा, अपनी उस सोच पर लगाम लगानी होगी, जो बेतहाशा भाग रही है एक अंतहीन दौड़ में, जिसमें समय रहते इंसान थोड़ा भी जाग जाए, तो बाद के पछतावे से थोड़ी मुक्ति मिल सकती है। भलाई इसी में है कि समय रहते होश में आ जाया जाए, वरना कई बार पछतावा करने का भी समय नहीं रहता है । लोग जिनको दुख देते हैं, बस इतना करें कि कभी खुद पर उसी को आजमा कर देखें, तो कुछ सीख मिल सकती है । जिन्हें गलत बोला जाता है, अगर कभी खुद अपने आप पर उन शब्दों को महसूस करके देख लिया जाए, तो उसके असर का अंदाजा लगाया जा सकता है।

जिंदगी में प्यार का मतलब सिर्फ किसी को ऐशो-आराम देना भर ही नहीं है, उसे तहेदिल से अपनाना असली प्रेम होता है। अफसोस यह है कि आमतौर पर इसका अहसास किसी के जाने के बाद तब होता है, जब उसकी याद दिन-रात कचोटने लगती है। समय रहते किसी के जीते-जागते, होशोहवास में उसे अहसास कराना कि तुम कितने अहम हो, यह जरूरी है। दुख सबको साझा नहीं किया जा सकता और न हर दुख सबको बताया जा सकता है, लेकिन सचमुच किए गए प्रेम को अभिव्यक्त किया जा सकता है। अगर हर कोई अपने अंदर झांके तो किरदार भले बदल जाते हैं, पर कहानी आमतौर पर एक-सी रहती है। इसलिए जरूरत इस बात की है कि अपने किरदार को इतना मजबूत बनाया जाए कि पर्दा गिरने के बाद भी तालियों की गड़गड़ाहट कम न हो ।

संत नहीं, समाज-संस्कर्ता तुलसी

सचिन त्रिपाठी

गोस्वामी तुलसीदास का जीवन केवल एक संत कवि का जीवन नहीं था. वह एक समाज-संशोधक, एक आध्यात्मिक योद्धा और एक सांस्कृतिक क्रांतिकारी की जीवन यात्रा थी। तुलसीदास का युग वह समय था जब भारत राजनीतिक अस्थिरता, धार्मिक विघटन, सामाजिक पतन और सांस्कृतिक संकोच से गुजर रहा था। मुगल सत्ता का उदय हो चुका था, सनातन परंपराएं टूट रही थीं और जनता भय, भ्रम और अंधकार के साये में थी। ऐसे समय में तुलसीदास का जीवन और उनकी वाणी, एक तीर्थ की तरह थी जो निराश समाज को संबल, दिशा और आश्रय प्रदान करती थी।

आज जब समाज फिर से मूल्यों के विघटन, नैतिक अवसाद और भौतिक भटकाव की ओर बढ़ रहा है, तब तुलसीदास का जीवन और चिंतन हमें एक बार फिर उसी आत्मा से जोड़ने का प्रयास करता है जिससे हम कटते जा रहे हैं भारतीयता की आत्मा से।

तुलसीदास का जन्म 1532 ईस्वी के आसपास उत्तर प्रदेश के राजापुर गांव में हुआ। जन्म के समय उनके बारे में कई किंवदन्तियां हैं। कहा जाता है कि वे गर्भ में 12 महीने रहे और जन्मते ही 'राम' नाम बोलने लगे। उनका जीवन प्रारंभ से ही कष्टमय था – माता-पिता ने त्याग दिया, बाल्यकाल अनाथाश्रम में बीता परंतु इन प्रतिकूलताओं ने उन्हें तोड़ा नहीं बल्कि उन्हें एक ऐसा आत्मज्ञानी बनाया, जिसने जीवन की पीड़ा को भक्ति में रूपांतरित कर दिया।

तुलसीदास एक बार सांसारिक मोह में भी बंधे – उन्होंने विवाह किया, पत्नी रत्नावली से अत्याधिक प्रेम किया लेकिन जब पत्नी ने एक दिन कहा, "लाज न आवत तुम्हहिं कि नारि हठी आवेहु दौड़ि। अस रघुनाथ पग लगत दीन, तौ कबहुँ न आवत तोड़ि॥" यानी – "यदि मेरे शरीर से इतना मोह है तो भगवान राम जैसे करुणाशील का प्रेम क्यों नहीं करते?" उस एक वाक्य ने तुलसी को गोस्वामी तुलसी बना दिया। उन्होंने गृहत्याग किया और अपना जीवन श्रीराम की भक्ति और समाजोत्थान को समर्पित कर दिया।

तुलसीदास की सबसे बड़ी देन यह है कि उन्होंने धर्म को एक वर्ग विशेष की बपौती से निकालकर जनसाधारण तक पहुंचाया। संस्कृत की कठिनता से अलग उन्होंने रामकथा को अवधी जैसी लोकभाषा में लिखा ताकि आमजन उसे समझ सके, जी सके।

आज जब धर्म को फिर से एक सीमित दायरे में बांधा जा रहा है जब धार्मिक ग्रंथों को केवल कर्मकांड तक सीमित किया जा रहा है, तुलसीदास का जीवन हमें बताता है कि धर्म का मतलब केवल पूजा नहीं बल्कि समाज में न्याय, समरसता और करुणा की स्थापना है।

तुलसीदास ने कभी अपने विचारों को राजनीतिक सत्ता से डरकर नहीं बदला। वे मुगल काल में भी निर्भीक होकर राम की सत्ता की बात करते रहे। आज जब विचार की स्वतंत्रता पर प्रश्नचिन्ह लगाए जा रहे हैं, जब बुद्धिजीवियों को या तो ख़ामोश कर दिया जाता है या बदनाम कर दिया जाता है, तब तुलसीदास का जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा संत वही है जो 'राजा की भी कहे और रंक की भी सुने'।

तुलसीदास का जीवन सिद्ध करता है कि व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों में भी अपने विचारों पर अडिग रह सकता है। आज जब विचारधाराएं बाजार के हिसाब से बदली जाती हैं, तब तुलसीदास का चिंतन विवेकपूर्ण निरंतरता का प्रतीक बनता है। तुलसी ने संस्कृत नहीं, लोकभाषा का चयन किया। आज जब भारत की शिक्षा और संवाद प्रणाली 'अंग्रेज़ी वर्चस्व' की ओर जा रही है, तब तुलसीदास याद दिलाते हैं कि जनभाषा में विचार अधिक टिकाऊ होते हैं। आज का समाज बाहरी उपलब्धियों में आत्मविश्वास ढूंढता है जबकि तुलसीदास ने आत्मबल को भगवान के नाम में देखा। वे लिखते हैं "बंदउँ गुरु पद कंज, कृपा सिंधु नर रूप हरि।" आज की आत्मकेंद्रित पीढ़ी को यह भावना फिर से जोड़ सकती है कि सच्ची शक्ति भीतर से आती है, बाहर से नहीं।

पत्नी की फटकार ने तुलसी को आत्मचिंतन की ओर मोड़ा। इस प्रसंग में यह छिपा संदेश है कि स्त्री केवल प्रेरणा नहीं, बोध का माध्यम भी बन सकती है। आज जब महिला अधिकारों को लेकर समाज में बहसें हैं, तुलसी का जीवन उस संवाद की एक आदर्श मिसाल बन सकता है।

तुलसीदास ने राम को केवल क्षत्रिय नायक नहीं बल्कि जन-जन का आराध्य बनाया। शबरी, निषाद, केवट इन सबको उन्होंने उतनी ही महत्ता दी।

सामाजिक यथार्थवाद, राष्ट्रीयता और प्रगतिशील विचारों के कलमकार: मुंशी प्रेमचंद (31 जुलाई जयंती विशेष आलेख)

सुनील कुमार महला, स्वतंत्र टिप्पणीकार।

31 जुलाई 2025 को हम हिंदी और उर्दू साहित्य के महान साहित्यकार, कलम के सिपाही, समकालीन धर्म, जाति, वर्ण की जकड़बंदी तथा समाज में व्याप्त सामंती प्रवृत्तियों की जकड़बंदियों से लोहा लेने वाले उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद (साहित्यिक नाम/पेन नेम), जिनका वास्तविक नाम धनपत राय श्रीवास्तव था, की 145 वीं जयंती मनाने जा रहे हैं। उन्होंने सिस्टम और सामंतों पर जबरदस्त चोट की तथा गरीब वर्ग की सुनवाई करते हुए साहित्य रचा। उनकी कहानियों और उपन्यासों में उस दौर का समाज निर्ममता से प्रतिबिम्बित होता है। उन्होंने समकालीन भारतीय समाज के आसपास के सामान्य चरित्रों को उठाते हुए उस दौर के समूचे समाज का खाका खींच दिया था तो कहानियों के तो वे जादूगर थे। बहरहाल, पाठकों को बताता चलूं कि उनका जन्म दरिद्र कायस्थ कुल में एक बड़े परिवार में 31 जुलाई, 1880 को वाराणसी से लगभग चार मील दूर, लमही नाम के एक गांव में हुआ था। उनके पिताजी का नाम मुंशी अजायब लाल, जो डाकमुंशी (पोस्ट ऑफिस क्लर्क) थे। आपकी माताजी का नाम आनन्दी देवी था। जब आप मात्र छह वर्ष के थे तब आपकी माताजी तथा जब आप सोलह वर्ष के थे, तब आपके पिताजी का देहांत हो गया था। आपके पितामह का नाम मुंशी गुरुसहाय लाल था, जो पटवारी थे। मात्र पंद्रह वर्ष की उम्र में (पहला विवाह) आपकी (मुंशी प्रेमचंद) शादी हो गई थी। आपकी धर्मपत्नी का नाम शिवरानी देवी था, जो सुशिक्षित तथा बाल-विधवा थीं। आपके तीन सन्तानें हुईं-श्रीपत राय, अमृत राय और कमला देवी श्रीवास्तव। वर्ष 1906 में दूसरी शादी के बाद आपके जीवन में आमूलचूल परिवर्तन आए और जहां एक ओर परिवार की आर्थिक तंगी कम हुई, वहीं दूसरी ओर आपके लेखन में भी सजगता आई। इतना ही नहीं, आप पदोन्नति पाकर स्कूलों के डिप्टी इंस्पेक्टर बने, लेकिन 1921 ई. में असहयोग आन्दोलन के दौरान महात्मा गाँधी के सरकारी नौकरी छोड़ने के आह्वान पर स्कूल इंस्पेक्टर पद से 23 जून को त्यागपत्र दे दिया। आपकी आरम्भिक शिक्षा फ़ारसी में हुई तथा जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों में आपने मैट्रिक पास किया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से आपने अंग्रेजी साहित्य, पर्शियन और इतिहास विषयों से स्नातक की उपाधि द्वितीय श्रेणी में प्राप्त की थी। आप वकील बनना चाहते थे, लेकिन आर्थिक तंगी के कारण ऐसा संभव नहीं हो सका। सरकारी सेवा में रहते हुए आपने कहानियां लिखना शुरू किया। उस समय आपने नवाब राय (पेन नेम) नाम को अपनाया। यहां पाठकों को बताता चलूं कि मुंशी प्रेमचंद का पहला 'पेन नाम' उनके चाचा महावीर ने 'नवाब राय' रखा था। उनके कुछ मित्र तो जीवन-पर्यन्त उन्हें इसी नाम से पुकारते रहे। सरकार द्वारा उनका पहला कहानी-संग्रह, 'सोजे वतन' (राष्ट्र का विलाप) जब्त कर लेने के बाद, उन्हें नवाब राय नाम छोड़ना पड़ा और इसके बाद उनका अधिकतर साहित्य प्रेमचंद के नाम से प्रकाशित हुआ। उल्लेखनीय है कि 'सोजे वतन' संग्रह की पहली कहानी दुनिया का सबसे अनमोल रतन को आम तौर पर उनकी पहली प्रकाशित कहानी माना जाता रहा है। पाठकों को जानकारी देना चाहूंगा कि उनका प्रेमचंद नाम दयानारायन निगम ने रखा था। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि प्रेमचंद' नाम से उनकी पहली कहानी 'बड़े घर की बेटी' 'जमाना पत्रिका' के दिसम्बर 1910 के अंक में प्रकाशित हुई थी। जानकारी के अनुसार इसी काल में आपने कथा-साहित्य बड़े मनोयोग से पढ़ना शुरू किया था। एकबार आपने एक तम्बाकू-विक्रेता की दुकान में, जब आपकी उम्र 13 वर्ष की थी, फैजी द्वारा लिखित 'तिलिस्मे होशरुबा' (कहानी संग्रह) का पाठ सुना, जिससे उनकी कल्पना को उड़ान मिली। इसी दौरान आपने उर्दू के मशहूर रचनाकार रतननाथ 'शरसार', मिर्ज़ा हादी रुस्वा और मौलाना शरर के उपन्यासों से भी परिचय प्राप्त कर लिया था। इतना ही नहीं, कथा साहित्य की अन्य अमूल्य कृतियां भी आपने पढ़ीं। इनमें 'सरशार' की कृतियां और रेनाल्ड की 'लन्दन-रहस्य' भी शामिल थीं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आपने अपनी रचनाओं में जन साधारण की भावनाओं, परिस्थितियों और उनकी समस्याओं का मार्मिक चित्रण किया है।सच तो यह है कि आपकी कृतियां भारत के सर्वाधिक विशाल और विस्तृत वर्ग की कृतियां हैं। अपनी कहानियों से आप मानव-स्वभाव की आधारभूत महत्ता पर बल देते हैं तथा आपकी रचनाओं में तत्कालीन इतिहास बोलता है। आपने उपन्यास, कहानी, नाटक, समीक्षा, लेख, सम्पादकीय, संस्मरण सहित आदि अनेक विधाओं में साहित्य रचा है, लेकिन प्रमुख रूप से आप कथाकार हैं। आप बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे तथा आपने कुल 15 उपन्यास, 300 से कुछ अधिक कहानियां, 3 नाटक, 10 अनुवाद, 7 बाल-पुस्तकें तथा हज़ारों पृष्ठों के लेख, सम्पादकीय, भाषण, भूमिका, पत्र आदि की रचना की।सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान आपके प्रमुख उपन्यास हैं। 1918 ई. में उनका पहला हिंदी उपन्यास 'सेवासदन' प्रकाशित हुआ। इसकी अत्यधिक लोकप्रियता ने प्रेमचंद को उर्दू से हिंदी का कथाकार बना दिया। हालाँकि, उनकी लगभग सभी रचनाएँ हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं में प्रकाशित होती रहीं। 1925 ई. में उन्होंने 'रंगभूमि' नामक वृहद उपन्यास लिखा, जिसके लिए उन्हें मंगलप्रसाद पारितोषिक भी मिला।1926-27 ई. के दौरान उन्होंने महादेवी वर्मा द्वारा संपादित हिंदी मासिक पत्रिका 'चाँद' के लिए धारावाहिक उपन्यास के रूप में निर्मला की रचना की। इसके बाद उन्होंने कायाकल्प, गबन, कर्मभूमि और गोदान की रचना की। इतना ही नहीं, कफन, पूस की रात, पंच परमेश्वर, बड़े घर की बेटी, बूढ़ी काकी, दो बैलों की कथा आदि तीन सौ से अधिक कहानियाँ भी आपने लिखीं हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आपकी अधिकतर कहानियों में निम्न व मध्यम वर्ग का चित्रण है। आपने अपने दौर की सभी प्रमुख उर्दू और हिन्दी पत्रिकाओं जैसे कि ज़माना, सरस्वती, माधुरी, मर्यादा, चाँद, सुधा आदि में लिखा तथा हिन्दी समाचार पत्र 'जागरण' तथा प्रसिद्ध साहित्यिक पत्रिका 'हंस' का संपादन और प्रकाशन भी किया। सरस्वती प्रेस भी आपने खरीदी, लेकिन घाटे के कारण यह आपको बंद करनी पड़ी। इतना ही नहीं, आप फिल्मों की पटकथा लिखने मुंबई भी आए और लगभग तीन वर्ष तक यहां रहे। जीवन के अंतिम दिनों तक में भी आपने साहित्य सृजन किया। 'महाजनी सभ्यता' आपका अंतिम निबन्ध, 'साहित्य का उद्देश्य' अन्तिम व्याख्यान, 'कफन' अन्तिम कहानी, 'गोदान' अन्तिम पूर्ण उपन्यास तथा 'मंगलसूत्र' अन्तिम अपूर्ण उपन्यास माना जाता है। आपकी पुस्तकों के अंग्रेजी, उर्दू, चीनी, रूसी समेत अनेक भाषाओं में रूपांतरण हुए हैं तथा कहानियां काफी लोकप्रिय हुई हैं। आपकी स्मृति में भारतीय डाक विभाग की ओर से 31 जुलाई, 1980 को उनकी जन्मशती के अवसर पर 30 पैसे मूल्य का एक डाक टिकट जारी किया गया था। आपने अपने जीवन में कई अद्वितीय और अद्भुत कृतियां लिखी हैं। तब से लेकर आज तक हिन्दी साहित्य में ना ही आपके जैसा कोई हुआ है और ना ही कोई और होगा। कहना ग़लत नहीं होगा कि आपका साहित्य एक महत्वपूर्ण सामाजिक-सांस्कृतिक दस्तावेज है। सच तो यह है कि आपके साहित्य में समाजसुधार आन्दोलनों, स्वाधीनता संग्राम तथा प्रगतिवादी आन्दोलनों के सामाजिक प्रभावों का स्पष्ट चित्रण है। दूसरे शब्दों में कहें तो आपके साहित्य में दहेज, अनमेल विवाह, पराधीनता, लगान, छूआछूत, जाति भेद, विधवा विवाह, आधुनिकता, स्त्री-पुरुष समानता, आदि आपके दौर की सभी प्रमुख समस्याओं का चित्रण मिलता है। आदर्शोन्मुख यथार्थवाद आपके साहित्य की मुख्य विशेषता है। दूसरे शब्दों में कहें तो उनके साहित्य में सामाजिक यथार्थवाद, ग्रामीण जीवन, और राष्ट्रीयता जैसे विषय प्रमुखता से उभरे हैं। सच तो यह है कि उनकी अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय समाज में व्याप्त गरीबी, उत्पीड़न, और सामाजिक असमानता को उजागर किया है और उनके लेखन में साधारण लोगों के संघर्षों और आकांक्षाओं को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यह कहना ग़लत नहीं होगा कि आपकी कहानियों और उपन्यासों में 'समय को मात' देने का हुनर है। अपने जीवन के अंतिम दिनों के एक वर्ष को छोड़कर आपका पूरा समय वाराणसी और लखनऊ में गुजरा, जहां आपने अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन किया और अपना साहित्य-सृजन करते रहे। 8 अक्टूबर, 1936 को जलोदर रोग से आपका देहावसान हो गया। भले ही आज वे शारीरिक रूप से हमारे बीच मौजूद नहीं हैं लेकिन दशकों बाद भी उनका लिखा साहित्य आज भी प्रासंगिक है। अंत में, यही कहूंगा कि प्रेमचंद जी ने जो कुछ भी लिखा वो हिंदी साहित्य में स्वर्ण अक्षरों में हमेशा-हमेशा के लिए अंकित हो गया है।

बेहतर हो कि विपक्ष चर्चा ही करे

अजय जैन 'विकल्प'

संसद में चर्चा से भागना विपक्ष की रणनीति तो नहीं होनी चाहिए क्योंकि देश को भी यह जानने का अधिकार है कि आखिर सच क्या है. विपक्ष का लगातार हंगामा देखकर ऐसा लगता है कि वो सच को बाहर आने से रोकने में लगे हुए हैं। ऐसे में सवाल यह है कि जब सरकार की बात पर भरोसा ही नहीं तो इस बातचीत में शामिल क्यों हुए ? क्या विपक्ष का यह रवैया सवालों के घेरे में नहीं है ?

देश के सर्वोच्च मंदिर लोकसभा में 'ऑपरेशन सिंदूर' पर शुरू हुई बहस को लेकर विपक्ष का रवैया एक बार फिर सवालों एवं शंका के घेरे में है। सरकार ने विपक्ष की 16 घंटे की विस्तृत चर्चा के लिए मंच तैयार किया पर विपक्ष ने पहले ही क्षण से शोर-शराबा कर साबित कर दिया कि उसके पास सवाल कम एवं लेकिन सियासी नाटक ज्यादा है और वही करना उसे बखूबी आता है और किया भी जाएगा।

दरअसल, इस संवेदनशील राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दे पर चर्चा की शुरूआत विपक्ष को बहुत अच्छी करनी थी ताकि देशवासियों को भी लगता कि संसद में बस हंगामा ही नहीं होता, सार्थक बातचीत भी होती है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने शुरूआत करते हुए सेना के पराक्रम, बलिदान और कूटनीतिक कौशल की सराहना की लेकिन विपक्ष ने गंभीर चर्चा की जगह संसद को अखाड़ा बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। ऐसे में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला को हस्तक्षेप कर बहस को स्थगित करना पड़ा जो संकेत है कि यह विपक्ष की 'बहस से भागने की तय रणनीति' है।

इस हंगामे पर भाजपा सांसद डॉ. सुधांशु त्रिवेदी ने सटीक टिप्पणी की कि "जिन्होंने सर्जिकल स्ट्राइक पर सबूत मांगे थे, वे आज भी ऑपरेशन सिंदूर पर संदेह कर रहे हैं। दरअसल, यह राष्ट्रहित नहीं, केवल वोट बैंक के हित में की जा रही राजनीति है।" बड़ा सवाल यह है, कि विपक्ष को सरकार की किसी बात और अभियान पर अगर भरोसा ही नहीं है तो फिर चर्चा में आए ही क्यों ? कारण कि दिनभर की चर्चा के बाद भी अविश्वास तो बनाए ही रखना है न।

इधर, पूर्व अनुभवी मंत्री और कांग्रेस नेता पी. चिदंबरम ने आग में घी डालने का बयान देकर चर्चा को और तीखा कर दिया। इनका यह पूछना कि ₹आप कैसे मानते हैं कि आतंकी पाकिस्तान से आए

थे ?₹ बेहद ही अतार्किक, अविश्वासी और भारतीय सेना एवं खुफिया एजेंसियों की क्षमता पर अविश्वास करना है। सरकार ने जब पाकिस्तान की पनाहगाहों तक स्ट्राइक की बात कही तो विपक्ष को अपने सुर बदलने चाहिए थे लेकिन अब भी 'राजनीति पहले, देश बाद में' की लाइन पर अड़ा रहना बता रहा है कि जनता को दिखाने के लिए यह सब दिखावा किया जा रहा है।

इस मुद्दे पर सीधा सवाल यह है कि भले ही केन्द्र सरकार झूठ बोल रही हो पर जब बहस तय थी, जवाब तय थे, मंच तैयार था तो फिर विपक्ष ने हंगामा क्यों किया ? उनको बोलने तो देते। कहना गलत नहीं होगा कि विपक्ष समझ गया और जानता भी है कि 'ऑपरेशन सिंदूर' (पहलगाम में 22 अप्रैल को 26 लोगों की हत्या का प्रतिकार लेना) केन्द्र सरकार की एक बड़ी सैन्य व कूटनीतिक सफलता है, और यदि वास्तविक तथ्य सामने आ गए तो उनका लगातार बोला जा रहा झूठ धराशायी हो जाएगा। इसलिए कांग्रेस सहित अन्य ने मुद्दे को चर्चा से भटकाकर हंगामे में डुबोने की कोशिश की है। सम्भवतः विपक्ष की रणनीति यह है कि "सुनना ही नहीं है", ताकि कोई जवाब आम जनता तक पहुंचे ही नहीं।

विपक्ष को अब समझना पड़ेगा कि 'ऑपरेशन सिंदूर' केवल एक सैन्य विजय नहीं, बल्कि यह राष्ट्र की संप्रभुता, सैनिकों के अद्भुत शौर्य और भारत की विदेश नीति की निर्णायक दृढ़ता का प्रमाण है। विपक्ष इस पर जैसी राजनीति कर रहा है, वह दरअसल अपने ही राजनीतिक भविष्य को खंडहर में बदल रहा है। इसके लिए विपक्षी दलों को भविष्य में अफ़सोस ही होगा। इसलिए अभी भी समय है कि बौखलाने की अपेक्षा चर्चा में ईमानदारी से भाग लीजिए एवं देशहित में संवाद का प्रयास करें।

24 साल पुरानी जमीन म्यूटेशन मामले में सीओ राज बल्लभ को 3 साल जेल

नियम ताक पर, सरायकेला - सिंहभूम में जमीन कारोबार भ्रष्टाचार के बारूदी ढेर पर

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड

रांची। नियमों को ताक पर रखकर दलालों के जरिए जमीन के कारोबार में अन्तर लिप्त भ्रष्ट अधिकारियों, दलालों, पृष्ट पोषक नेतृत्वकर्ताओं को आज यह खबर जानना लाजमी होगा। भ्रष्टाचार के 24 साल पुराने एक मामले में मंगलवार को हजारीबाग एडीजे-2 सह एसीबी कोर्ट की विशेष न्यायाधीश आशा देवी भट्ट ने चतरा के पूर्व सीओ राजबल्लभ सिंह को तीन साल की सजा और 5 हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई है। मालूम हो कि वर्ष 2001 में चतरा में सीओ राजबल्लभ सिंह को दाखिल-खारिज के लिए 2000 रुपये रिश्वत लेते एसीबी की टीम ने रंगे हाथ गिरफ्तार किया था। इस मामले में रांची एसीबी ने प्राथमिकी कांड संख्या 17/2001 दर्ज की थी। 24 साल तक चले मुकदमे के दौरान राजबल्लभ सिंह को कोई पदोन्नति नहीं मिली और वे सीओ के पद से ही सेवानिवृत्त हुए। पर आज जमीन कारोबार करने वाले

अधिकारी ऊंचे ओहदे पर कैसे बनाए जाते हैं यह इस इलाके आकर कार्मिक की करामात को देखा जा सकता। जहां केवल रांची, हजारीबाग नहीं विशेष कर उस सरायकेला खरसावां तथा सिंहभूम जिले में पदस्थापित भ्रष्ट अधिकारियों द्वारा अंजाम दी जाती रही है वहीं दाखिल खारीज आम। वह भी उस देशी रियासत में जिसका विलय देश के प्रथम गृहमंत्री सरदार पटेल के हाथों ओड़शा में रखे जाने हेतु होता है उसके अपने 500वर्ष से शासन चलाए शासको द्वारा।पर बड़े षडयंत्र पूर्वक बिहार फिर झारखंड में लाई जाती है इलाका। बिहार में कुछ पर ही, आगे झारखंड में आरंभ होता है ओड़िया लोगों का जमीन जायदाद नियमों को ताक पर रखकर खेलने का असली भ्रष्टाचार की खेल। सीओ राज बल्लभ का तो महज 24 वर्ष पुराना केस रहा। यहां तो अधिकारी 70 वर्ष पुरानी राजबाड़ा का भारतीय गवर्नर जेनरल संग किया हुआ इकरारनामा, केंद्र, ओडिशा सरकार द्वारा ओडिया लोगों की संरक्षित जमीनें भ्रष्टाचार हेतु नियमों का अवहेलना जारी है। जहां केंद्रीय एजेन्सी के फंदे में कभी भी फंस सकते भ्रष्टाचारी।

उधम सिंह सरदार: एक गोली, सौ सालों की गूंज

उधम सिंह: लंदन की अदालत में भारत की गरिमा का नाम

उधम सिंह केवल एक क्रांतिकारी नहीं थे, बल्कि एक विचार थे—संयम, संकल्प और सत्य का प्रतीक। जलियांवाला बाग़ के नरसंहार का प्रत्यक्षदर्शी यह वीर 21 वर्षों तक चुपचाप अपने मिशन की तैयारी करता रहा और लंदन जाकर ओ'डायर को गोली मारकर भारत का प्रतिशोध पूरा किया। उनकी चुप्पी न्याय की गर्जना थी, जो आज भी हमें अन्याय के खिलाफ खड़े होने की प्रेरणा देती है। आज उनकी याद केवल श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि आत्ममंथन की पुकार है—क्या हम उधम सिंह के उत्तराधिकारी बन पाए हैं?

डॉ. प्रियंका सौरभ

भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई केवल तलवारों की टंकार या जुलूसों की गूंज नहीं थी, वह उन आंखों में पलते संकल्पों की लड़ाई थी, जो वर्षों तक प्रतिशोध को अपनी आत्मा में पाले रही। वह उन लोगों की कहानी थी, जो नारे नहीं लगाते थे, लेकिन भीतर ही भीतर एक ज्वालामुखी की तरह उबलते रहते थे। उन ज्वालाओं में से एक नाम था — उधम सिंह।

उधम सिंह, जिन्होंने जलियाँवाला बाग की मिट्टी में अपने साथियों का खून देखा। जिन्होंने अपने जीवन को एक ही लक्ष्य के लिए समर्पित कर दिया — न्याय। यह कहानी है एक ऐसे वीर की, जो किसी अखबार की सुर्ख़ी नहीं बना, लेकिन इतिहास की सबसे करारी चोट साबित हुआ।

13 अप्रैल 1919, अमृतसर। बैसाखी का त्यौहार था। जलियाँवाला बाग में हज़ारों लोग शांतिपूर्वक एकत्र थे। किसी ने कल्पना नहीं की थी कि यह दिन इतिहास के सबसे रक्तरंजित दिनों में तब्दील हो जाएगा। जनरल डायर की क्रूरता ने मासूमों पर गोलियों की बौछार कर दी। न कोई चेतावनी, न कोई चेतावक विचार। निहत्थे लोगों पर मशीनगनों से फायरिंग हुई। लाशों की चादर बिछ गई। सैकड़ों लोग मारे गए, और हज़ारों ज़ख़्मी। पूरा बाग खून से लाल हो गया।

उसी नरसंहार में एक 20 वर्षीय युवा घायल, लेकिन जीवित बचा—उधम सिंह। उन्होंने न केवल उस घटना को देखा, बल्कि उसे अपने सीने में पत्थर की तरह गड़ा लिया। उन्होंने न शोर मचाया, न कोई शिकायत की। पर उनके अंदर एक ज्वाला धधक रही थी, जो शांति से नहीं बुझने वाली थी।

उधम सिंह ने अपने जीवन को एक ही दिशा दी—इस क्रूरता का बदला लेना। उन्होंने प्रतिशोध नहीं, न्याय की भाषा चुनी। वे वर्षों तक खामोशी से तैयारी करते रहे। अपने देश से दूर जाकर दुश्मन की धरती पर खड़े होकर भारत का परचम लहराने का उन्होंने प्रण लिया। यह कोई आवेश में किया गया कार्य नहीं था, यह एक सुनियोजित नैतिक युद्ध था।

1934 में वे लंदन पहुँचे। वहाँ वे गुमनाम ज़िंदगी जीते रहे। उनका मकसद केवल ओ'डायर तक पहुँचना था—वह व्यक्ति जिसने जनरल डायर के कत्लेआम को समर्थन और सम्मान प्रदान किया था। 13 मार्च 1940 को वह दिन आया, जब उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के एक सभागार में जाकर, कैक्सटन हॉल में ओ'डायर को गोली मारी। वह गोली केवल एक शरीर को नहीं भेदती थी, वह एक साम्राज्य की आत्मा को झकझोर देती थी।

उधम सिंह वहीं गिरफ्तार हुए। उन्होंने भागने की कोई कोशिश नहीं की। अदालत में खड़े होकर उन्होंने गर्व से कहा, "मैंने मारा है। यह प्रतिशोध नहीं, न्याय है। मैं अपने देश के लिए मरने जा रहा हूँ, और मुझे इस पर गर्व है।" उनके चेहरे पर न पछतावा था, न भय। वह एक आत्मा थी, जो न्याय के सिद्धांत पर अडिग थी।

ब्रिटिश शासन की नींव को यह घटना अंदर तक हिला गई। एक भारतीय, साम्राज्य की राजधानी में आकर, खुलेआम न्याय कर गया। यह केवल एक हत्या नहीं थी, यह अंग्रेज़ी सत्ता के खिलाफ एक नैतिक घोषणापत्र था। उधम सिंह ने यह दिखा दिया कि भारतवासी केवल लड़ाई के मैदान में ही नहीं, विवेक और साहस के साथ भी लड़ सकते हैं।

आजादी के बाद भारत ने उधम सिंह को "शहीद-ए-आज़म" की उपाधि दी। लेकिन क्या हम सच में उनके विचारों और बलिदान के योग्य उत्तराधिकारी बन पाए हैं?

आज भी हमारे देश में अन्याय मौजूद है। बलात्कारियों को राजनीतिक संरक्षण मिलता है, पत्रकार जेलों में बंद हैं, गरीब किसान आत्महत्या कर रहा है और सत्ता मौन है। क्या यही वह भारत है, जिसकी कल्पना उधम सिंह ने की थी? क्या हममें से किसी के भीतर वैसी आग बची है?

उधम सिंह ने बंदूक चलाई थी, लेकिन वह गोली भारत की चेतना को जगा गई थी। वह गोली एक उदाहरण थी, कि अगर अन्याय को सहा गया, तो वह बार-बार दोहराया जाएगा। उन्होंने यह दिखाया कि सच्चा राष्ट्रभक्त वह नहीं जो तिरंगा लहराकर भाषण देता है, बल्कि वह है

जो अन्याय के सामने कभी न झुके।

आज जब हम राष्ट्रवाद के नाम पर नफ़रत का बाज़ार सजते देख रहे हैं, तो उधम सिंह का नाम हमें आइना दिखाता है। उन्होंने कभी किसी धर्म, जाति या पार्टी के नाम पर संघर्ष नहीं किया। उनका उद्देश्य केवल एक था—न्याय और स्वतंत्रता।

उनकी जयंती या पुण्यतिथि पर हम मोमबत्तियाँ जलाते हैं, प्रतिमाओं पर फूल चढ़ाते हैं। लेकिन यह श्रद्धांजलि तब तक अधूरी है जब तक हम उनके विचारों को अपने जीवन में न उतारें। देशभक्ति केवल एक दिवस की भावना नहीं हो सकती। वह एक निरंतर जागरूकता है, जो हर अन्याय के खिलाफ आवाज़ बनकर उठती है।

आज के युवाओं के लिए उधम सिंह एक आदर्श हैं। एक ऐसा आदर्श जो कहता है — "धैर्य रखो, पर चुप मत रहो। तैयारी करो, पर डर मत खाओ। न्याय माँगो नहीं, उसे प्राप्त करो।"

अगर हम चाहते हैं कि हमारे बच्चे सच्चे नागरिक बनें, तो हमें उन्हें उधम सिंह की कहानी केवल पाठ्यपुस्तकों से नहीं, बल्कि जीवन के उदाहरणों से सिखानी होगी। उनकी तस्वीर केवल दीवार पर न टांगे, बल्कि उनके सिद्धांतों को अपने आचरण में उतारें।

भारत को आज भी उधम सिंह जैसे लोगों की ज़रूरत है। जो सत्ता से नहीं डरते, जो सत्य के लिए खड़े होते हैं, और जिनकी दृष्टि केवल अपने स्वार्थ तक सीमित नहीं होती। हमें उधम सिंह को केवल 'अतीत' नहीं, 'वर्तमान' बनाना होगा।

जिस दिन हम अपने चारों ओर अन्याय देखकर चुप नहीं रहेंगे, उसी दिन उधम सिंह का बलिदान सच्चे अर्थों में सार्थक होगा। वह दिन जब हर नागरिक अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज़ बन जाएगा—वही दिन उधम सिंह के भारत की शुरुआत होगी।

उधम सिंह की एक गोली ब्रिटेन की संसद में चली थी, लेकिन उसकी गूंज आज भी भारत की आत्मा में है। वह गूंज हमें हर रोज़ पूछती है—क्या तुम तैयार हो अन्याय के खिलाफ खड़े होने के लिए? क्या तुम केवल श्रद्धांजलि देने आए हो या उनके जैसे कुछ करने का साहस भी रखते हो?

उधम सिंह सरदार केवल एक नाम नहीं, एक विचार हैं। वह विचार जो कहता है कि आज़ादी केवल राजनीतिक नहीं, नैतिक साहस से मिलती है। वह विचार जो हमें बार-बार याद दिलाता है कि क्रांति केवल तलवार से नहीं, आत्मा के विश्वास से होती है।

उधम सिंह, तुम्हें नमन!

तुम्हारी वह एक गोली आज भी हमें जगाने के लिए काफ़ी है।

जहां इतिहास ने वीरांगनाएं गढ़ीं, वहां बेटियां लापता हैं

[गौरवशाली मध्यप्रदेश की असुरक्षित बेटियाँ: कौन है जिम्मेदार?]

मध्यप्रदेश, वह पावन भूमि जहां सांस्कृतिक वैभव की गंगा बहती है, ऐतिहासिक गौरव के स्वर गूंजते हैं, और प्राकृतिक सौंदर्य की छटा हर दिल को मोह लेती है, आज एक ऐसी सच्चाई के साये में खड़ी है जो आत्मा को झकझोर देती है। यह धरती, जो कभी रानी दुर्गावती और अहिल्याबाई की वीरता की साक्षी रही, आज अपनी बेटियों की खामोश चीखों का दंश झेल रही है। विधानसभा में हाल ही में उजागर हुए आंकड़े समाज के माथे पर एक गहरा दाग बनकर सामने आए हैं। ये आंकड़े केवल ठंडी संख्याएं नहीं, बल्कि उन टूटे सपनों, बिखरे परिवारों और लुप्त होती हंसी की कहानियां हैं, जो मध्यप्रदेश के गौरवशाली इतिहास को चुनौती दे रही हैं। पिछले 18 महीनों (1 जनवरी 2024 से 30 जून 2025) में 21,174 महिलाएं और 1,954 नन्हीं बच्चियां लापता हो चुकी हैं, जिनका कोई सुराग नहीं मिला। ये आंकड़े सिर्फ कागजों पर नहीं, बल्कि उन माताओं के आंसुओं में, उन परिवारों के दर्द में और समाज की उदासीनता पर सवाल उठाते हैं। आखिर हम अपनी बेटियों को कहां खो रहे हैं? यह सवाल केवल मध्यप्रदेश का नहीं, बल्कि पूरे समाज का है, जिसका जवाब ढूंढना अब अनिवार्य हो गया है।

विधानसभा में पूर्व गृहमंत्री के एक सवाल ने इस भयावह सत्य को उजागर किया। सरकार के लिखित जवाब ने बताया कि इस अवधि में 18,776 बच्चियां लापता हुईं, जिनमें से कई को बरामद कर लिया गया, लेकिन 1,954 ऐसी मासूम हैं जिनका एक महीने से अधिक समय तक कोई पता नहीं चला। रतलाम जिला इस त्रासदी की सबसे भयावह तस्वीर पेश करता है, जहां 178 बच्चियां गायब हैं, और उनमें से 124 को सात महीने से अधिक समय से नहीं खोजा जा सका। इंदौर जैसे आधुनिक महानगर में 150 से अधिक बच्चियां लापता हैं, जबकि सागर, जबलपुर, भोपाल और सतना जैसे जिले भी इस संकट की चपेट में हैं। ये आंकड़े प्रशासनिक नाकामी का दर्पण हैं, जो यह चीख-चीखकर बता रहे हैं कि हमारी व्यवस्था अपनी सबसे नाजुक कड़ी—हमारी बच्चियों—की रक्षा करने में असमर्थ साबित हो रही है। इन संख्याओं के पीछे छिपा है एक ऐसा दर्द, जो हर उस परिवार को झेलना पड़ रहा है, जिसकी बेटी की मुस्कान अब केवल यादों में सिमटकर रह गई है। महिलाओं की स्थिति और भी हृदयविदारक है। सरकार के जवाब के अनुसार, 23,128 गुमशुदगी के मामलों में 21,174 महिलाएं और 1,954 बच्चियां शामिल हैं। हैरानी की बात यह है कि कई मामलों में औपचारिक शिकायत तक दर्ज नहीं हुई। क्या सामाजिक डर, दबाव या प्रशासन पर अविश्वास इन परिवारों को चुप रहने के लिए मजबूर कर रहा है? क्या हमारा समाज इतना असंवेदनशील हो चुका है कि वह अपनी बेटियों की गुमशुदगी को सामान्य मानने लगा है? ये आंकड़े केवल गुमशुदगी की कहानी नहीं सुनाते, बल्कि उन अधूरे सपनों, टूटे विश्वास और बिखरे रिश्तों की दास्तान बयां करते हैं, जो हर दिन किसी न किसी परिवार को तोड़ रही है। यह केवल एक परिवार का दुख नहीं, बल्कि पूरे समाज की विफलता का प्रतीक है।

इस संकट की जड़ें सामाजिक और प्रशासनिक स्तरों पर गहरी पैठ बनाए हुए हैं। मध्यप्रदेश की सामाजिक संरचना में लैंगिक असमानता और भेदभाव की दीवारें आज भी अडिग खड़ी हैं। राज्य की 38% आबादी, जिसमें आदिवासी और दलित समुदाय शामिल हैं, सबसे अधिक जोखिम में हैं। इन समुदायों की महिलाएं और बच्चियां न केवल यौन हिंसा का सामना कर रही हैं, बल्कि सामाजिक अलगाव और आर्थिक दबावों से भी जूझ रही हैं। प्रशासनिक तंत्र में, कुछ ऐसी बाधाएं हैं जो इस समस्या को और जटिल बना रही हैं—जैसे कि गुमशुदगी के मामलों में त्वरित कार्रवाई का अभाव, अपराधियों को पकड़ने में ढिलाई, और शिकायतों को दर्ज करने में अनावश्यक विलंब। रतलाम और इंदौर जैसे क्षेत्रों में लापता बच्चियों की संख्या में कमी नहीं आ रही, और कई बार तो शिकायत दर्ज करने की प्रक्रिया में ही लंबा समय लग जाता है। सामाजिक जागरूकता की कमी और पीड़ित परिवारों को पर्याप्त समर्थन न मिलना इस चुनौती को और गहरा रहा है। यह केवल आंकड़ों का मसला नहीं है; यह उन टूटे हुए परिवारों की कराह है, जो हर सुबह अपनी बेटी की वापसी की आस में आंखें खोलते हैं। यह उन बच्चियों की पुकार है, जो समाज की उदासीनता और प्रशासन की निष्क्रियता का शिकार हो रही हैं। यह उस मां की आह है, जो अपनी बेटी के लिए न्याय की गुहार लगा रही है। यह स्थिति केवल मध्यप्रदेश की नहीं, बल्कि पूरे समाज की असफलता का दर्पण है। जब एक समाज अपनी बेटियों को सुरक्षित रखने में नाकाम रहता है, तो वह अपने भविष्य को भी अंधेरे में धकेल देता है। मध्यप्रदेश, जो अपनी सांस्कृतिक धरोहर और प्राकृतिक समृद्धि के लिए जाना जाता है, आज इस सवाल का जवाब ढूंढ रहा है कि उसकी बेटियां कहां गुम हो रही हैं?

इस संकट से उबरने के लिए समाज और प्रशासन को एकजुट होकर कदम उठाने होंगे। सबसे पहले, पुलिस और न्यायिक व्यवस्था में सुधार अनिवार्य है। गुमशुदगी और अपराध के मामलों में त्वरित और प्रभावी कार्रवाई सुनिश्चित की जानी चाहिए। पुलिस को संवेदनशील बनाना होगा, ताकि पीड़ित परिवार बिना डर के अपनी शिकायत दर्ज करा सकें। सामाजिक जागरूकता अभियानों के माध्यम से लैंगिक समानता और महिलाओं की सुरक्षा को बढ़ावा देना होगा। स्कूलों, कॉलेजों और समुदायों में बच्चियों और महिलाओं को उनके अधिकारों, आत्मरक्षा और कानूनी प्रक्रियाओं के बारे में शिक्षित करना जरूरी है। विशेष रूप से आदिवासी और दलित समुदायों के लिए सुरक्षा योजनाएं लागू की जानी चाहिए, ताकि वे सामाजिक और आर्थिक शोषण से बच सकें। ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में निगरानी तंत्र को मजबूत करना होगा, ताकि अपराधों को होने से पहले रोका जा सके।

इसके अलावा, सामुदायिक स्तर पर भी बदलाव की जरूरत है। समाज को अपनी बेटियों को केवल बोझ नहीं, बल्कि अपनी शक्ति मानना होगा। परिवारों को अपनी बेटियों की शिक्षा, सुरक्षा और सम्मान के लिए आगे आना होगा। गैर-सरकारी संगठनों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। हमें उन परिवारों को सहारा देना होगा, जो अपनी बेटियों की गुमशुदगी के दर्द से जूझ रहे हैं। यह समय केवल आलोचना का नहीं, बल्कि सामूहिक जिम्मेदारी का है।

मध्यप्रदेश को अपनी बेटियों की मुस्कान लौटानी होगी। यह वह धरती है, जहां की मिट्टी में वीरता और साहस की कहानियां बसी हैं। यह वह भूमि है, जहां की नदियां स्नेह और ममता की कहानियां कहती हैं। अब समय है कि यह धरती अपनी बेटियों की सुरक्षा की नई कहानी लिखे। यह केवल एक चुनौती नहीं, बल्कि एक संकल्प है—एक ऐसा संकल्प जो हर बेटी को उसका हक, उसका सम्मान और उसकी सुरक्षा सुनिश्चित करे। हमें उन खामोश चीखों को सुनना होगा, जो हमसे न्याय मांग रही हैं। हमें उन आंखों को जवाब देना होगा, जो हर दिन अपनी बेटी की राह तक रही हैं। मध्यप्रदेश को अब केवल अपनी सांस्कृतिक धरोहर का गर्व नहीं करना, बल्कि अपनी बेटियों के भविष्य को संवारना होगा। यह समय है एक नए युग की शुरुआत का, जहां हर बेटी, हर महिला न केवल सुरक्षित हो, बल्कि अपने सपनों को आजाद पंखों के साथ उड़ान भर सके।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

(आख़िर ये कैसे जानेंगे दर्द) "सरकारी स्कूलों में क्यों नहीं पढ़ते राजनेताओं के बच्चे"

जब तक विधायक, मंत्री और अफसरों के बच्चे निजी स्कूलों में पढ़ते रहेंगे, तब तक सरकारी स्कूलों की हालत नहीं सुधरेगी। अनुभव से नीति बनती है, और सत्ता के पास उस अनुभव का अभाव है। स्कूलों में छत गिरने से मासूमों की मौत, किताबों की कमी, अधूरे शौचालय — ये सब आम जनता के हिस्से में ही क्यों? यह समय की मांग है कि जनप्रतिनिधि और अधिकारी अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में पढ़ाएँ, ताकि वे खुद देख सकें कि किस शिक्षा व्यवस्था को वे बेहतर बनाने का दावा कर रहे हैं।

✍ डॉ. सत्यवान सौरभ

देश के किसी भी कोने में जाइए, एक दृश्य लगभग समान मिलेगा —सरकारी स्कूलों की टूटी छतें, जर्जर दीवारें, अधूरी दीवारों पर टंगे नामपट्ट, शिक्षकों की भारी कमी, और बच्चों की आँखों में सपनों की भी क्षीण रोशनी। वहीं दूसरी ओर शिक्षा के नाम पर चमचमाते निजी स्कूल, लाखों की फीस, स्मार्ट क्लास, और सत्ताधारियों के बच्चे उसी में दाखिल। ऐसे में सवाल उठता है — "जो नीति बनाते हैं, क्या उन्हें खुद कभी उस नीति की आग में तपना पड़ता है?"

सत्ता और शिक्षा का यह विभाजन

राजस्थान के कोटा में प्रकाशित यह रिपोर्ट एक कड़वी सच्चाई को उजागर करती है। जब पत्रकारों ने मंत्रियों, विधायकों, अफसरों से पूछा कि क्या उनके बच्चे या पोते-पोतियाँ सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं, तो अधिकतर जवाब आया — "नहीं, हमारे बच्चे निजी स्कूलों में पढ़ते हैं" या "अभी स्कूल जाने योग्य नहीं हैं"। क्या यही जवाब किसी आम नागरिक का होता? अगर मंत्री या कलेक्टर के अपने बच्चे सरकारी स्कूलों में जाते, तो क्या स्कूल की छतें गिरी होतीं? क्या मासूम बच्चे मलबे में दबकर मरते? क्या आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में लड़कियाँ सिर्फ इसलिए स्कूल छोड़ देतीं क्योंकि वहाँ शौचालय नहीं है?

सत्ता को अनुभव नहीं, सिर्फ आँकड़े चाहिए

नीति निर्धारण अब आंकड़ों की बाज़ीगरी बनकर रह गया है। शिक्षा बजट में वृद्धि, स्कूलों की संख्या, छात्रवृत्तियों के नाम पर योजनाएँ — सब कुछ एक रिपोर्ट कार्ड की तरह पेश किया जाता है। मगर ज़मीनी हकीकत क्या है? शिक्षक चार जिलों की दूरी तय करके ड्यूटी करते हैं, स्कूलों में पीने का पानी तक नहीं, बच्चों को किताबें समय पर नहीं मिलतीं। और सबसे बड़ी विडंबना — इन हालातों को सुधारने की ज़िम्मेदारी उन्हीं के हाथ में है, जिनके अपने बच्चे इन हालातों से अछूते हैं।

क्या होना चाहिए अनिवार्य?

आख़िरकार यह सवाल बार-बार उठता है — "जब तक मंत्रियों, विधायकों और प्रशासनिक अधिकारियों के अपने बच्चे सरकारी स्कूलों में नहीं पढ़ेंगे, तब तक सुधार की कोई भी कोशिश दिखावटी होगी।" क्या यह कानूनन अनिवार्य नहीं किया जा सकता कि: विधायक/सांसद बनने के लिए उम्मीदवार को यह शपथ लेनी होगी कि उसका बच्चा सरकारी विद्यालय में ही पढ़ेगा। सरकारी अधिकारियों (IAS/IPS/IRS) की पदस्थापना की शर्त में शामिल हो कि वे अपने बच्चों को निजी स्कूलों में नहीं भेजेंगे। जिन शिक्षकों के बच्चे प्राइवेट स्कूल में पढ़ रहे हैं, उन्हें पहले अपने स्कूल पर भरोसा दिखाना होगा। यह कोई सनकी मांग नहीं है, बल्कि लोकतंत्र में समानता और जवाबदेही का आधार है। जब आम नागरिक को सरकारी सेवाओं से संतुष्ट रहने की सलाह दी जाती है, तो नीति-निर्माताओं के लिए भी वह संतोष अनिवार्य क्यों नहीं?

आशा और आक्रोश का संगम

हमें यह स्वीकार करना होगा कि आम जनता की चुप्पी ही सबसे बड़ा अपराध बन चुकी है। जब कोई बच्चा सरकारी स्कूल की जर्जर छत के नीचे दम तोड़ता है, तब सिर्फ अफसोस जताने से कुछ नहीं बदलता। जब तक हम यह नहीं कहेंगे —

"पहले आपके बच्चे इस स्कूल में पढ़ें, फिर हमें यहाँ भेजिए,"

तब तक शिक्षा सिर्फ चुनावी वादा बनी रहेगी।

वास्तविक उदाहरणों की मांग

दिल्ली सरकार ने कुछ हद तक यह पहल की कि उनके मंत्री सरकारी स्कूलों में समय-समय पर निरीक्षण करें, लेकिन निरीक्षण और अनुभूति में जमीन-आसमान का फर्क है। जो माँ-बाप हर दिन अपने बच्चे को पानी की बोतल के साथ भेजते हैं, वे सरकारी स्कूलों की सूखी टंकी नहीं समझ सकते। जो बच्चे हर दिन निजी बस से स्कूल जाते हैं, उन्हें स्कूल वैन की कमी कभी नहीं चुभेगी।

मीडिया की भूमिका

यह बात सराहनीय है कि दैनिक भास्कर जैसे समाचार पत्र इस विषय को सामने ला रहे हैं। जब मुख्यधारा मीडिया तमाशे और सनसनी से आगे बढ़कर व्यवस्था के मूल पर चोट करता है, तब जागरूकता की शुरुआत होती है। ऐसे प्रयासों को और मजबूत करने के लिए ज़रूरी है कि हम, आप और हर पाठक इसे जन-चर्चा का हिस्सा बनाएँ।

एक आम नागरिक की घोषणा

हर मतदाता को आने वाले चुनावों में यह एक सवाल तय करना चाहिए —₹आपका बच्चा सरकारी स्कूल में पढ़ता है या नहीं?₹ यदि नहीं, तो उसे हमारे बच्चों के भविष्य की योजनाएँ बनाने का अधिकार नहीं।

शिक्षा के लोकतांत्रिककरण की माँग

शिक्षा सिर्फ सेवा नहीं, यह लोकतंत्र का आधार स्तंभ है। और जब यह स्तंभ एक वर्गविशेष के लिए 'निजी सुविधा' और बाकी देश के लिए 'सरकारी मजबूरी' बन जाए, तो असमानता अपने चरम पर होती है।

सरकारी स्कूल तब तक नहीं सुधरेंगे,

जब तक उनकी छतों के नीचे
'किसी मंत्री का बेटा' किताब न खोले।
जब तक कोई 'अफसर की बेटी'
लाइन में खड़े होकर मिड डे मील न खाए।
जब तक कोई 'विधायक का पोता'
ब्लैकबोर्ड पर ABCD न लिखे।

शिक्षा का अधिकार केवल किताबों में नहीं, सच्चाई में होना चाहिए। यदि हम सच में चाहते हैं कि सरकारी स्कूल सुधरें —

तो पहला सुधार वहीं से शुरू होना चाहिए,
जहाँ से नीति बनती है — सत्ता के गलियारों से।

पार्श्वनाथ भगवान का प्राचीनतम जिनालय जहां का अतिशय ऐसा की सब संकट दूर हो जाते हैं

स्वतंत्र लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

' इन्दौर शहर के सबसे प्राचीनतम दिगंबर जैन जिनालयों में दानवीर सर सेठ हुकुमचंद जी द्वारा निर्मित श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर जो जबरी बाग नसिया जी इन्दौर मे स्थित है । जिस मंदिर में मूलनायक 23 वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ प्रभु की मनोहारी व चमत्कारी प्रतिमा का अतिशय भक्तों के विश्वास से ही दिखाई देता है । नसिया वाले पारस प्रभु के भक्त शहर में कहीं भी चले जाएं पर वह समय अनुकूल एक बार समय अनुरूप मंदिर जी में दर्शन करने अवश्य आते हैं। वहां अपनी खाली झोली लेकर आते हैं और झोली भर के जाते हैं । प्रतिमा के दर्शन से अंतरात्मा तृप्त हो जाती है । आप का यहां मंदिर 126 वर्षों से भी ज्यादा पुराना है । श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर जबरी बाग नसिया जी इन्दौर में मुख्य रेलवे स्टेशन के पास ही स्थित है । इन्दौर की इस प्राचीन मंदिरों की श्रृंखला में एक बहुत ही विशेष स्थान इस मंदिर जी का है । जो पूरे भारत के दिगंबर जैन समाज के लिए बहुत महत्वपूर्ण भी है। यहां बहुत शान्ति व सुकुन मिलता है । वहां भक्त जो किस्मत वाले होते हैं यह पारस प्रभु शरण यूं ही नहीं हर कोई आ जाता है 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ जी ने जो बहुत कष्टों को सहा और कमठ के मोह को भंग किया । तभी वहां हमारे लिए स्वर्ग के समान सुखों की लालिमा बन कर हमें आशीष देते हैं।

भगवान के दरबार में वर्तमान समय में चमत्कार को ही नमस्कार किया जाता है। इस दिगंबर जैन मंदिर प्रांगण में

इन्दौर शहर का सबसे प्राचीनतम मानस्तंम भी है जिसे दानवीर सर सेठ हुकुमचंद जी ने ही बनवाया था । इस मानस्तंम में जिनबिम्ब की प्रतिमाएं विराजमान हैं । जिसका अभिषेक साल में एक बार करनें की परम्परा आचार्य श्री विद्यासागर जी के परम प्रिय शिष्य समाधिस्थ संत ऐलक श्री निशंक सागर जी ने रखी थीं । जो निरंतर प्रवाह से अपने 19 वें वर्ष में प्रवेश कर चुकीं है । मंदिर जी का वह मानस्तंम का जीर्णोद्धार समाधिस्थ संत ऐलक श्री निशंक सागर जी महाराज के करकमलों द्वारा ही किया गया था उन्ही के पुण्यों के उदय से मंदिर जी का अतिशय पूरे

देश में व्याप्त है । जन-जन के संत समाधिस्थ आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज भी यहां दो बार आयें थें। ऐसी परम्परा सी बन गई कि इन्दौर में जो भी दिगंबर जैन साधु संत , मुनि , महाराज आर्यिका माता जी आदि जो भी आते हैं एक बार जरूर व नसिया जी जरूर दर्शन करने आते हैं । यहां की मूल वेदी में चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमा सभी के संकटों का निवारण करती है जहां दूर दूर से सभी समाजजन व भक्त पारस प्रभु के आशीष लेकर अपने जीवन में खुशियां से भर जाते हैं । ऐसे संकट मोचन पार्श्वनाथ भगवान की जय हो , नमोस्तु भगवान जी , दुखों के इस भंवर में मेरी नाव फंसी हुई है आप ही पार लगाओगे हमारी आस्था भी तुम हो पारस प्रभु और विश्वास भी तुम ही हो , क्यों की तुमसे हमारी लगन लग गई है। तो अपनी शरण में ले लो प्रभु में हम तो बालक है आप के , आप तो हम सब के अराध्य हो तो मेरी नाव जो बीच मझधार में घनघोर अंधकार में निकल ही नहीं रही , तो आप ही नसिया के पार्श्वनाथ भगवान सहारा बन मुझे अपना बना लो आज मुकुट सप्तमी पर आप के मोक्ष कल्याणक के महा महोत्सव पर आज आप के चरणों में नमोस्तु भगवान, बारम्बार नमोस्तु ।।

मुख्यमंत्री हेमन्त के साथ विश्व बैंक के अधिकारियों ने दिल्ली में की मुलाकात

मंईया सम्मान योजना की हुई प्रशंसा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड - झारखंड

रांची। झारखंड के मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन से आज नई दिल्ली स्थित झारखंड भवन में विश्व बैंक के भारत स्थित कंट्री निदेशक ऑगस्टे तानो कौमे सहित एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने मुलाकात की। इस अवसर पर ऑगस्टे तानो कौमे ने झारखंड के आर्थिक विकास तथा गरीबी उन्मूलन उत्थान की प्रमुख योजना (मुख्यमंत्री मंईयां सम्मान योजना) की सराहना की। इस अवसर पर मुख्यमंत्री हेमन्त सोरेन ने विश्व बैंक के प्रतिनिधिमंडल को राज्य में हो रहे ग्रामीण आर्थिक विकास, अक्षय ऊर्जा, पर्यटन,

उत्पादन, कृषि, शिक्षा एवं प्राकृतिक संसाधन में हो रहे कार्य तथा अन्य विकासात्मक गतिविधियों सहित निवेश की संभावनाओं से अवगत कराया। कौमे और उनकी टीम ने भारत में विश्व बैंक द्वारा समर्थित परियोजनाओं के अनुभव साझा किए और राज्य सरकार को विकास योजनाओं, कार्यक्रम डिजाइनिंग तथा क्रियान्वयन तंत्र को मजबूत करने में सहयोग देने की इच्छा जताई, जिससे राज्य के नागरिकों को लाभ मिल सके। मौके पर दोनों पक्षों ने बातचीत को आगे बढ़ाने और रांची में एक संयुक्त चर्चा एवं कार्यशाला आयोजित करने पर सहमति जताई, जिससे सार्थक सहयोग स्थापित हो सके।

प्रेमचंद का साहित्य कहानी या उपन्यास नहीं, एक विचारधारा है।

मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी (तत्कालीन बनारस) के समीप एक छोटे से गाँव लमही में हुआ था। उनका जन्म ऐसे समय में हुआ जब भारत गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था और समाज अनेक प्रकार की कुरीतियों, अंधविश्वासों और सामाजिक विषमताओं से ग्रस्त था। उनके माता-पिता ने उनका नाम रखा ,धनपत राय श्रीवास्तव। बचपन में ही वे मातृ-पितृ स्नेह से वंचित हो गए। प्रारंभिक जीवन अत्यंत संघर्षपूर्ण रहा,आर्थिक अभाव, पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और सामाजिक असंतुलन ने उनके व्यक्तित्व को ऐसे आकार में ढाला कि उन्होंने साहित्य को केवल सौंदर्य या कल्पना नहीं, बल्कि पीड़ित समाज की वाणी बनाया।

प्रेमचंद ने अपने साहित्यिक सफर की शुरुआत उर्दू भाषा में 'नवाबराय' उपनाम से की। उनकी पहली प्रकाशित कृति 'सोज़े वतन' ब्रिटिश सरकार को इतनी नागवार गुज़री कि उस पर पाबंदी लगा दी गई। इसके बाद उन्होंने 'प्रेमचंद' नाम अपनाया और हिंदी लेखन की ओर अग्रसर हुए। उनके साहित्य में जो यथार्थ चित्रण है, वह उनके जीवनानुभवों का निष्कलंक प्रतिबिंब है। उनके पात्र सीधा पाठक से बात करते हैं, उसकी पीड़ा को उसका स्वयं का अनुभव बना देते हैं। चाहे वह 'धीरू' जैसा किसान हो, 'होरी' हो या 'निर्मला' हर पात्र आमजन से आता है और उसे सच के धरातल पर खड़ा करता है।

प्रेमचंद को 'उपन्यास सम्राट' यूं ही नहीं कहा गया। उन्होंने हिंदी साहित्य को ऐसी कालजयी रचनाएं दीं जिन्होंने साहित्य को केवल अभिजात वर्ग की संपत्ति नहीं, बल्कि जनमानस की आवाज़ बना दिया। 'गोदान' में एक किसान की वेदना और साहूकारी शोषण की मार्मिक कथा है, तो 'गबन' मध्यमवर्गीय मानसिकता और नैतिक संघर्ष का अद्भुत चित्रण है। 'निर्मला' बाल विवाह की त्रासदी और नारी-जीवन की विडंबनाओं को परत-दर-परत खोलती है, तो 'सेवासदन' स्त्री मुक्ति की पुकार बन जाती है। 'रंगभूमि' में एक अंधे भिक्षुक सूरदास के माध्यम से पूंजीवाद और शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाई गई है।

उनकी कहानियाँ, 'कफन', 'दो बैलों की कथा', 'पूस की रात', 'पंच परमेश्वर', 'बड़े घर की बेटी'न केवल साहित्यिक दृष्टि से उत्कृष्ट हैं, बल्कि सामाजिक दृष्टि से अत्यंत सशक्त हैं। 'कफन' में हाशिये पर खड़े मानवों का कठोर यथार्थ है, तो 'पूस की रात' में निर्धन किसान की विवशता और संघर्ष। 'दो बैलों की कथा' में मनुष्यता की संवेदना और पशु-पात्रों के माध्यम से मानवीय पीड़ा का जो चित्र रचा गया है, वह अद्वितीय है।

प्रेमचंद का साहित्य बहुपरतीय है, वह महज़ कहानी या उपन्यास नहीं, एक विचारधारा है। उन्होंने साहित्य को 'सत्य के अन्वेषण' और 'समाज-सुधार' का साधन माना। उनके लिए लेखन धर्म था,और इसीलिए उन्होंने अंग्रेजों की नौकरी छोड़कर स्वराज्य आंदोलन से सांस्कृतिक स्तर पर जुड़ाव किया।

उनकी भाषा में कहीं बनावट नहीं, कोई अलंकारिक बड़प्पन नहीं ,बल्कि सादगी, आत्मीयता और जीवन की सरल-सच्चाई है। उन्होंने खड़ी बोली को वह गरिमा और सरसता दी जिसकी भाषा में एक ओर संवेदना की नर्मी हो, दूसरी ओर विचार की शक्ति। लोकभाषा, भावप्रवाह और कथ्य की सहजता यही उनके लेखन की सबसे बड़ी विशिष्टता थी। उन्होंने साहित्य में आदर्श और यथार्थ का एक अद्भुत समन्वय स्थापित किया, जिसका असर हिंदी साहित्य की आगे की पीढ़ियों पर गहराई से पड़ा।

मुंशी प्रेमचंद ने जीवनभर वंचितों, उत्पीड़ितों, स्त्रियों, मजदूरों, किसानों और दलितों की आवाज़ को मंच दिया। उन्होंने उन कहानियों को लिखा जिन्हें समाज अक्सर अनसुना करता रहा। यह उनकी लेखनी का ही प्रताप था कि उन्होंने एक कालखंड को भाषा और कथ्य के माध्यम से जीवंत कर दिया और उनके पात्र कालजयी बन गए।

8 अक्टूबर 1936 को जब वे इस संसार से विदा हुए, उस समय वे आर्थिक रूप से असमर्थ, शारीरिक रूप से अस्वस्थ, लेकिन नैतिक रूप से इतने समृद्ध थे कि उनकी चिताभस्म से साहित्य की चेतना आज भी जल रही है। उनके साहित्य में एक युग की परछाइयाँ हैं और भविष्य के बदलाव की संभावनाएँ भी।

आज जब हम हर 31 जुलाई को 'राष्ट्रीय लेखक दिवस' के रूप में प्रेमचंद की जयंती मनाते हैं, तो यह केवल औपचारिक श्रद्धांजलि भर नहीं होनी चाहिए, बल्कि लेखक, पाठक और समाज के रूप में यह संकल्प होना चाहिए कि प्रेमचंद के सिद्धांत , यथार्थवाद, संवेदना, समाजसापेक्षता और समानता , को हम अपने जीवन, लेखन और कर्म में आत्मसात करें। यही मुंशी प्रेमचंद के प्रति हमारी सच्ची नमन होगी।

डॉ. मुश्ताक अहमद शाह सहज,

बाइआ जेना आपका दामाद है : महिला कोंग्रेस

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वरः देश भर में महिलाओं के साथ बलात्कार और अत्याचारों से ओडिशा हिल गया है। गोपालपुर, मलकानगिरी, जगतसिंहपुर में हुए बलात्कारों ने राज्य को शर्मसार कर दिया है। एबीवीपी सदस्य सौम्या कांड, बलंगा त्राशी की घटना ने दिल दहला दिया है। लेकिन यह बेहद आश्चर्य की बात है कि इन तमाम अत्याचारों के बीच भाजपा महिला मोर्चा कहाँ छुप गया? अब महिलाएँ न्याय के लिए राजमार्गों पर मगरमच्छ के आँसू बहा रही हैं।

कांग्रेस भवन में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में प्रवक्ता सोनाली साहू ने कहा कि सत्ता में बैठी पार्टी का महिला मोर्चा आज राजमार्गों पर विरोध प्रदर्शन कर रहा है। तरह-तरह की टिप्पणियाँ की जा रही हैं। भाजपा नीचता की हद पार कर रही है और अपने अपराधों को छिपाने के लिए आज महिलाओं का सहारा लेने से भी नहीं हिचकिचा रही है। भाजपा महिला मोर्चा की ऐश्वर्या बिस्वाल की टिप्पणियाँ जितनी हास्यास्पद हैं, उतनी ही शर्मनाक भी हैं। बैन्या जेना के मुद्दे पर अपनी सरकार की आलोचना करने के बजाय, वह कांग्रेस पर सवाल उठा रही हैं। उन्होंने बैन्या को अपनी पार्टी का दामाद बना दिया। उनके ज़्यादातर नेताओं से संबंध हैं। आप खुद से पूछिए कि पिछले चुनाव में बयान किसके लिए प्रचार कर रहे थे।

प्रवक्ता मनीषा दास पटनायक ने कहा कि हम आज कुछ चूड़ी लाए हैं। क्योंकि हम उन्हें यह एहसास दिलाने के लिए लाए हैं कि चूड़ी पहनना कितना मुश्किल है। अगर उन्हें यह कठिनाई पता होती, तो वे राज्य में महिलाओं पर अत्याचार होने पर आगे आतीं, छिपती नहीं। शायद भाजपा महिला मोर्चा हास्यास्पद तरीके से विरोध करने के लिए सड़कों पर आ रही है क्योंकि उन्हें अपनी सरकार पर भरोसा नहीं है। प्रवक्ता जयश्री पात्रा ने अपने बयान में कहा कि आपकी पार्टी सरकार में है और आप सड़कों पर चिल्ला रहे हैं, क्या यह आश्चर्यजनक नहीं है? किस आरोपी को गिरफ्तार किया जाएगा और किसे अनुकंपा सुरक्षा दी जाएगी? सरकार अपने फैसले खुद कर रही है। उन्होंने पूछा कि क्या यह वास्तव में लोगों की सरकार है या कुछ लोगों की सरकार है। इसी तरह, प्रवक्ता झूना कुमारी ने दिखाया कि बानीबिहार में भाजपा कितनी नीच और अहिंसक है। वहाँ भाजपा का पोस्टर तो बेदाग़ था, लेकिन पास में लगा सौम्याश्री का श्रद्धांजलि पोस्टर फटा हुआ था, जिससे पता चलता है कि वे महिलाओं पर हो रहे अत्याचारों से कितनी चिंतित हैं। प्रवक्ता मधुस्मिता ने कहा कि अब राज्य की महिलाएँ सड़कों पर उतरकर विरोध करना सीख गई हैं। सरकार अब दुर्व्यवहार और अत्याचार की घटनाओं पर चुप नहीं रह सकती।

अंत में, प्रवक्ता मधुस्मिता आचार्य ने सभी मीडिया प्रतिनिधियों और प्रवक्ताओं का धन्यवाद किया।

फ्रेंड शिप डे,मित्रता दिवस खास दिन।दोस्ती एक दुआ है, जो हर दिल पे असर करती है

कहते हैं कि हर रिश्ता वक्त, खून या ज़रूरतों से जुड़ा होता ह, मगर दोस्ती एक ऐसा रिश्ता है जो इनमें से किसी की मोहताज नहीं होती। दोस्ती दिल से दिल तक का सफ़र है, ऐसा बंधन जो बिना किसी लालच के जुड़ता है और ज़िंदगी भर साथ चलता है।दोस्ती ना दिखती है, ना तौली जा सकती है, लेकिन जिस दिल में बस जाए, वहाँ गुलाब की तरह महकती है और शफक की तरह चमकती है। दोस्तों के बिना ज़िंदगी अधूरी लगती है। वो हँसी, वो मज़ाक, वो कंधे पर हाथ रखना, किसी आँसू को मुस्कान में बदल देना, यही तो है दोस्ती।

दोस्त वो होते हैं जो हमारे बिना कहे हमारी बात समझ लें, जो हमारे सन्नाटों में भी हमारी पुकार सुन लें, जो मुश्किल दौर में ढाल बन जाएँ और खुशियों के हर पल में सबसे पहले साथ खड़े दिखें।

"दोस्ती की मिसाल क्या दूँ मैं दुनिया को,
ये वो खुशबू है जो साँसों से जाती नहीं।"

कभी-कभी एक दोस्त ही वो इंसान बन जाता है जिससे हम अपने दिल की हर एक बात कह सकते हैं... और जब दुनिया हमसे मुँह फेर ले, तब वही दोस्त बिना कुछ कहे हमारे पास बैठकर हमारी चुप्पी का सहारा बन जाता है।

दोस्ती में कई रंग होते हैं — बचपन की मासूमियत, कॉलेज के दिनों की दीवानगी, ऑफिस की मस्ती और उम्र के हर मोड़ पर एक ज़िम्मेदार हमसफ़र।

बचपन के दोस्त खेल के मैदान से लेकर अपराजित सपनों तक साथ चलते हैं।जवानी के दोस्त, हमारी पहचान बनाते हैं, हमारी हिम्मत, हमारी आवाज़, हमारी लड़ाई बन जाते हैं।

प्रौढ़ अवस्था के दोस्त, ज़िंदगी की सच्चाइयों को साझा करने वाले, समझदारी से भरे सलाहकार होते हैं।इन सभी रिश्तों में एक बात समान होती है, भरोसा, अपनापन और सम्मान।

फ्रेंडशिप डे, मनाने का मक़सद

फ्रेंडशिप डे कोई दिखावे या सोशल मीडिया पर पोस्ट करने का दिन नहीं है , यह दिन है उन अनकहे एहसासों को जाहिर करने का, उन दोस्तों को ₹थैंक्स₹ कहने का जो बिना कुछ माँगे हमारी ज़िंदगी में खुशियाँ भरते हैं।

फूलों जैसी दोस्ती हो, कांटों से दूर,
हर रिश्ता फिक्र माँगे, दोस्ती सिर्फ़ 'यक़ीन'।"

यह दिन हमें याद दिलाता है कि जिन लोगों ने हमें हंसाया, सहारा दिया, गिरने पर उठाया और कटु सच्चाइयाँ भी मुस्कुराकर बताईं , वही हैं असली दोस्त।

दोस्ती में क्या ज़रूरी है?

सच्ची दोस्ती सिर्फ़ मुस्कुराहटों और मस्ती से नहीं बनती। इसमें ज़रूरत होती है,

वफ़ा की, जो हर परिस्थिति में साथ निभाए।

एतबार की, जो बिना शक रिश्ता कायम रखे।

समझदारी की, जो फैसलों में मदद करे।

इज़्ज़त की, जो हर मतभेद के बाद भी रिश्ते को बनाए रखे।

एक सच्चा दोस्त ना सिर्फ तुम्हारे दुख बाँटता है, बल्कि तुम्हारी ख़ामोशी को भी सुन लेता है।

दोस्ती वो रिश्ता है जिसे न तो लिखा जा सकता है और न ही पूरी तरह समझाया जा सकता है। इसे बस जिया जाता है — हर पल, हर लम्हा, तहे-दिल से।

इस फ्रेंडशिप डे पर चलिए हम उस हर दोस्त को याद करें जिसने हमारी ज़िंदगी में रोशनी की तरह अपना अक्स डाला है। उन्हें एक मैसेज, एक कॉल या बस एक ₹थैंक यू₹ कहें — यकीन मानिए, उनका दिन बन जाएगा... और शायद आपका भी।

"दोस्ती एक दुआ है, जो हर दिल में असर करती है,
ये वो रौशनी है जो अंधेरे में भी मुस्कान बिखेरती है।"

आप सभी को फ्रेंडशिप डे की ढेरों शुभकामनाएँ।

दोस्ती जिएं, निभाएँ और बाँटें, क्योंकि यही है ज़िंदगी की असली ख़ूबसूरत तस्वीर है,

डॉ. मुश्ताक अहमद

डॉ. स्मृतिरंजन लेंका राष्ट्रीय युवा कांग्रेस के महासचिव नियुक्त

मनोरंजन सासमल , बरिष्ठ पत्रकार

भुवनेश्वर: राष्ट्रीय युवा कांग्रेस के नवनियुक्त महासचिव डॉ. स्मृतिरंजन लेंका । ओडिशा से एकमात्र युवा नेता होने के नाते, उन्होंने राष्ट्रीय युवा कांग्रेस कमेटी में महासचिव का पद मिलने पर अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष श्री मल्लिका अर्जुन खड़गे, लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी, अखिल भारतीय युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष उदय भानु चिब, युवा कांग्रेस के राष्ट्रीय प्रभारी कृष्णा अलावरु और पूर्व अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी सचिव डॉ. विश्वरंजन मोहंती, राज्य के सभी वरिष्ठ नेताओं और राज्य युवा कांग्रेस के सभी साथियों का आभार व्यक्त किया है। अपनी प्रतिक्रिया में डॉ. लेंका ने कहा कि पार्टी ने उन्हें जो ज़िम्मेदारी दी थी, उसे उन्होंने बखूबी निभाया है। आने वाले दिनों में उनकी प्राथमिकता पूरे राज्य और देश में युवाओं को संगठित कर लोकतांत्रिक राष्ट्र की रक्षा के लिए राहुल गांधी की लड़ाई को और मज़बूत करना होगा। गौरतलब है कि डॉ. लेंका इससे पहले ओडिशा प्रदेश युवा कांग्रेस के अध्यक्ष थे। अब वे असम और अरुणाचल प्रदेश युवा कांग्रेस के प्रभारी के तौर पर काम कर रहे हैं। पार्टी ने उन्हें राष्ट्रीय युवा कांग्रेस कमेटी के 14 सदस्यीय महासचिवों में शामिल कर एक बार फिर उन पर भरोसा जताया है। इसके लिए समर्थकों ने उन्हें बधाई दी है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023